SUNDAY रिपोर्टर
OFF THE BEAT
जोधपुर 25 मई 2025
वर्ष: 14 अंक: 3
मूल्य: 10 पृष्ठ: 22
www.facebook.com/sundayreporter
Approved By Government of India
Email: sundayreporter123@gmail.com

छात्र सुसाइड केस: राजस्थान सरकार को सुप्रीम कोर्ट की सुप्रीम फटकार-

कोटा में ही छात्र क्यों कर रहे खुदकुशी

सुप्रीम कोर्ट ने सरकार से पूछा-इसे रोकने के लिए अब तक क्या किया

जोधपुर/जयपुर। स्टूडेंट्स सुसाइड मामले में शुक्रवार को सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई हुई। सुप्रीम कोर्ट ने इस दौरान कोटा में हो रहे स्टूडेंट्स सुसाइड के मामलों को भी गंभीर बताया और राजस्थान सरकार को फटकार लगाई। सुप्रीम कोर्ट में जस्टिस जेबी पारदीवाला और SUNDAY रिपोर्टर जस्टिस आर महादेवन की बेंच ने कहा, 'कोटा में इस साल अब तक 14 स्टूडेंट्स सुसाइड कर चुके हैं। आप एक राज्य के तौर पर इसे लेकर क्या कर रहे हैं? स्टूडेंट्स कोटा में ही क्यों आत्महत्या कर रहे हैं? एक राज्य के तौर पर क्या आपने इस पर कोई विचार नहीं किया?' सुप्रीम कोर्ट ने यह टिप्पणी कोटा में छात्रा का शव मिलने और क्क्ळ खड़गपुर के छात्र के सुसाइड मामले की सुनवाई के दौरान की। सुप्रीम कोर्ट ने राजस्थान सरकार से इस मामले में जवाब मांगा है। अगली सुनवाई 14 जुलाई को होगी।

कोटा में छात्रा की सुसाइड के मामले में सम्बंधित पुलिस अफसर फेल हुए है, उन्होंने अपनी ड्यूटी नहीं निभाई और कोर्ट के निर्देशों का पालन भी नहीं किया: सुप्रीम कोर्ट

क्या है पूरा मामला

4 मई को नीट एग्जाम से कुछ ही घंटे पहले कोटा के हॉस्टल में 17 साल की छात्रा का शव मिला था। 4 मई को ही, आइआइटी खड़गपुर में पढ़ने वाले 22 साल के स्टूडेंट ने हॉस्टल के कमरे में फांसी लगा ली थी। इन्हीं दोनों मामलों को लेकर सुप्रीम कोर्ट ने 6 मई को स्वतः संज्ञान लिया था। आइआइटी खड़गपुर सुसाइड को लेकर कोर्ट ने 14 मई को कहा था वो सिर्फ यह पता लगाने के लिए संज्ञान ले रहे हैं कि प्रशासन ने 'अमित कुमार एवं अन्य बनाम भारत संघ एवं अन्य' मामले में जारी कोर्ट के निर्देशों का पालन कर एफआईआर दर्ज कराई है या नहीं। वहीं, कोटा में हुए सुसाइड को लेकर कोर्ट ने जवाब मांगा था कि एफआईआर दर्ज क्यों नहीं की गई। जस्टिस जेबी पारदीवाला और आर महादेवन की बेंच ने ये सुनवाई की थी। इसी के साथ कोर्ट ने केंद्र सरकार को निर्देश भी दिया था कि मेंटल हेल्थ और सुसाइड प्रिवेंशन के लिए बनने वाली नेशनल टास्क फोर्स के गठन के लिए 20 लाख रुपए दो दिन में जमा कराएं।

कोर्ट रूम लाईव

सुप्रीम कोर्ट: आप क्या कर रहे हैं। ये बच्चे कोटा में ही क्यों आत्महत्या कर रहे हैं। आपने एक राज्य के तौर पर इसे लेकर कुछ नहीं सोचा क्या।

वकील (राजस्थान सरकार): इस तरह के सुसाइड के मामलों के लिए एक एसआईटी का गठन किया गया था।

सुप्रीम कोर्ट: छात्रा के सुसाइड करने के बाद एफआईआर क्यों नहीं लिखी गई?

वकील (राजस्थान सरकार): मामले की जांच की जा रही है और एसआईटी को आत्महत्याओं के सभी मामलों के बारे में पता है।

सुप्रीम कोर्ट: अभी तक कोटा में कितने स्टूडेंट्स सुसाइड कर चुके हैं?

वकील (राजस्थान सरकार): 14

सुप्रीम कोर्ट: ये स्टूडेंट्स आत्महत्या क्यों कर रहे हैं?

वकील (राजस्थान सरकार): सुप्रीम कोर्ट द्वारा बनाई गई टास्क फोर्स को रिपोर्ट तैयार करने के लिए थोड़ा समय चाहिए।

सुप्रीम कोर्ट: आपने कोर्ट के जजमेंट की अवमानना की है। आपने अभी तक एफआईआर दर्ज क्यों नहीं की? छात्रा कोचिंग के दिए गए आवास में नहीं रह रही थी। नवंबर 2024 में ही उसने हॉस्टल छोड़ दिया था और अपने पेरेंट्स के साथ रह रही थी। लेकिन पुलिस की ये ड्यूटी थी कि वो इस मामले में एफआईआर दर्ज करें और जांच की जाए। संबंधित पुलिस स्टेशन के ऑफिसर ड्यूटी पर खरे नहीं उतरे हैं। उन्होंने कोर्ट के निर्देशों का पालन नहीं किया है।

2024 में 17, 2023 में 26 स्टूडेंट ने किया सुसाइड

बात पिछले सालों की करें, तो साल 2024 में कोटा में रहने वाले 17 स्टूडेंट्स ने सुसाइड किया था। पिछले साल जनवरी के महीने में 2 और फरवरी के महीने में 3 सुसाइड हुए थे। वहीं साल 2023 में कोटा में स्टूडेंट सुसाइड के कुल 26 मामले सामने आए थे।

'बच्चों को फेलियर हैंडल करना सिखाते ही नहीं'

एमपी सुसाइड प्रिवेंशन टास्क फोर्स के मेंबर और साइकेट्रिस्ट डॉ सत्यकांत त्रिवेदी ने कोटा में हो रहे स्टूडेंट सुसाइड को लेकर कहा, किसी भी आत्महत्या का कोई एक कारण नहीं होता। वही एग्जाम सभी बच्चे दे रहे होते हैं। ऐसे में सुसाइड के लिए मिले-जुले फैक्टर्स जिम्मेदार होते हैं। इसमें जेनेटिक्स कारण, सामाजिक कारण, पियर प्रेशर, माता-पिता के एक्सपेक्टेशन्स, शिक्षा तंत्र सब शामिल है।

डॉ त्रिवेदी कहते हैं कि कहीं न कहीं हम बच्चों को ये सिखाने में नाकामयाब हो जाते हैं कि स्ट्रेस, रिजेक्शन या फेलियर से कैसे डील करना है। आज बच्चा ये मानने लगा है कि उसका एकेडमिक अचीवमेंट उसके एग्जिस्टेंस से भी बड़ा है। बच्चा तैयारी छोड़ने के लिए तैयार नहीं है, जीवन छोड़ने के लिए तैयार है। सोसायटी ने प्रतियोगी परीक्षाओं को बहुत ज्यादा महिमामंडित कर दिया है जिसकी वजह से बच्चा ये महसूस करता है कि मैं पूर्ण तभी हो सकूंगा जब कोई एग्जाम क्रैक कर लूंगा।

2024 में जारी की गाइडलाइंस, पर नही रुके सुसाइड

स्टूडेंट्स की आत्महत्या के बढ़ते मामलों, कोचिंग सेंटर्स में आग की घटनाओं और कोचिंग सेंटर्स में सुविधाओं की कमी को देखते हुए शिक्षा मंत्रालय ने कोचिंग इंस्टीट्यूट्स के लिए गाइडलाइंस जारी की। भारत में स्टूडेंट सुसाइड की रोकथाम के लिए सरकार ने ये नियम बनाए-

1. **मेंटल हेल्थकेयर एक्ट, 2017:** इस एक्ट के अनुसार मानसिक विकारों से पीड़ित व्यक्ति को इसके लिए ट्रीटमेंट लेने और गरिमा के साथ जीवन जीने का पूरा हक है।
2. **एंटी रैगिंग मेजर्स:** सुप्रीम कोर्ट के आदेशानुसार, रैगिंग की शिकायत आने पर सभी एजुकेशन इंस्टीट्यूट्स को पुलिस के पास एफआईआर दर्ज करानी होगी। साल 2009 में हायर एजुकेशन इंस्टीट्यूट्स में रैगिंग की घटनाओं की रोकथाम के लिए यूनिवर्सिटी ग्रांट्स कमिशन यानी यूजीसी ने रेगुलेशन जारी की थी।
3. **स्टूडेंट काउंसलिंग सिस्टम:** स्टूडेंट्स की एंग्जायटी, स्ट्रेस, होमसिकनेस, फेल होने के डर जैसी समस्याओं को सुलझाने के लिए यूजीसी ने 2016 में यूनिवर्सिटीज को स्टूडेंट्स काउंसलिंग सिस्टम सेट-अप करने को कहा था।
4. **गेटकीपर्स ट्रेनिंग फॉर सुसाइड प्रिवेंशन बॉय** NIMHANS, SPIF: NIMHANS यानी नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ मेंटल हेल्थ एंड न्यूरोसाइंस और SPIF यानी सुसाइड प्रिवेंशन इंडिया फाउंडेशन इस ट्रेनिंग को कराते हैं। इसके जरिए गेटकीपर्स का एक नेटवर्क तैयार किया जाता है जो सुसाइडल लोगों की पहचान कर सके।

5 महीने में 14 सुसाइड सबसे ज्यादा बच्चे बिहार के

जनवरी

- **7 जनवरी** - हरियाणा के 19 साल के नीरज जाट ने हॉस्टल के कमरे में पंखे के कुंदे से फांसी लगा ली थी।
- **8 जनवरी** - MP के 20 साल के JEE एस्पिरेंट अभिषेक ने PG रूम में पंखे से फांसी लगा ली।
- **16 जनवरी** - ओडिशा के 18 साल के JEE एस्पिरेंट अभिजीत गिरी ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली।
- **17 जनवरी** - राजस्थान के 17 साल के JEE एस्पिरेंट मनन जैन ने खिड़की के एंगल से फंदा लगाकर आत्महत्या कर ली।
- **22 जनवरी** - गुजरात की 23 साल की NEET एस्पिरेंट अफ्शा शेख ने पंखे से फांसी लगाकर सुसाइड कर लिया।
- **22 जनवरी** - असम के 18 साल के JEE एस्पिरेंट पराग ने पंखे से फंदा लगाकर सुसाइड कर लिया।

फरवरी

- **11 फरवरी** - राजस्थान के 18 साल के NEET एस्पिरेंट अंकुश मीणा ने अपने PG रूम में फांसी लगा ली।

मार्च

- **6 मार्च** - कोटा मेडिकल कॉलेज के MBBS स्टूडेंट सुनील बैरवा ने अपने हॉस्टल के कमरे में सुसाइड कर लिया।
- **25 मार्च** - बिहार के 17 साल के NEET एस्पिरेंट हर्षराज शंकर ने सुसाइड कर लिया।
- **29 मार्च** - यूपी के 18 साल के JEE एस्पिरेंट उज्जवल मिश्रा ने ट्रेन के आगे कूदकर सुसाइड कर लिया।

अप्रैल

- **22 अप्रैल** - बिहार के 18 साल के NEET एस्पिरेंट ने सुसाइड कर लिया।
- **24 अप्रैल** - दिल्ली के 23 साल के NEET एस्पिरेंट रोशन शर्मा ने जहर खाकर सुसाइड कर लिया।
- **28 अप्रैल** - बिहार के 16 साल के NEET एस्पिरेंट तमीम इकबाल ने सुसाइड कर लिया।

मई

- **4 मई** - NEET एग्जाम से चंद घंटे पहले मध्य-प्रदेश की 17 साल की NEET एस्पिरेंट ने सुसाइड कर लिया।

किसानों से ज्यादा स्टूडेंट्स कर रहे आत्महत्या

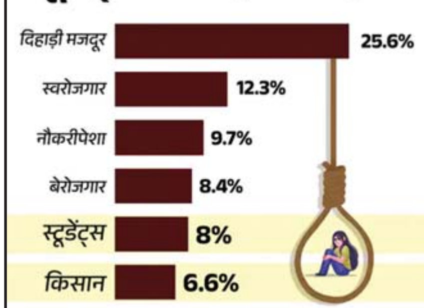

ये डाटा साल 2021 का है। सोर्स- IC3 रिपोर्ट 2024

Content / Design / PR / Print / Digital / Outdoor / Event

a. abhishek media group

GROW YOUR BUSINESS & RELATIONS WITH US

We Deal With

★ हार्दिक बधाई ★ शुभकामनाएं
★ शोक संदेश ★ श्रद्धांजलि
★ क्लासिफाईड ★ आम सूचना
★ कॉमर्शियल ★ अपॉईंटमेन्ट

•Print •Digital •Electronic
•Social Media •Events
•Outdoor Publicity
•Public & Business Relation
•Business Branding & Strategy

दैनिक भास्कर
राजस्थान पत्रिका
दैनिक नवज्योति
नफा नुकसान
THE TIMES OF INDIA
NEWS 18 राजस्थान
CNBC आवाज़
Z राजस्थान NEWS

GUARANTEE BEST DEAL

WhatsApp

Free Home (Whastsapp) Service is available
+91 7239965000

Abhishek Jain +91 9829005820
abhishekjain.reporter@gmail.com
E-123, Basement Sudershan Complex, Kalpataru Shoping Centre, Residency Road, Jodhpur

फोटो, ऑडियो-वीडियो में भी छुपा होता 'सीक्रेट कोड'

साइबर ठगी से बचने के लिए अपनाएं पुलिस के बताए ये उपाय

जोधपुर। साइबर ठग फोटो, ऑडियो-वीडियो या लिंक भेज कर लोगों को ठगी का शिकार बना रहे हैं। ऐसे में राजस्थान पुलिस की ओर से आमजन को विशेष सावधानी

SUNDAY रिपोर्टर

बरतने की सलाह दी गई है। अनजान लोगों की ओर से भेजे गए फाइल या लिंक को ओपन नहीं करें। सोशल मीडिया एप में मीडिया ऑटो डाउनलोड ऑप्शन बंद रखें। डीजी साइबर क्राइम हेमंत प्रियदर्शी के निर्देश पर साइबर ठगी की घटनाओं की रोकथाम और आमजन को जागरूक करने पुलिस मुख्यालय के साइबर कमांडो और साइबर सुरक्षा विशेषज्ञ लगातार लोगों को ऑनलाइन खतरों से बचाने के लिए जागरूक कर रहे हैं।

यहां करें शिकायत

डीजी साइबर क्राइम हेमंत प्रियदर्शी के मुताबिक इन दिनों साइबर अपराध काफी लोगों के साथ हो रहा है। अनजान व्यक्ति आपको व्हाट्सएप या अन्य सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर फोटो, ऑडियो या वीडियो या लिंक भेजता है। आप जैसे ही उस इमेज या ऑडियो आदि को ओपन या प्ले करते हैं, उसी वक्त आपके फोन का एक्सेस साइबर अपराधी के पास चला जाता है। यानी कि आपका फोन हैक हो जाता है। इस संदर्भ में पुलिस मुख्यालय की साइबर विंग की ओर से एडवाइजरी जारी की गई है। अगर आपके साथ किसी भी प्रकार का साइबर अपराध हो जाता जाता है, तो इसकी शिकायत साइबर अपराध हेल्प लाइन नंबर 1930 पर या www.cybercrime.gov.in पर तुरंत करें।

डाउनलोड करने से हैकिंग

पुलिस मुख्यालय के साइबर कमांडो महेश कुमार ने बताया कि फोन हैक होने के बाद आपके मैसेज और कॉल को साइबर अपराधी की ओर से अन्य नंबरों पर फॉरवर्ड कर दिया जाता है। फॉरवर्ड मैसेज से प्राप्त ओटीपी को काम में लेकर आपके बैंक अकाउंट से पैसे निकाले जा सकते हैं या फिर कोई ऐसा कोड छुपा हुआ होता है जिससे आपके फोन में कोई एपीके फाइल डाउनलोड हो जाती है। अब आप सोच रहे होंगे कि आखिर एक फोटो डाउनलोड करके देखने से या ऑडियो सुनने से फोन हैक कैसे किया जा सकता है? तो आपको बता दें कि इसके पीछे एक तकनीक कार्य करती है जिसे स्टेग्नोग्राफी कहा जाता है। स्टेग्नोग्राफी का अर्थ होता है-छुपाकर लिखना।

मैलिशियस कोड वाली फोटो-वीडियो

स्टेग्नोग्राफी में किसी संदेश या मैलिशियस फाइल को किसी दूसरी फाइल जैसे किसी फोटो या ऑडियो आदि के पीछे इस तरह छुपाया जाता है कि देखने वाले को पता ही न चले कि उसमें कोई कोड या कोई डेटा भी छुपा हुआ है। इसमें सूचना को इस तरह से हाइड किया जाता है कि उसका अस्तित्व ही नजर न आए। जैसे ही आप उस फोटो और वीडियो को डाउनलोड करते हैं, वह कोड आपके फोन में सक्रिय हो जाता है और ठग को आपके डिवाइस का एक्सेस मिल जाता है। जिसमें वह आपके फोन का डाटा व निजी जानकारी को पूरी तरह नियंत्रित कर सकते हैं।

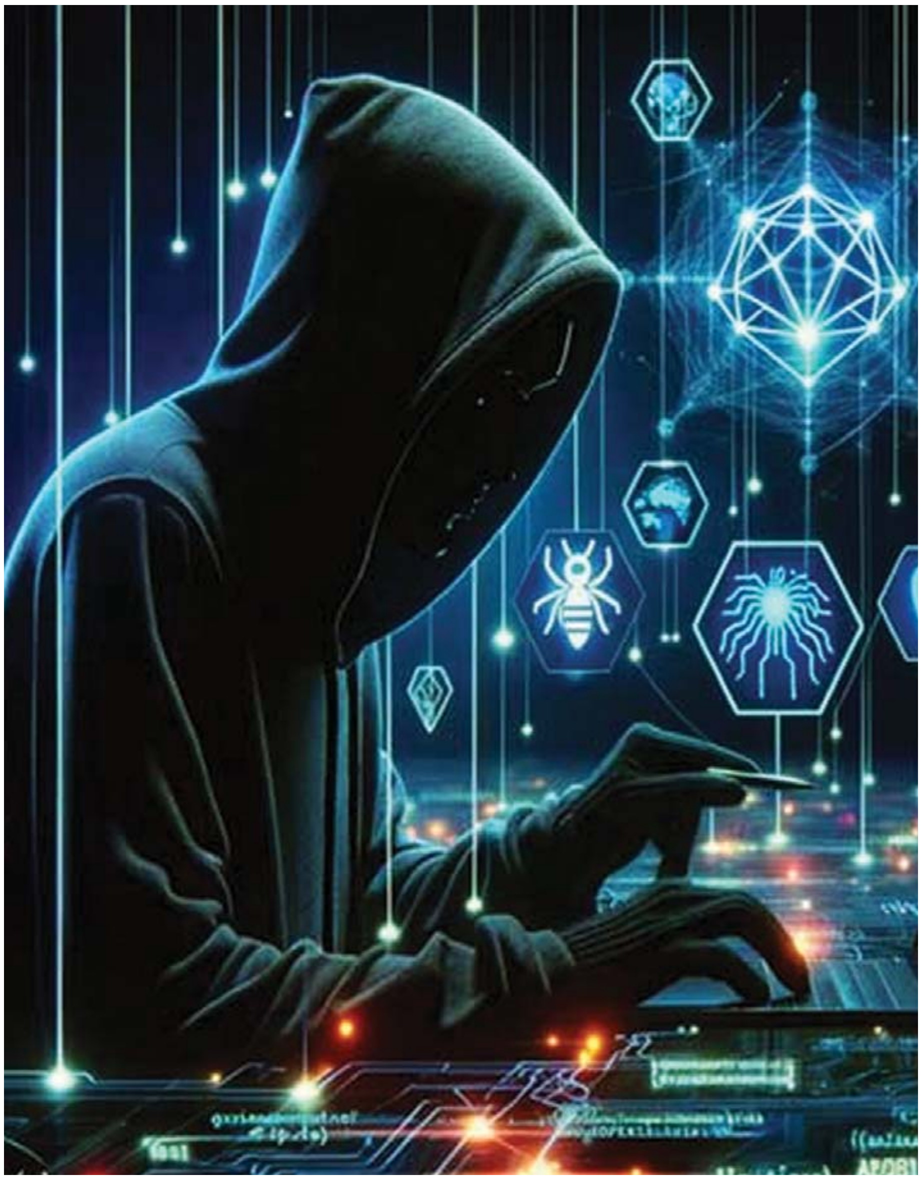

असली जैसी नकली वेबसाइट से रहें सावधान

ठग फर्जी ईमेल या मोबाइल पर मैसेज भेजते हैं। जिसमें आकर्षक ऑफर लॉटरी जीतने का दावा या किसी सरकारी योजना का लालच दिया जाता है। इन मैसेज में एक लिंक होता है जिस पर क्लिक करने को कहा जाता है। लिंक पर क्लिक करते ही आप एक नकली वेबसाइट पर पहुंच जाते हैं, जो देखने में असली लगती है। जैसे बैंक की वेबसाइट, सरकारी पोर्टल या इ-कॉमर्स साइट। यहां आपसे आपकी व्यक्तिगत जानकारी बैंक विवरण, पासवर्ड या ओटीपी मांगा जाता है। जैसे ही आप यह जानकारी देते हैं, वह ठगों के पास पहुंच जाती है और वह आपके खातों में से पैसे उड़ा सकते हैं।

सोशल मीडिया डाउनलोडिंग स्कैम

आजकल यह साइबर धोखाधड़ी करने का एक आम तरीका बन गया है। ठग आपको एक किसी व्यक्ति की फोटो भेजते हैं, इसमें आपको उस फोटो को पहचानने के लिए कहा जाता है। जैसे ही आप उस फोटो को डाउनलोड करते हैं आपके मोबाइल और पूरे एकाउंट का कंट्रोल हैकर के पास चला जाता है।

साइबर अपराध से बचने के उपाय

अनजान व्यक्ति से प्राप्त मैसेज चाहे किसी भी फॉर्मेट (इमेज, ऑडियो, वीडियो, पीडीएफ या 'स्त्र') में हो, इसे कभी भी सीन या डाउनलोड नहीं करना है।

जो ऐप आप इस्तेमाल कर रहे हैं उसकी मीडिया सेटिंग्स में जाकर मीडिया ऑटो डाउनलोड (when using Mobile Data/ when connected on Wi-fi/When Roaming) को हमेशा ऑफ रखें।

अगर गलती से इमेज आदि को डाउनलोड कर लेते हैं, तो अपने मोबाइल में देखें कि कोई अवांछित एप्लीकेशन तो डाउनलोड नहीं हुई।

अपने सभी सोशल मीडिया और बैंक खातों पर टू-स्टेप वेरिफिकेशन (या टू-फैक्टर ऑथेंटिकेशन) को सक्षम करें।

अपने मोबाइल और अन्य उपकरणों के ऑपरेटिंग सिस्टम और ऐप्स को हमेशा अपडेट रखें, क्योंकि अपडेट में सुरक्षा पैच शामिल होते हैं।

ई-मार्केटिंग साइट्स पर बेचे जा रहे चोरी के मोबाइल

जोधपुर। ई-मार्केटिंग वेबसाइट्स या ऐप से मोबाइल खरीदने पर सतर्कता बरतनी बहुत जरूरी है। इन वेबसाइट्स और ऐप पर चोरी के मोबाइल भी बेचे जा रहे हैं। ऐसे में बिना पड़ताल किए मोबाइल खरीदने पर आपको लेने के देने पड़ सकते हैं। इसके साथ ही शातिर बदमाश इन मोबाइल को हैक करके भी

SUNDAY रिपोर्टर

बेच रहे हैं, जिससे यूजर्स की निजी जानकारी साइबर अपराधियों तक पहुंच रही है और वे साइबर ठगी का शिकार हो रहे हैं। ऐसे में ऑनलाइन मोबाइल खरीदते समय सावधानी नहीं बरतने पर आपको इसकी बड़ी कीमत चुकानी पड़ सकती है।

ऑनलाइन माध्यम से या ई-मार्केटिंग साइट्स से मोबाइल खरीदते समय अतिरिक्त सावधानी बरतनी चाहिए। अगर सील टूटी हुई है या ब्रोकन मोबाइल है या लगता है कि मोबाइल उपयोग में लिया हुआ हो तो ऐसे मोबाइल तो तुरंत लौटा देना चाहिए। ऐसा देखने में आया है कि साइबर अपराधी ई-मार्केटिंग साइट्स के जरिए सस्ते मोबाइल का झांसा देकर चोरी का मोबाइल थमा देते हैं।

इन दो केसों से समझें कैसे हो रही वारदात

1. दौसा पुलिस ने पिछले दिनों मोबाइल चोरी के एक मामले में 6 बदमाशों को गिरफ्तार किया था। पूछताछ में सामने आया कि ये बदमाश ई मार्केटिंग वेबसाइट्स पर फर्जी आईडी बनाकर चोरी के मोबाइल कम कीमत में बेचते हैं।
2. जोधपुर में एक युवक ने ई मार्केटिंग वेबसाइट से मोबाइल खरीदा तो वह मोबाइल चोरी का निकला। इस संबंध में उसने महामंदिर थाने में मुकदमा भी दर्ज करवाया है। उसने अपनी रिपोर्ट में बताया कि कम कीमत पर मोबाइल देने का एड देखकर उसने दिए गए नंबर पर संपर्क किया। एक युवक ने उसे रेस्टोरेंट में बुलाया और मोबाइल देकर रुपए ले लिए। बाद में पता चला कि मोबाइल चोरी का है।

साइबर ठगी का शिकार भी बना सकते बदमाश

ऐसे मोबाइल हैक हो सकते हैं या उनमें वायरस हो सकता है। ऐसे मोबाइल में जब यूजर्स कोई भी जानकारी दर्ज करता है तो वह जानकारी तुरंत साइबर ठगों के पास पहुंच जाता है। इसके जरिए साइबर ठग आसानी से साइबर ठगी की वारदातों को अंजाम दे सकते हैं। सजग रहकर न सिर्फ चोरी का मोबाइल खरीदने से बचा जा सकता है, बल्कि साइबर ठगी से भी बचा जा सकता है। इस तरह की घटना होने पर तुरंत पुलिस को जानकारी देनी चाहिए।

जजों ने खोले खाते, अफसरशाही के राज बंद

सुप्रीम कोर्ट अपनी तरफ से पूरी कोशिश कर रहा है कि देश में न्याय की कुर्सियों पर बैठे व्यक्तियों के चालचरित्र और संपत्ति के मामलों में पारदर्शिता रहे, लेकिन अफसरशाही और विधायिका में जो घोर भ्रष्टाचार अपनी जड़ें जमा चुका है, उस पर मट्ठा डालने का काम कब शुरू होगा?

जोधपुर। सुप्रीम कोर्ट अपनी तरफ से पूरी कोशिश कर रहा है कि देश में न्याय की कुर्सियों पर बैठे व्यक्तियों के चालचरित्र और संपत्ति के मामलों में पारदर्शिता रहे। इस के लिए हाल ही में हाई कोर्ट और सुप्रीम कोर्ट के जजों को अपनी संपत्ति घोषित करने का आदेश भी सीजेआई ने दिया। यह पारदर्शिता बढ़ाने की दिशा में एक अहम कदम माना जा रहा है ।

SUNDAY रिपोर्टर

पिछले कुछ दिनों से हाई कोर्ट के जज रहे जस्टिस यशवंत वर्मा काफी सुर्खियों में हैं। उन पर आरोप है कि नई दिल्ली स्थित उन के सरकारी आवास से भारी मात्रा में कैश मिला। 14 मार्च को यशवंत वर्मा के आवास के एक स्टोर रूम में आग लग गई। उस समय जज और उन की पत्नी भोपाल में थे। आवास पर उन की बूढ़ी मां ही थीं। आग लगने पर फायर ब्रिगेड के कर्मचारियों ने जब आग बुझानी शुरू की तो पाया कि स्टोररूम में बोरों में बड़ी तादाद में नोटों के बंडल हैं जो आग की चपेट में आ कर जल रहे हैं। इतनी बड़ी तादात में बोरों में भरे कैश को देख कर सब के हाथपैर फूल गए। पुलिस आई, मीडिया में फोटो सकुर्लेट हो गए। हल्ला मच गया कि जज साहब के घर से नोटों के भरे बोरे बरामद हुए हैं। अब मामला चूंकि हाई कोर्ट के जज से जुड़ा था इसलिए तुरंत आतंरिक जांच शुरू हो गई और पुलिस ने ज्यादा कुछ नहीं किया, मगर बाकी बोरे जिन में नोटों के बंडल थे और जो जलने से बच गए थे, वे रहस्यमय तरीके से कहां गायब हो गए इस का अब कुछ पता नहीं चल रहा है। दिल्ली हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश डीके। उपाध्याय ने भी 21 मार्च को सीजेआई को सौंपी गई अपनी रिपोर्ट में इस गायब हुई नकदी का उल्लेख किया है।

सरकार और सुप्रीम कोर्ट के बीच रस्साकशी

मोदी दौर में कालेजियम को लेकर सरकार और सुप्रीम कोर्ट के बीच लंबे समय से काफी रस्साकशी चल रही है। सरकार कालेजियम को समाप्त करने पर आमादा है और सुप्रीम कोर्ट इस को बरकरार रखना चाहता है। इस के चलते उपराष्ट्रपति से ले कर मोदी सरकार के कई मंत्री और नेता 'ऊपरी आदेश' से कोर्ट के खिलाफ गाहेबगाहे टीका टिप्पणी करते रहते हैं। हालांकि अभी तक कोर्ट ने इस पर कोई एक्शन नहीं लिया और वह खामोशी से अपना काम कर रहा है। बीते समय में सुप्रीम कोर्ट के कई फैसले सरकार की खाट खड़ी कर चुके हैं। लेकिन जस्टिस यशवंत वर्मा का मामला कोर्ट को बैकफुट पर लाने वाला था, लिहाजा आननफानन सुप्रीम कोर्ट ने एक तीन सदस्यीय समिति बना कर इस मामले की जांच शुरू करवा दी। यही नहीं जस्टिस वर्मा को दिल्ली हाई कोर्ट से हटा कर वापस इलाहाबाद हाई कोर्ट भेज दिया गया जहां उन्हें न्याय संबंधी कार्यों से अलग रखा गया।

भ्रष्टाचार मिटाने के अथक प्रयास

सुप्रीम कोर्ट की वेबसाइट पर जजों की नियुक्ति से जुड़े कालिजियम सिस्टम से सुझाए गए नाम और हाई कोर्ट, सुप्रीम कोर्ट के मौजूदा और रिटायर्ड जजों से उन के संबंध का ब्यौरा भी है। साथ ही उन नामों से सरकार ने कितनों को मंजूरी दी है इस की भी जानकारी है। गौरतलब है कि सुप्रीम कोर्ट कालेजियम ने 9 नवंबर 2022 से ले कर 5 मई 2025 तक कुल 221 नामों की केंद्र को सिफारिश की थी। इन नामों में केंद्र ने अभी तक 29 नामों को मंजूरी नहीं दी है। कालेजियम से भेजे गए नामों में 14 ऐसे थे जिन का संबंध किसी रिटायर्ड या मौजूदा जज से था। इसी अवधि में हाई कोर्ट में न्यायाधीशों की नियुक्ति के लिए कालेजियम के प्रस्तावों को भी वेबसाइट पर डाला गया है। इन में नाम, हाई कोर्ट, कालेजियम की सिफारिश की तारीख आदि सूचनाएं शामिल हैं। न्यायपालिका में पारदर्शिता बनाने की दिशा में और भ्रष्टाचार से दूर रहने के लिए सुप्रीम कोर्ट अथक प्रयास कर रहा है ताकि उस पर कोई ऊंगली न उठा सके और देश की जनता का विश्वास न्यायपालिका पर पुख्ता हो।

अफसरशाही, भ्रष्टाचार और नेता का गठजोड़

अफसरशाही और विधायिका में जो घोर भ्रष्टाचार अपनी जड़ें जमा चुका है, उस पर मट्ठा डालने का काम कब शुरू होगा? अफसरशाही भ्रष्टाचार और नेता एक ऐसा गठजोड़ है जो हर सरकार में होता है। अफसर खुद भी करोड़ों रुपए डकारता है और नेता को भी मालामाल करता है और इस के बदले में नेता उस को शरण देता है। उस के हर काले कारनामे पर पर्दा डाले रखता है। किस अफसर के पास कितनी जमीन है, कितने फ्लैट हैं, कितना बैंक बैलेंस है, कितना सोना है, कितना पैसा उसने रिश्तेदारों के नाम पर विभिन्न कंपनियों में निवेश कर रखा है, कितना विदेशी बैंकों में जमा है, इस का खुलासा कभी नहीं होता है। देश में जितने भी घोटाले होते हैं वह कोई नेता अकेले नहीं करता बल्कि उस की जड़ में अफसरशाही है जो यह सब करती है। वह बड़ा हिस्सा खुद खाती है और बचाखुचा नेता को खिलाती है। भारतीय प्रशासनिक सेवा को देश के प्रशासन की रीढ़ कहा जाता है, लेकिन प्रशासनिक शुचिता आज अपने निम्नतम स्तर पर पहुंच चुकी है। समयसमय पर कुछ अधिकारियों द्वारा किए गए भ्रष्टाचार ने इस की साख को प्रभावित किया है। प्रशासनिक पदों पर बैठे अनेक अधिकारी, जिन पर जनता की सेवा करने और सुशासन को मजबूत करने की जिम्मेदारी है, मनी लान्ड्रिंग, रिश्वतखोरी और घोटालों में लिप्त हैं। ऐसे सैकड़ों उदाहरण हैं, जब प्रशासनिक सेवा के अधिकारी अपने कर्तव्यों से भटक कर भ्रष्टाचार के आरोपों में घिरे और जेल गए। जिन के कारनामे सामने नहीं आए वे मजे से कमाई कर रहे हैं।

आईएएस पर भ्रष्टाचार के संगीन आरोप

अक्टूबर 2022 में प्रवर्तन निदेशालय ने छत्तीसगढ़ कैडर के आईएएस अधिकारी समीर विश्नोई को मनी लान्ड्रिंग और अवैध लेवी वसूली के आरोप में गिरफ्तार किया था। एक ऐसा अधिकारी जिसने मात्र 16 महीने में 500 करोड़ रुपए की काली कमाई की। समीर विश्नोई के साथ दो कारोबारी सुनील अग्रवाल और लक्ष्मीकांत तिवारी को भी गिरफ्तार किया गया था। छापेमारी को दौरान समीर बिश्नोई के घर में लगभग दो करोड़ रुपए मूल्य का 4 किलो सोना और 20 कैरेट हीरा मिला था। इस के साथ ही 47 लाख नकद, कई लाख की एफडी और अन्य सम्पत्तियां भी मिली थी। तीनों के पास से कुल 6 करोड़ 30 लाख का सोना और हीरा आदि मिला था। बाद में मिली संपत्ति को ईडी ने उजागर नहीं किया। तीनों को जेल भेज दिया गया था। झारखंड कैडर की आईएएस पूजा सिंघल का नाम अखबारों की सुर्खियों में रहा। पूजा सिंघल पर मनरेगा फंड घोटाले और मनी लान्ड्रिंग का आरोप है। ईडी ने उन्हें गिरफ्तार कर उन के खिलाफ पीएमएलए कोर्ट में चार्जशीट दाखिल की। उन पर सरकारी धन का दुरुपयोग कर निजी संपत्ति खरीदने के गंभीर आरोप हैं। गुजरात कैडर के आईएएस अधिकारी के। राजेश को अगस्त 2022 में रिश्वत लेने और अवैध संपत्ति अर्जित करने के आरोप में गिरफ्तार किया गया था। उन्होंने अपने पद का दुरुपयोग कर जनता से अवैध लाभ लिया और उसे अपनी संपत्तियों में निवेश किया। उत्तर प्रदेश कैडर की नीरा यादव को कौन भूल सकता है। नीरा यादव जिस सरकार में रहीं उन्होंने खुद भी काली कमाई की और नेताओं की तिजोरियां भी खूब भरीं। सुप्रीम कोर्ट ने भ्रष्टाचार का दोषी करार दे कर उन्हें दो साल की जेल की सजा सुनाई। छत्तीसगढ़ कैडर के बाबूलाल अग्रवाल पर आय से अधिक संपत्ति अर्जित करने और 400 फर्जी बैंक खाते खोलने के आरोप लगे। ईडी ने उन की संपत्तियों को जब्त कर उन के खिलाफ चार्जशीट दाखिल की। उत्तर प्रदेश कैडर के राकेश ब हादुर पर 4000 करोड़ रुपए के नोएडा भूमि घोटाले में शामिल होने का आरोप लगा। न्यायालय ने भ्रष्टाचार के आरोपों के चलते उन्हें पद से हटाने का आदेश जारी किया। हिमाचल प्रदेश कैडर के आईएएस सुभाष अहलूवालिया पर आय से अधिक संपत्ति अर्जित करने का आरोप था। मुख्यमंत्री के प्रधान निजी सचिव के रूप में कार्यरत रहते हुए उन्हें और उनकी पत्नी को भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो ने निलंबित कर गिरफ्तार किया। हालांकि, बाद में विभागीय जांच में मंजूरी मिलने के बाद उन्हें बहाल कर दिया गया। जनवरी 2025 में आय से अधिक संपत्ति के मामले में बिहार कैडर के आईएएस संजीव हंस गिरफ्तार हुए। उन के खिलाफ अभी जांच जारी है। वहीं फरवरी 2025 में जम्मूकश्मीर कैडर के कुमार राजीव रंजन को सीबीआई ने आय से अधिक संपत्ति मामले में केस दर्ज कर गिरफ्तार किया।

पुरुषों में क्यों बढ़ रहा अवसाद

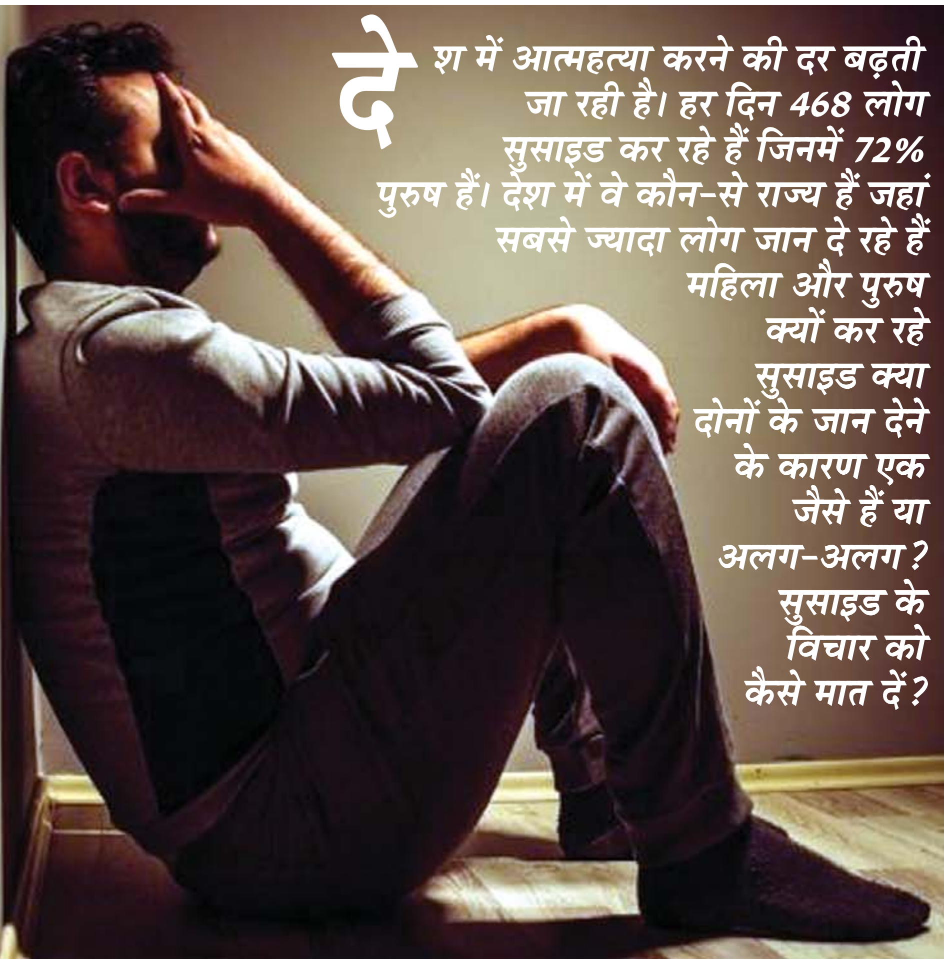

देश में आत्महत्या करने की दर बढ़ती जा रही है। हर दिन 468 लोग सुसाइड कर रहे हैं जिनमें 72% पुरुष हैं। देश में वे कौन-से राज्य हैं जहां सबसे ज्यादा लोग जान दे रहे हैं महिला और पुरुष क्यों कर रहे सुसाइड क्या दोनों के जान देने के कारण एक जैसे हैं या अलग-अलग? सुसाइड के विचार को कैसे मात दें?

जोधपुर। एडवोकेट अनुपम ने डैम में कूदकर जान दे दी। एक बैंक में सेल्स एग्जीक्यूटिव के तौर पर काम करने वाली युवती ने हाथ की नस काटकर सुसाइड कर ली। 25 साल के एक छात्र ने अपने कमरे में पंखे पर लटककर आत्महत्या कर ली। एक कारोबारी ने परिवार समेत जहरीला पदार्थ पीकर सुसाइड कर ली। हर दिन इस तरह की खबरें पढ़ने और सुनने को मिलती हैं। देश में आत्महत्या के आंकड़े डराने वाले हैं। हर दिन 468 से ज्यादा लोग जान दे रहे हैं, जिनमें 72 प्रतिशत संख्या पुरुषों की हैं।

SUNDAY रिपोर्टर

साल 2022 में 1 लाख 71 हजार लोगों ने की आत्महत्या

नेशनल क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो की 2022 की रिपोर्ट के मुताबिक, साल 2022 में 1 लाख 71 हजार लोगों ने आत्महत्या की थी। देश में सुसाइड रेट ने रिकॉर्ड तोड़ दिया। इसी के साथ दुनिया में सुसाइड करने के मामले में भारत टॉप पर आ गया। जान देने वालों में एक लाख 22 हजार 724 पुरुष थे और 48 हजार 286 महिलाएं। एनसीआरबी की रिपोर्ट ने पुरुषों की भावनात्मक अनदेखी और पुरुषों में बढ़ते मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्या को लेकर चिंता में डाल दिया। सवाल यह है कि देश में वे कौन-से राज्य हैं, जहां सबसे ज्यादा लोग जान दे रहे हैं, महिला और पुरुष क्यों कर रहे सुसाइड, क्या दोनों के जान देने के कारण एक जैसे हैं या अलग-अलग? सुसाइड के विचार आने पर क्या करें, अपने आसपास के लोगों को कैसे पहचाने और बचाएं? मई, मेंटल हेल्थ अवेयरनेस मंथ में एक्सपर्ट से जानें...

क्या हैं सुसाइड के कारण?

एनसीआरबी की रिपोर्ट की मानें तो सबसे ज्यादा संख्या उन लोगों की है, जो पारिवारिक समस्याओं (31.7%) और बीमारियों (18.4%) से तंग आकर जान दे रहे हैं।

इसके अलावा, लोग नशे की लत, शादी संबंधी समस्याएं, प्रेम संबंध में अनबन, वित्तीय नुकसान, बेरोजगारी, हिंसा व ब्लैकमेलिंग, पेशेवर/करियर संबंधी समस्याएं, मानसिक विकार, अकेलेपन की भावना और संपत्ति विवाद के चलते जान गंवा रहे हैं।

पुरुष और महिलाओं के कारण अलग

- **महिलाएं:** पारिवारिक समस्याएं जैसे- दहेज की मांग, बार-बार शादी टूटना, सामाजिक प्रतिष्ठा का भय, घरेलू हिंसा जैसी समस्याओं से तंग आकर अपनी जान देती हैं।
- **पुरुष:** नौकरी से निकाले जाने, व्यापार में घाटा, कर्ज में डूबने, संपत्ति विवाद, प्यार में नाकाम रहने, इंटरव्यू या किसी परीक्षा में फेल होने पर मौत को गले लगाते हैं।

जहां पुरुष नौकरी से निकाले जाने, व्यापार में घाटा, कर्ज में डूबने, प्यार में नाकाम रहने और इंटरव्यू या किसी परीक्षा में फेल होने पर मौत को गले लगा लेते हैं। वहीं महिलाएं पारिवारिक समस्याएं, दहेज की मांग, बार-बार शादी टूटना, घरेलू हिंसा जैसी समस्याओं से तंग आकर अपनी जान देती हैं।

सुसाइड करने वालों में पुरुषों की संख्या ज्यादा क्यों?

सीनियर साइकेट्रिस्ट व मनस्थली की फाउंडर एंड डायरेक्टर डॉ. ज्योति कपूर ने बताया, पुरुषों की परवरिश ऐसे की जाती है कि कमजोरियों को किसी के सामने जाहिर न करने, हर हाल में स्ट्रांग होने का दिखावा करने और चुपचाप सहते रहना सिखाया जाता है। यही कारण कि वे अपने मन में चल रही उलझन, द्वंद, निराशा-हताशा को अपने सगे-संबंधी या दोस्तों के साथ शेयर नहीं कर पाते हैं और अंत में हारकर मौत को गले लगा लेते हैं।

पुरुषों के खिलाफ अत्याचार की घटनाएं बढ़ गई हैं। इनमें झूठे आरोप, भावनात्मक दुर्व्यवहार से लेकर घरेलू हिंसा और कानूनी उत्पीड़न तक शामिल होते हैं। झूठे आरोपों के चलते जहां मानसिक, कानूनन और सामाजिक तौर पर पीड़ित महसूस करते हैं। इससे उनको मानसिक तौर पर सदमा लगता है, जिसे समझने की कोशिश भी नहीं की जाती है।

किन राज्यों में सबसे अधिक सुसाइड केस?

महाराष्ट्र	22,746
तमिलनाडु	19,834
मध्य प्रदेश	15,386
कर्नाटक	13606
पश्चिम बंगाल	2669
केरल	10162
तेलंगाना	9980
गुजरात	9002
आंध्र प्रदेश	8908
छत्तीसगढ़	8446
उत्तर प्रदेश	8176

नेशनल क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो की 2022 की रिपोर्ट के मुताबिक, आत्महत्या के सबसे ज्यादा मामले महाराष्ट्र, तमिलनाडु और मध्य प्रदेश से आए, जबकि सबसे अधिक आत्महत्या दर वाले राज्यों में सिक्किम , अंडमान एंड निकोबार और पुडुचेरी शीर्ष पर हैं।

नकारात्मक विचार आए तो क्या करें?

- *परिवार, दोस्त या किसी विश्वसनीय व्यक्ति से अपनी भावनाओं को शेयर करें।*
- *मनोचिकित्सक या काउंसलर से संपर्क करें।*
- *देश में कई हेल्पलाइन हैं, जो 24/7 करती हैं, मदद लें।*
- *नियमित व्यायाम, संतुलित आहार और पर्याप्त नींद लेकर मेंटल हेल्थ ठीक करें।*

यहां ले सकते हैं मदद

अगर आप या आपका कोई परिचित मानसिक तनाव, डिप्रेशन, चिंता और आत्महत्या की प्रवृत्ति जैसे स्थिति से जूझ रहा है तो पर मनोवैज्ञानिक परामर्श ले सकते हैं।

किरण हेल्पलाइन

टोल-फ्री नंबर:
1800-599-0019
समय: 24X7 उपलब्ध
भाषा: हिंदी समेत 13 भाषाओं में सेवाएं

मनोदर्पण

हेल्पलाइन नंबर:
844-844-0632

52% पुरुष हिंसा के शिकार

हाल ही में हरियाणा में कराए गए एक अध्ययन में सामने आया कि 52.4% शादीशुदा पुरुष लिंग आधारित हिंसा के शिकार हुए है, लेकिन उन्होंने कानूनी मदद मिली और न मनोवैज्ञानिक सहयोग। अध्ययन में कहा गया है कि समाज पुरुषों के दर्द को नजरअंदाज किए जा रहा है। समय की मांग है कि इसमें तुरंत सुधार किया जाए।

इंडियन एसोसिएशन ऑफ क्लिनिकल साइकोलॉजिस्ट्स की महासचिव व मंशा ग्लोबल फाउंडेशन की फाउंडर डॉ. श्वेता शर्मा के मुताबिक, जिन पुरुषों पर गलत आरोप लगाए जाते हैं या जो हैरेसमेंट के शिकार होते हैं, वे उपहार या अविश्वास के डर से चुपचाप सहते रहते हैं।

डॉ. श्वेता शर्मा कहती हैं कि उनके ये कड़वे अनुभव न सिर्फ उनके मानसिक स्वास्थ्य पर असर डालते हैं, बल्कि पहचान और सुरक्षा की भावना को धूमिल करते हैं। इसका असर ये होता है कि वे अलगाव, आक्रामकता, ड्रग एडिक्ट के शिकार हो जाते हैं या फिर आत्महत्या कर लेते हैं।

सीमलैस माइंड्स क्लिनिक और पारस हेल्थ की सीनियर कंसल्टेंट क्लिनिकल साइकोलॉजिस्ट डॉ. प्रीति सिंह ने कहा कि यह मुद्दा कानूनी सुरक्षा उपायों की कमी से और बढ़ जाता है।

साल 2013-14 के एक सर्वे में सामने आया था कि 2013-14 के बीच दर्ज किए गए कुल बलात्कार के मामलों में से 53.2 प्रतिशत आरोप झूठे थे। इस सर्वे में दिए गए आंकड़े पर मनोवैज्ञानिकों और कानूनी विशेषज्ञों ने चिंता जाहिर की थी।

अकेले ही तबाह किए पाकिस्तान के 48 टैंक

1971 युद्ध में हनुवंत सिंह ने पाक के 48 टैंक नष्ट किए, उनके घर के आगे पूना रेजिमेंट ने टैंक रखा है..

हनुवंत सिंह को महावीर चक्र और 'फक्र-ए-हिंद' का मिला सम्मान

जोधपुर। लेफ्टिनेंट जनरल हनुवंत सिंह, यह नाम भारतीय सेना में बड़े गर्व से लिया जाता है। हनुवंत सिंह उस गौरवशाली टैंक रेजिमेंट 17 पूना हॉर्स के कमांडिंग ऑफिसर (सीओ) थे, जिसका सन 1971 की लड़ाई में अदम्य साहस देख पाकिस्तान की सेना ने 'फक्र-ए-हिन्द' का खिताब दिया था। उनकी बहादुरी की वजह से ही सेना ने उनके पैतृक गांव जसोल में टैंक टी 55 तैनात किया है।

SUNDAY रिपोर्टर

आपने और हमने सैनिक के सीने पर मेडल, बंदूक या फिर इनाम में प्रमाण पत्र तो सुने हैं। लेकिन बालोतरा के जसोल गांव में लेफ्टिनेंट जनरल हनुवंत सिंह एक ऐसे फौजी अफसर रहे हैं, जिनके घर के आगे पूना रेजिमेंट ने एक टैंक रखा है। रखे भी क्यों नहीं, जब 1971 का युद्ध हुआ, तो पाकिस्तान के 48 टैंकों को नेस्तानाबूद करने का हौंसला इस अफसर ने किया था। जसोल के लोग भी आज भारत-पाकिस्तान के बीच तनाव की स्थिति में जोश से कहते हैं कि हम हनुवंत के गांव से हैं।

पाकिस्तान के 48 टैंकों को किया नेस्तनाबूद

बसंतर की लड़ाई 1971 में लेफ्टिनेंट जनरल हनुवंत सिंह ने लड़ी थी। इस लड़ाई में पाकिस्तान की टैंक रेजिमेंट भारत के सामने थी। जम्मू पंजाब के शकरगढ़ सेक्टर में दोनों देशों के बीच टैंक युद्ध हुआ। एक-एक कर पाकिस्तान के 48 टैंक को नेस्तनाबूद कर दिया। इस युद्ध में लेफ्टिनेंट अरुण क्षेत्रपाल शहीद हुए, जिन्हें परम वीर चक्र से नवाजा गया था। जसोल के लाडले हनुवंत सिंह को भी इस जंग में अदम्य साहस दिखाने के लिए महावीर चक्र दिया गया। 1971 में टी 55 टैंक के जरिए ही फक्र-ए-हिन्द जनरल हनुवंत सिंह के नेतृत्व में पाकिस्तान को जबरदस्त मात दी गई थी। इस टैंक ने पाक सेना पर जमकर कहर ढाया था, जिससे पाकिस्तान को करारी हार का सामना करना पड़ा था। बाड़मेर के जसोल गांव के लाडले जनरल हनुवंत सिंह ने इसके साथ मोर्चा संभाला था।

हनुवंत सिंह की जीवनी

हनुवंत सिंह जसोल बाड़मेर जिले के जसोल गांव में महेचा राठौर राजपूत परिवार में पैदा हुए थे। उन्होंने 1949 में नेशनल डिफेंस अकादमी में दाखिला लिया और सेना में शामिल हुए। उन्होंने 1965 और 1971 के भारत-पाक युद्ध में भाग लिया, जिसमें पूना हॉर्स रेजीमेंट का नेतृत्व किया। 1971 की बसंतर लड़ाई में उनके नेतृत्व में पूना हॉर्स रेजीमेंट ने दुश्मन के 48 टैंकों को नष्ट कर दिया। उन्हें महावीर चक्र से सम्मानित किया गया और पाकिस्तान की सेना ने उन्हें 'फक्र-ए-हिंद' का सम्मान दिया। जनरल हनुत सिंह, जिन्होंने 1971 के भारत-पाक युद्ध में अदम्य साहस का परिचय देते हुए पाकिस्तान के 48 टैंक की पूरी रेजिमेंट को ही नेस्तनाबूद कर दिया। उसके बाद सेना की ओर से सम्मान स्वरूप धोरा धरती बाड़मेर के जसोल गांव में उनकी ढाणी में भारतीय सेना का टैंक रखा गया है। यह पहला उदाहरण है कि किसी भी सैनिक के सम्मान में उनके गांव में टैंक खड़ा गया हो।

ऑपरेशन जिब्राल्टर: पाकिस्तान का स्याह सच

जोधपुर। 22 अप्रैल 2025 की तारीख किसी भी भारतवासी को भूली नहीं होगी। यह वही दिन था जब पाकिस्तानी आतंकवादियों ने हमारे जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में लगभग दो दर्जन बेगुनाह लोगों की हत्या कर दी थी। पाकिस्तान लगातार अपनी जमीन पर आतंक की फसल उगा रहा है। 1947 में बंटवारे के बाद से ही पाकिस्तान ने कश्मीर पर कब्जे की नीयत से हरकतें शुरू कर दी थीं। 1948 में कबायलियों की घुसपैठ के साथ ही उसके मंसूबे दिखना शुरू हो गए थे। अब आते हैं अगस्त 1965 पर, जब पाकिस्तानी फौज ने एक ऑपरेशन शुरू किया जिसका नाम रखा गया 'ऑपरेशन जिब्राल्टर'। यहां सबसे पहले 'जिब्राल्टर' शब्द को समझने की जरूरत है।यह एक अरबी शब्द 'जबल तारिक' से लिया गया है जिसका मतलब है 'तारिक का पहाड़'। यह पहाड़ स्पेन के दक्षिणी तट पर स्थित है। इस ऑपरेशन के जरिये पाकिस्तान की मंशा कश्मीरी लोगों को विद्रोह के लिए उकसाना और इस राज्य को भारत से अलग करना था।

SUNDAY रिपोर्टर

पाकिस्तानी मेजर का दिमाग: पाकिस्तानी फौज में मेजर जनरल अख्तर हुसैन मलिक नाम का एक अधिकारी हुआ करता था। सन्1965 में हुए भारत-पाकिस्तान युद्ध में वह मारा गया था। माना जाता है कि 'ऑपरेशन जिब्राल्टर' के पीछे उसी का दिमाग था। उसने यह योजना बनाई थी कि पाकिस्तानी फौज गुरिल्ला लड़ाके तैयार करके उन्हें कश्मीर में भेजेगी, जो मुस्लिम आबादी को भारत के खिलाफ भड़काकर आंतरिक युद्ध जैसी स्थिति बनाएंगे। यह गुरिल्ला पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर के वाशिंदे थे। हालांकि, पाकिस्तान ने कभी भी यह स्वीकार नहीं किया कि उसने ऐसा कोई ऑपरेशन बनाया या शुरू किया है। 1965 के युद्ध के बाद इस ऑपरेशन को असफल मान लिया गया था।

कश्मीर पर बुरी नीयत से शुरू किया गया एक नाकाम मंसूबा

अयूब खान का पतन: पाकिस्तान ने यह कभी भी नहीं स्वीकारा कि वह 1965 का युद्ध हार गया है। लेकिन इस बात का बहुत दिनों तक जनता से छुपाकर नहीं रखा जा सका। नतीजा यह हुआ कि पाकिस्तान के तत्कालीन फौजी तानाशाह फील्ड मार्शल अयूब खान की लोकप्रियता का ग्राफ तेजी से नीचे गिरना शुरू हो गया। 1969 में उसे सत्ता छोड़नी पड़ी और 1974 में गुमनामी के साये में वह इंतकाल फरमा गया।

जब फौज में उठी बगावत की आवाज

1965 में पाकिस्तानी एअर फोर्स के एअर मार्शल रहे नूर खान ने डान अखबार से बातचीत में कहा था, 'पाक फौज ने मुल्क को गुमराह किया है। आवाम को यह बताया कि भारत ने हमला किया और युद्ध शुरू किया, जबकि सच इसके उलट था और हम जंग हार चुके हैं।' हालांकि फौज ने उनके बयान को झूठा बताते हुए खारिज कर दिया था। यह वही नूर खान थे, जिनके नाम से पाकिस्तानी एअरबेस भी बनाया गया और हाल ही में ऑपरेशन सिंदूर के जरिये भारत ने उसे तहस-नहस कर दिया है। इसके बाद भी पाकिस्तानी फौज और कठपुतलीनुमा राजनीतिक आका अपनी हरकतों से बाज नहीं आए हैं। रह-रहकर उन्होंने भारत को उकसाया ही है। और हर मुंह की ही खायी है।

घटनाक्रमों का संक्षिप्त विवरण

- **1947-1948:** कश्मीर को लेकर पहला युद्ध हुआ था।
- **1965:** कश्मीर को लेकर दूसरा युद्ध, जिसमें भारतीय फौज लाहौर तक पहुंच गई थी।
- **1971:** पूर्वी पाकिस्तान (अब बांग्लादेश) की आजादी की लड़ाई। इसी दौरान पाकिस्तान ने भारत पर हमला कर दिया था और बुरी तरह से हारने के बाद सरेंडर करना पड़ा था।
- **1984:** सियाचिन पर विवाद
- **1999:** कारगिल युद्ध
- **2025:** पहलगाम में निर्दोष नागरिकों की हत्या। जिसके परिणामस्वरूप ऑपरेशन सिंदूर शुरू हुआ।

ड्रोन ने बदला युद्ध का तरीका: ड्रोन अब सिर्फ तकनीक नहीं हैं, अब ये युद्ध की दिशा बदलने वाला हथियार

जोधपुर। ड्रोन ने दुनिया भर में युद्ध का तरीका बदल दिया है। हाल ही में पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव चरम पर पहुंच गया। भारतीय सेना ने पाकिस्तान में आतंकियों के ठिकाने तबाह किए तो पाकिस्तानी सेना ने सैकड़ों की संख्या में ड्रोन भेजकर हमले किए। पाकिस्तान के ड्रोन हमलों को भारतीय एयर डिफेंस सिस्टम ने हवा में खत्म कर दिया। अब सवाल यह है कि ड्रोन शब्द कैसे चलन में आया, ड्रोन किस तरह युद्ध लड़ने के तौर-तरीके बदल रहे हैं, दुनिया में पहली बार ड्रोन का कब इस्तेमाल हुआ और किस काम के लिए हुआ था? आइए हम आपको ड्रोन के बारे में सबकुछ बताते हैं...

SUNDAY रिपोर्टर

अभी हाल में भारत-पाकिस्तान तनातनी में दोनों देशों ने अपनी-अपनी ताकत दिखाने के लिए ड्रोन का इस्तेमाल किया। इससे पहले इजरायल-गाजा और रूस-यूक्रेन वॉर में भी ड्रोन का जमकर इस्तेमाल किया गया। इससे एक बात साफ हो गई है कि ड्रोन अब सिर्फ तकनीक नहीं हैं, अब ये युद्ध की दिशा बदलने वाला हथियार हैं। जिस भी देश की रक्षा प्रणाली में उन्नत तकनीक के ड्रोन भी शामिल हैं, उस देश की सेना कई गुना ताकतवर हो जाती है। जैसे पहले विश्व युद्ध में खाइयों की लड़ाई युद्ध रणनीति का हिस्सा थी, वैसे ही 21वीं सदी में ड्रोन युद्ध में प्रमुख हथियार बन चुके हैं। भविष्य के युद्ध की दिशा एआई, स्वार्म टेक्नोलॉजी और ड्रोन से तय होगी।

हाल में भारत-पाकिस्तान तनातनी में दोनों देशों ने ड्रोन का इस्तेमाल किया। इससे पहले रूस-यूक्रेन और इजरायल-गाजा की जंग में भी ड्रोन का इस्तेमाल हुआ। अब ड्रोन सिर्फ तकनीक नहीं है ये युद्ध की दिशा तय करने वाला हथियार बन चुके हैं। ड्रोन किस तरह युद्ध लड़ने के तौर-तरीके बदल रहे हैं दुनिया में पहली बार ड्रोन का कब इस्तेमाल हुआ और किस काम के लिए हुआ था? पढ़े खास खबर...

भारत ने स्वदेशी ड्रोन कब बनाया?

भारत का पहला स्वदेशी डिजाइन और डिवेलप्ट ड्रोन 'निशांत' था। रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन ने ड्रोन 'निशांत' का 1995 में इसका परीक्षण किया था। भारतीय सेना की रिमोटली पायलेटेड व्हीकल (RPV) की जरूरत को पूरा करने के लिए 'निशांत' को बनाया गया था। साल 1999 में कारगिल भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध छिड़ गया था। तब पहली बार भारत ने इस ड्रोन का इस्तेमाल किया था। यह ड्रोन दुश्मन के इलाके के जानकारी एकत्रित करने और तोपखाने की आग को ठीक करने के लिए किया गया था। इसके बाद भारत ने पंछी, लक्ष्य, रुस्तम, आर्चर, घातक और नेत्र समेत कई और ड्रोन बनाए। हालांकि, अभी भारत मुख्य रूप से इजरायली मूल के हिरोन मार्क-2, हैरोप और स्काई-स्ट्राइकर जैसे ड्रोन का इस्तेमाल करता है। अभी हाल ही में भारत ने पाकिस्तान स्थित आतंकवादी स्थलों और पाकिस्तानी वायु रक्षा प्रणालियों पर हमला करने के लिए ड्रोन का इस्तेमाल किया। हालांकि, ये स्पष्ट नहीं है कि कौन-सा ड्रोन इस्तेमाल किया।

युद्ध में अब क्यों अहम हैं ड्रोन?

- ड्रोन की किसी भी सीमा पर त्वरित तैनाती की जा सकती है।
- UAV ड्रोन सटीक हमला करने में सक्षम हैं।
- मानव जीवन के लिए कम जोखिम तुलनात्मक रूप से कम लागत।
- रडार और निगरानी प्रणाली से छिपने में सक्षम।

सबसे अधिक मिलिट्री ड्रोन रखने वाले देश

द पावर एटलस और द ड्रोन डेटाबुक के अनुसार-

अमेरिका	13000
तुर्किए	1421
पोलैंड	1209
रूस	1050
जर्मनी	670
भारत	625
फ्रांस	591
ऑस्ट्रेलिया	557
दक्षिण कोरिया	518
फिनलैंड	412

ड्रोन शब्द व कंसेप्ट कब और कैसे आया?

■ यह बात उस वक्त की है, जब भारत में अंग्रेजों के खिलाफ जंग शुरू भी नहीं थी। 19वीं सदी में इटली छोटे-छोटे राज्यों में बंटा था। इन राज्यों पर अलग-अलग शक्तियों का नियंत्रण था, जिनमें ऑस्ट्रियन साम्राज्य एक प्रमुख शक्ति थी।

■ 1848-49 के बीच पूरे यूरोप में क्रांति की लहर उठी, जिसे स्प्रिंगटाइम ऑफ नेशंस कहा जाता है। लोगों ने अपनी आजादी के लिए लड़ना शुरू कर दिया। इटली आजादी और एकीकरण के लिए आंदोलन चल रहा था।

■ 1849 में वेनिस ने भी ऑस्ट्रिया के खिलाफ विद्रोह कर दिया। वेनिस के लोगों ने ऑस्ट्रिया से आजाद होने का प्रयास किया और एक अस्थाई सरकार बना ली। ऑस्ट्रिया ने सैन्य कार्रवाई कर आंदोलन को कुचलने का प्रयास किया। जब वेनिस के आंदोलनकारियों ने हार नहीं मानी तो ऑस्ट्रियाई सेना ने वेनिस पर बैलून बम गिराए थे, जिसे दुनिया का पहला हवाई हमला माना जाता है।

■ 20वीं सदी में ड्रोन तकनीक विकसित हो गई। आज से करीब 108 साल पहले, प्रथम विश्व युद्ध (साल 1917) के दौरान ब्रिटेन ने रेडियो कंट्रोल्ड एरियल टारगेट (Aerial Target) का टेस्ट किया। ब्रिटेन के टेस्ट के एक साल बाद 1918 में अमेरिका रेडियो कंट्रोल व्हीकल का परीक्षण किया। उसे केटरिंग बग (Kettering 'Bug') करार दिया गया। उस वक्त यह मानव रहित अनमैन्ड व्हीकल (UAV) का पहला उदाहरण था।

ड्रोन का पहली बार प्रयोग किस युद्ध में हुआ था?

दूसरे विश्व युद्ध से पहले ब्रिटेन ने रिमोट से चलने वाली डीएच82बी क्वीन बी ड्रोन बनाया गया। 'ड्रोन' शब्द की उत्पत्ति इसी नाम से हुई है। यह किसी भी लक्ष्य की जानकारी लेने के लिए इस्तेमाल किया जाने लगा था। 'क्वीन बी' को दुनिया का सबसे पहला आधुनिक ड्रोन माना गया था। 'क्वीन बी' का उपयोग ब्रिटेन के रॉयल एयर फोर्सेस में किया गया था। इस ड्रोन की सफलता के बाद ही अमेरिका ने अपना ड्रोन प्रोग्राम शुरू किया था।

अमेरिकी ड्रोन पहली बार युद्ध में कब उड़ाए गए?

अमेरिका ने ब्रिटेन में ड्रोन के सफल होने के बाद अपने यहां ड्रोन बनाने शुरू कर दिए। अमेरिका ने वियतनाम वॉर के दौरान पहली बार छोटे रिमोट कंट्रोल ड्रोन 'रयान एक्यूएम 91' (Ryan AQM-91) का इस्तेमाल किया था। अमेरिकी आर्मी ने इसका इस्तेमाल बड़े पैमाने पर उत्तरी वियतनाम में दुश्मन की जासूसी करने के लिए किया था। 'रयान एक्यूएम 91' दो कैमरों से लैस था।

क्या प्रीडेटर ड्रोन गेम चेंजर साबित हुआ?

■ कोल्ड वॉर के दौरान जासूसी के लिए ड्रोन का जमकर इस्तेमाल किया जाता था। हालांकि 90 के दशक में पहुंचने तक अमेरिका ने प्रीडेटर ड्रोन यानी एक तरह से मानव रहित हवाई विमान विकसित कर लिया, जोकि मिसाइल लैस था। उसके बाद इस ड्रोन का इस्तेमाल बाल्कन युद्ध में किया गया था।

■ इस दिशा में सबसे बड़ा बदलाव साल 2000 में आया, जब अमेरिका ने प्रीडेटर ड्रोन को हेलफायर मिसाइल से लैस कर दिया। इसके बाद से यह ड्रोन दुश्मन के इलाके में सटीक हमला करने में सक्षम हो गया।

■ 9/11 के बाद अमेरिका ने आतंकवाद के खिलाफ अभियान में हेलफायर मिसाइल प्रीडेटर ड्रोन का बड़े लेवल पर इस्तेमाल किया। यह ड्रोन 24 घंटे उड़ान भरने में सक्षम था। एक समय तक ड्रोन तकनीक और ड्रोन इंडस्ट्री पर अमेरिका, ब्रिटेन और इजरायल का कब्जा था। साल 2015 के बाद ड्रोन तकनीक वैश्विक हो गई।

गर्मी में अपने इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स को रखें COOL

गर्मी के मौसम में आपके इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स के ओवरहीट होने का रिस्क बढ़ जाता है। कई डिवाइसेस इसका अलर्ट भी देती हैं। अगर आप अपने गैजेट्स को हीट से प्रोटेक्ट नहीं करेंगे तो वे खुद तो डैमेज होंगे ही, साथ ही ब्लास्ट होने पर आपको भी नुकसान पहुंचा सकते हैं...

गैजेट्स के ओवरहीट करने की बड़ी वजहें

- कॉन्टिन्यूअसली फोन की ब्राइटनेस हाई रखना
- लंबे टाइम तक गेम खेलना
- कैमरे का ज्यादा यूज
- फास्ट चार्जिंग
- खराब चार्जिंग पोर्ट
- डुप्लीकेट चार्जर या बैटरी का यूज
- डायरेक्ट सनलाइट
- प्रॉपर वेंटिलेशन न मिलना
- वायरलेस चार्जिंग
- गैजेट्स में मालवेयर की एंट्री

गैजेट्स को ऐसे रखें कूल

1. बहुत ज्यादा ओवरहीट होने पर गैजेट्स को किसी ठंडी जगह पर रखें, जहां प्रॉपर हवा आती हो।
2. लैपटॉप के ओवरहीट होने पर कुछ टाइम उसे उल्टा करके रखें क्योंकि लैपटॉप के पीछे एक जाली होती है, जो वेंटिलेशन का काम करती है।
3. चार्जिंग के टाइम फोन का यूज न करें।
4. फोन को 100 परसेंट चार्ज करने से बचें और ओवरनाइट चार्जिंग पर तो बिल्कुल न लगाएं।
5. फोन को उसके ओरिजिनल चार्जर से ही चार्ज करें और लोकल बैटरी का यूज न करें।
6. फोन की ब्राइटनेस लो रखें, डायरेक्ट सनलाइट से प्रोटेक्ट करें।
7. देर तक गेमिंग करने से बचें और अगर फोन ओवरहीट कर रहा है तो उसे अपनी बॉडी से दूर रखें।

जोधपुर। गर्मी के मौसम में आपके इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स के ओवरहीट होने का रिस्क बढ़ जाता है। कई डिवाइसेस इसका अलर्ट भी देती हैं। अगर आप अपने गैजेट्स को हीट से प्रोटेक्ट नहीं करेंगे तो वे खुद तो डैमेज होंगे ही, साथ ही ब्लास्ट होने पर आपको भी नुकसान पहुंचा सकते हैं। क्या होती हैं गैजेट्स में ओवरहीटिंग की वजहें, कैसे करें उन्हें प्रोटेक्ट, क्या हैं ओवरहीटिंग की वजहें? संडे रिपोर्टर ने विशेषज्ञों से बात की तो उन्होंने बताया कि इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स का ओवरहीट होना कोई बड़ी बात नहीं है। ज्यादा यूज होने पर कभी-कभी गैजेट्स ओवरहीट हो जाते हैं, लेकिन गर्मी के मौसम में ये प्रॉब्लम ज्यादा बढ़ जाती है। ओवरहीट होने पर फोन, ईयरपॉड्स, ईयरफोन जैसे गैजेट्स के फटने या फिर डैमेज का होने का खतरा रहता है।

SUNDAY रिपोर्टर

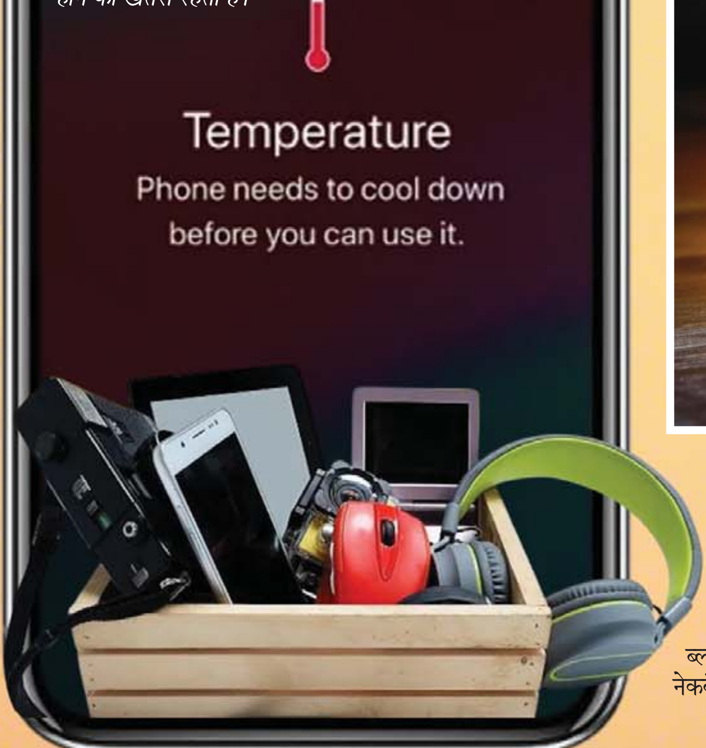

ये बैटरीज हैं बेस्ट

आज के टाइम में ज्यादातर स्मार्टफोन्स और लैपटॉप्स में लीथियम आयन बैटरी का यूज किया जा रहा है। जबकि इसी का थोड़ा सा एडवांस वर्जन है लीथियम आयरन फॉस्फेट बैटरियां, जिनका यूज ज्यादातर इलेक्ट्रॉनिक व्हीकल्स और सोलर सिस्टम्स में किया जाता है, क्योंकि ये ज्यादा सेफ और लॉन्ग लास्टिंग होती हैं और जल्दी हीट भी नहीं करती हैं। ऐसे में, नेक्स्ट टाइम गैजेट्स खरीदते टाइम बैटरी पर जरूर ध्यान दें।

नेकबैंड और ईयरपॉड्स का चार्जर अलग

आज के टाइम में नेकबैंड और ईयरपॉड्स का यूज तो सभी करते हैं। ज्यादातर लोग फोन के चार्जर से ही इन्हें भी चार्ज करते हैं जबकि नेकबैंड और ईयरपॉड्स का चार्जर अलग होता है क्योंकि इनमें एक निश्चित लेवल तक ही पावर जानी चाहिए, तभी इनकी लाइफ लंबी होती है। लोग इस पर ध्यान नहीं देते, जिसकी वजह से ईयरपॉड्स और नेकबैंड ओवरहीट करके डैमेज होते हैं तो कभी फट जाते हैं।

कई बार फट चुके फोन और नेकबैंड

केस-1: महामंदिर निवासी मोन्टी ने बताया कि 10 दिन पहले ही मैंने अपना स्मार्टफोन चार्जिंग पर लगाकर छोड़ दिया था, जो थोड़ी देर बाद अचानक फट गया। फोन दूर था तो किसी को हानि नहीं पहुंची, लेकिन फोन पूरी तरह जल गया।

केस-2: कुछ महीने पहले शास्त्री नगर निवासी 27 वर्षीय युवक आशीष के नेकबैंड में ब्लास्ट हो गया था, जिसकी वजह से उसकी मौत हो गई थी। उस टाइम आशीष छत पर धूप में नेकबैंड लगाकर किसी से बात कर रहा था।

अब QR Code के जरिए तेजी से हो रहे बिजनेस टारगेटेड स्कैम

साइबर क्राइम के मामले बीते कुछ सालों में तेजी से बढ़ रहे हैं। और ऐसे में हैकर्स साइबर क्राइम से जुड़े डिफरेंट टेक्निक्स को लगातार सामने ला रहे हैं। अब हैकर्स साइबर क्राइम के लिए कंडीशनल क्यूआर कोड रुटिंग अटैक का इस्तेमाल कर रहे हैं, जो अलग-अलग बिजनेस को टारगेट करता है...

जोधपुर। एडवांस टेक्नोलॉजी के साथ हैकर्स भी लोगों को ठगने के लिए एडवांस टेक्निक की मदद ले रहे हैं। एसे में चेक पॉइंट की रिपोर्ट से पता लगा है कि हैकर्स ने एक न्यू क्यूआर कोड फिशिंग स्ट्रेटेजी को डेवलप किया है। जिसमें क्यूआर कोड रुटिंग हमले हर आॅर्गेनाइजेशन के लिए स्पेसिफिक कस्टम टेम्पलेट्स का यूज करते हैं, जिससे फिशिंग प्रैक्टिस पर लोगों को ट्रस्ट करना आसान हो जाता है। रिपोर्ट के मुताबिक, पिछले 14 दिनों में लगभग 1100 लोगों को इस तरह की 2,000 से अधिक ईमेल भेजी गई हैं।

क्यूआर कोड स्कैम फिशिंग: क्यूआर कोड स्कैम फिशिंग एक एसा तरीका है, जिसमें लोगों को क्यू आर ईमेल के द्वारा भेजा जाता है। जिसके बाद उन्हें बताया जाता है कि आपके खाते का वेरिफिकेशन जल्द ही खत्म हो रहा है और इससे बचने के लिए दोबारा वेरिफिकेशन करना जरुरी है। इसमें वैलिड

कंपनी अपना लोगो इस्तेमाल करती है, जिससे लोग आसानी से इस पर भरोसा कर लेते है। जैसे ही यूजर्स क्यूआर कोड को स्कैन करते हैं तो उन्हें क्रेडेंशियल हार्वेस्टिंग साइट पर गाइड किया जाता है जिसका स्कैमर्स लाभ उठाते हैं।

खुद को सुरक्षित कैसे रखें

1. इसके लिए यूजर्स को एसी ईमेल से खुद को सावधान रखना चाहिए अगर सामने वाला इंस्टेंट रिस्पांड करने का प्रेशर करें, तो एलर्ट हो जाएं।
2. इस तरह के क्यूआर कोड को स्कैन करने से बचना चाहिए।
3. ईमेल एड्रेस की कन्फर्मेशन करना और टाइपो या ग्रामर एरर की जांच करना आपको फिशिंग प्रयास की पहचान करने में मदद करता है।
4. जैसे-जैसे क्यूआर कोड फिशिंग की स्ट्रेटेजी डेवलप होती है ये और भी ज्यादा पर्सनलाइज्ड होती जाती है। बिजनेसेस को इस स्कैम से और भी ज्यादा अलर्ट रहने की जरूरत है।

जोधपुर। विधानसभा से पारित विधेयकों को लेकर राज्यपाल और राष्ट्रपति के लिए समय सीमा तय करने के सुप्रीम कोर्ट के फैसले पर केंद्र सरकार के बाद अब राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने भी सवाल किए हैं। राष्ट्रपति ने सुप्रीम कोर्ट को 14 सवाल भेजकर राय मांगी है। हालांकि, राष्ट्रपति ने जिन सवालों पर राय मांगी है, उनमें सुप्रीम कोर्ट के फैसले का जिक्र नहीं किया है, लेकिन सभी सवाल फैसले के इर्द गिर्द ही हैं। दरअसल, यह पूरा मामला तमिलनाडु से जुड़ा हुआ है। वहां के राज्यपाल आरएन कवि के खिलाफ तमिलनाडु सरकार ने सुप्रीम कोर्ट में एक याचिका दायर करके हस्तक्षेप की मांग की थी। याचिका में राज्य सरकार ने राज्यपाल पर जरूरी विधेयकों को लटकाने का आरोप लगाया था। मामले की सुनवाई करते हुए जस्टिस जेबी पादीर्वाला और आर महादेवन की पीठ ने राज्यपाल द्वारा विधेयकों को लंबे समय तक रोके जाने के मामले में ऐतिहासिक फैसला सुना दिया। साथ ही सुप्रीम कोर्ट ने राज्यपाल और राष्ट्रपति द्वारा विधेयकों पर मंजूरी देने/अस्वीकृति करने/पुनर्विचार के लिए भेजने की समय सीमा भी तय कर दी। सुप्रीम कोर्ट के इस फैसले पर जल्दी ही बहस छिड़ गई। कानूनी के जानकारों ने कहा कि जब संविधान में राष्ट्रपति के लिए समय सीमा तय नहीं है तो क्या सुप्रीम कोर्ट न्यायिक आदेश के जरिये समय सीमा तय कैसे कर सकता है। अब इसी पर राष्ट्रपति ने सवाल भेजकर राय मांगी है। आइए आपको बताते हैं कि आखिर यह पूरा मामला क्या है, सुप्रीम कोर्ट का वो कौन-सा फैसला है, जिस पर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने सुप्रीम कोर्ट 14 सवाल क्यों पूछे हैं, कौन-से 14 सवाल पूछे हैं और क्या राष्ट्रपति की ओर से सवालों पर मांगी गई राय देने के लिए सुप्रीम कोर्ट बाध्य है?

क्या राष्ट्रपति या राज्यपाल के लिए कोई समय-सीमा तय कर सकता सुप्रीम कोर्ट; क्या कहता है संविधान?

राष्ट्रपति ने किन 14 सवालों पर मांगी एससी से राय?

- जब राज्यपाल के पास अनुच्छेद 200 के तहत कोई विधेयक आता है तो उनके पास क्या-क्या संवैधानिक विकल्प होते हैं?
- क्या राज्यपाल विधेयक पर संविधान के तहत मिले विकल्पों का उपयोग करते समय कैबिनेट द्वारा दी गई सलाह और मदद के लिए बाध्य हैं?
- क्या राज्यपाल द्वारा अनुच्छेद 200 के तहत संवैधानिक विवेक का प्रयोग न्यायोचित है?
- क्या अनुच्छेद 361 राज्यपाल के फैसलों पर न्यायिक समीक्षा पर पूरी तरह पाबंदी लगा सकता है?
- जब संविधान में राज्यपाल लिए अनुच्छेद 200 की शक्तियों के इस्तेमाल को लेकर समय सीमा और तरीके तय नहीं है तो क्या कोर्ट इसे तय कर सकता है?
- क्या राष्ट्रपति के फैसले को अदालत में चुनौती दी जा सकती है?
- जब संविधान में राष्ट्रपति के लिए अनुच्छेद 201 में कार्य करने के लिए प्रक्रिया और समय सीमा तय नहीं है तो क्या अदालत समय सीमा तय कर सकती है?
- क्या राष्ट्रपति को संविधान के अनुच्छेद 143 के तहत सुप्रीम कोर्ट से राय लेना अनिवार्य है?
- क्या राष्ट्रपति और राज्यपाल के फैसलों पर कानून लागू होने से पहले अदालत सुनवाई कर सकती है?
- क्या सुप्रीम कोर्ट अनुच्छेद 142 का प्रयोग कर राष्ट्रपति या राज्यपाल के फैसले को बदल सकता है?
- क्या राज्य विधानसभा में पारित कानून, अनुच्छेद 200 के तहत राज्यपाल की स्वीकृति के बिना लागू किया जा सकता है?
- क्या संविधान की व्याख्या से जुड़े मामलों को सुप्रीम कोर्ट की पांच जजों की बेंच को भेजना अनिवार्य है?
- क्या सुप्रीम कोर्ट ऐसे निर्देश /आदेश दे सकता है, जो संविधान या वर्तमान कानून से मेल न खाता हो?
- क्या केंद्र और राज्य सरकार के बीच विवाद सिर्फ सुप्रीम कोर्ट ही सुलझा सकता है?

क्या राष्ट्रपति मांग सकती राय?

हां, संविधान के अनुच्छेद 143 के तहत किसी तथ्य या कानूनी मामले पर राष्ट्रपति लोकहित में सुप्रीम कोर्ट की राय ले सकते हैं। इसके अलावा, केंद्र सरकार और राज्य सरकारों से जुड़े विवादों की सुनवाई के लिए अनुच्छेद 131 में सुप्रीम कोर्ट के पास मूल क्षेत्राधिकार है। इन मामलों में भी अनुच्छेद 143 (2) के तहत सुप्रीम कोर्ट की राय ली जा सकती है।

क्या सुप्रीम कोर्ट सलाह देने के लिए बाध्य है?

नहीं, राष्ट्रपति द्वारा 14 सवाल भेजकर मांगी गई राय देने के लिए सुप्रीम कोर्ट बाध्य नहीं है। यह पहली बार नहीं है, इससे पहले भी कई दफा सुप्रीम कोर्ट से राग मांगी गई।

- **राम मंदिर विवाद:** सुप्रीम कोर्ट ने राम मंदिर विवाद पर नरसिम्हा राव सरकार के संदर्भ कहा था- ऐतिहासिक और पौराणिक तथ्यों के मसलों में राय देना अनुच्छेद 143 के दायरे में नहीं आता है।
- **कावेरी जल विवाद:** साल 1993 में कावेरी जल विवाद पर भी सुप्रीम कोर्ट ने राय देने से इनकार कर दिया था।
- **गुजरात चुनाव:** साल 2002 में गुजरात चुनावों के मामले में सुप्रीम कोर्ट ने कहा था' अपील या पुनर्विचार याचिका की बजाय रेफरेंस भेजने का विकल्प गलत है।

क्या सुप्रीम कोर्ट की राय मानना राष्ट्रपति के लिए जरूरी है?

संविधान के प्रावधान और पिछले कई फैसलों से यह स्पष्ट है कि अनुच्छेद 143 के तहत सुप्रीम कोर्ट की राय मानना राष्ट्रपति और केंद्र सरकार के लिए बाध्यकारी नहीं है।

आखिर सुप्रीम कोर्ट ने क्यों तय की समय सीमा?

सबसे पहले ये जानना जरूरी है कि इस मामले की शुरूआत कहां से हुई। दरअसल, तमिलनाडु सरकार ने साल 2023 सुप्रीम कोर्ट में एक मामला उठाया गया था, जिसमें कहा गया था कि 2020 के एक विधेयक समेत 12 विधेयक राज्यपाल के पास लंबित हैं। तमिलनाडु के राज्यपाल आरएन रवि ने 10 अहम विधेयकों को लंबे समय तक मंजूरी नहीं दी, ना विधेयकों को खारिज किया और न ही राष्ट्रपति को भेजे। राज्य सरकार ने 18 नवंबर, 2023 को अनुच्छेद 200 के तहत उन विधेयकों को दोबारा विधानसभा में पारित कराया। फिर राज्यपाल के पास भेजे। राज्यपाल ने 28 नवंबर, 2023 को उन विधेयकों को अनुच्छेद 201 के तहत राष्ट्रपति के पास विचारार्थ भेज दिया। इसके बाद तमिलनाडु सरकार ने सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाया। राज्यपाल की भूमिका पर सवाल उठाए और कोर्ट से हस्तक्षेप की मांग की। कहा, राज्यपाल संवैधानिक कर्तव्यों का पालन नहीं कर रहे हैं। विधायी प्रक्रिया में जानबूझकर बाधा डाल रहे हैं। सुप्रीम कोर्ट ने अनुच्छेद 142 के अधिकार का प्रयोग करते हुए इस पर फैसला दिया था- "राज्यपाल द्वारा राष्ट्रपति के पास विचारार्थ भेजे गए विधेयकों पर राष्ट्रपति को तीन महीने के भीतर फैसला लेना होगा। अगर राष्ट्रपति की ओर से तय समय (तीन माह) में फैसला नहीं लिया गया तो इसका कारण रिकॉर्ड किया जाएगा और संबंधित राज्य सरकार को इस बारे में सूचित किया जाएगा।"

अनुच्छेद 200 और 201 में क्या प्रावधान हैं?

अनुच्छेद 200: राज्यपाल को मिलते हैं 4 विकल्प : विधेयक विधानसभा से पारित होने के बाद राज्यपाल के पास भेजा जाता है तो राज्यपाल के पास चार विकल्प (मंजूरी देना, स्वीकृति देना, पुनर्विचार के लिए विधानसभा भेजना और राष्ट्रपति के पास विचारार्थ के लिए भेजना) होते हैं।

अनुच्छेद 201: राज्यपाल के पास होते हैं दो विकल्प : अगर राज्यपाल ने कोई विधेयक पुनर्विचार के लिए लौटा दिया है और विधानसभा में वो दोबारा पारित हो जाता है तो राज्यपाल को मंजूरी देनी होती है, उसे रोका नहीं जा सकता है। इसके अलावा, राज्यपाल अनुच्छेद 201 के अधिकार का इस्तेमाल करते हुए विधेयक को राष्ट्रपति के विचारार्थ भेज सकते हैं। इसके बाद राष्ट्रपति के पास तीन विकल्प (मंजूरी देना, अस्वीकृति देना और विधानसभा को पुनर्विचार के लिए लौटाना) होते हैं। अगर राष्ट्रपति विधेयक विधानसभा को पुनर्विचार के लिए लौटाने का विकल्प चुनते हैं और विधानसभा में दोबारा पारित हो जाता है, तब भी अंतिम निर्णय लेने का अधिकार राष्ट्रपति के पास ही होता है। बता दें कि अनुच्छेद 201 के तहत राष्ट्रपति के पास असीमित समय होता है। इसके चलते कुछ विधेयक सालों तक लंबित रह सकते हैं, जिससे राज्य की विधायी प्रक्रिया बाधित होती है।

सुप्रीम कोर्ट ने किस अधिकार के तहत बनाया नियम?

भारतीय संविधान का अनुच्छेद 142 सुप्रीम कोर्ट को एक विशेषाधिकार देता है, जिससे वह विशेष मामलों में कानून की सीमा से परे जाकर पूर्ण न्याय कर सके। अनुच्छेद 142 के तहत सुप्रीम कोर्ट कोई भी आदेश अथवा निर्देश दे सकता है। इस आदेश/निर्देश को लागू करने के लिए केंद्र सरकार, राज्य सरकारें और अन्य अधिकारी सभी जरूरी कदम उठाने के लिए बाध्य होते हैं। सुप्रीम कोर्ट अनुच्छेद 142 के तहत मिले विशेषाधिकार का इस्तेमाल तब करता है, जब सामान्य कानून से न्याय नहीं मिल पा रहा हो या फिर कोई रास्ता नजर नहीं आ रहा हो। तब कोर्ट अपना फैसला इस तरह देते है कि किसी भी पक्ष के साथ अन्याय न हो।

खाली पेट चाय और बिस्किट खाने से बढ़ता इंफ्लेमेशन

आज ही ये आदत छोड़ें, अपनाएं 4 हेल्दी ऑप्शन, पाचन रहेगा दुरुस्त

जोधपुर। भारत में चाय के शौकीन लोगों की कमी नहीं है। कई लोगों के दिन की शुरूआत चाय के साथ ही होती है। वे खुद को फ्रेश महसूस करने के लिए चाय पीना जरूरी समझते हैं। अक्सर चाय के साथ बिस्किट, रस्क या कोई हल्का-फुल्का स्नैक्स खाना भी आम बात है। लेकिन रोजाना की यह आदत हेल्थ के लिए नुकसानदायक साबित हो सकती है। चाय के साथ शुगरी या कार्बोहाईड्रेट वाले स्नैक्स का कॉम्बिनेशन ब्लड शुगर लेवल को तेजी से बढ़ा सकता है। साथ ही डाइजेशन सिस्टम पर भी बुरा असर डालता है। अगर आप पहले से ही डायबिटीज या ब्लड शुगर की समस्या से जूझ रहे हैं तो यह आदत आपके लिए और भी ज्यादा खतरनाक हो सकती है। तो चलिए आज जरूरत की खबर में बात करेंगे कि चाय के साथ किन चीजों को खाने से परहेज करना चाहिए। साथ ही जानेंगे कि- कौन सी चीजें ब्लड शुगर लेवल को स्पाइक कर सकती हैं? चाय के साथ स्नैक्स में क्या खाना बेहतर है?

SUNDAY रिपोर्टर

चाय के साथ कौन-कौन सी चीजें खाने से बचना चाहिए?

कई लोग सुबह चाय के साथ ब्रेड, बिस्किट, रस्क, पापड़ी या टी-केक जैसे हल्के स्नैक्स लेना पसंद करते हैं। ये चीजें भले ही सामान्य और हल्की लगती हों, लेकिन ये सेहत के लिए नुकसानदायक हो सकती हैं। खासकर जब इन्हें खाली पेट या चाय (जिसमें शुगर हो) के साथ लिया जाए। ऐसा करने से ब्लड शुगर तेजी से बढ़ सकता है। दरअसल, इन फूड्स का ग्लाइसेमिक इंडेक्स और ग्लाइसेमिक लोड ज्यादा होता है। इससे दिन भर थकान, कमजोरी या शुगर लेवल में इनबैलेंस हो सकता है। नीचे दिए ग्राफिक से इसे समझिए-

चाय के साथ ये स्नैक्स बढ़ा सकते हैं ब्लड शुगर

ब्रेड (सफेद)
- GI: 70-100 (हाई)
- GL: हाई
- ब्लड शुगर लेवल पर असर: 30-50% तक बढ़ोतरी हो सकती है।
- नुकसान: ब्लड शुगर तुरंत और तेजी से बढ़ता है।

बिस्किट
- GI: 65-70 (मीडियम-हाई)
- GL: मीडियम-हाई
- ब्लड शुगर लेवल पर असर: 20-40% तक बढ़ोतरी हो सकती है।
- नुकसान: रिफाइंड, मैदा, शक्कर और ट्रांस फैट से भरपूर है।

टोस्ट/रस्क
- GI: 50-70 (हाई)
- GL: हाई
- ब्लड शुगर लेवल पर असर: 30-50% तक बढ़ोतरी हो सकती है।
- नुकसान: कार्ब्स और शुगर से भरपूर है।

टी-केक
- GI: 60-75 (मीडियम-हाई)
- GL: मीडियम-हाई
- ब्लड शुगर लेवल पर असर: 25-45% तक बढ़ोतरी हो सकती है।
- नुकसान: शक्कर, मैदा और फैट से भरपूर है।

पापड़ी
- GI: 65-70 (मीडियम-हाई)
- GL: मीडियम हाई
- ब्लड शुगर लेवल पर असर: 20-40% तक बढ़ोतरी हो सकती है।
- नुकसान: डीप फ्राइड और रिफाइंड मैदा से बना है।

फैन (पफी स्नैक)
- GI: 70+ (हाई)
- GL: हाई
- ब्लड शुगर लेवल पर असर: 30-50% तक बढ़ोतरी हो सकती है।
- नुकसान: ट्रांस फैट, मैदा और रिफाइंड शुगर से भरपूर है।

नोट: GI का अर्थ ग्लाइसेमिक इंडेक्स और GL का अर्थ ग्लाइसेमिक लोड होता है।

सोर्स: डॉ. अमृता मिश्रा, सीनियर डाइटीशियन, नई दिल्ली

चाय के साथ ये चीजें बिगाड़ सकती हैं हाजमा

ब्रेड (सफेद)
- क्यों नुकसानदायक है: रिफाइंड मैदा, पाम ऑयल, शुगर, जीरो फाइबर।
- डाइजेशन पर असर: गैस, अपच और ब्लोटिंग की समस्या हो सकती है।

बिस्किट
- क्यों नुकसानदायक है: मैदा, शक्कर और ट्रांस फैट।
- डाइजेशन पर असर: एसिडिटी और कब्ज की शिकायत हो सकती है।

टोस्ट/रस्क
- क्यों नुकसानदायक है: डबल बेकिंग से होता ड्राई। पाचन एंजाइम्स कमजोर पड़ते हैं।
- डाइजेशन पर असर: पेट भारी होना, गैस और डकार की समस्या।

नमकीन/ पापड़ी
- क्यों नुकसानदायक है: डीप फ्राइड, स्पाइसी, कार्ब और पाम ऑयल।
- डाइजेशन पर असर: खट्टी डकार, पेट में जलन और अपच की समस्या हो सकती है।

फैन (पफी स्नैक)
- क्यों नुकसानदायक है: ट्रांस फैट, शुगर और मैदा से भरपूर।
- डाइजेशन पर असर: कब्ज, सूजन और लूज मोशन का कारण बन सकती है।

टी-केक
- क्यों नुकसानदायक है: मैदा, अंडा, शक्कर और बेकिंग एजेंट्स।
- डाइजेशन पर असर: पेट में भारीपन, गैस और पाचन तंत्र धीमा हो सकता है।

सोर्स: डॉ. अमृता मिश्रा, सीनियर डाइटीशियन, नई दिल्ली

सुबह बेड टी के साथ खाएं ये चीजें ब्लड शुगर रहेगा बैलेंस्ड

मखाना
- GI: 22-35 (लो)
- GL: 3-5 (लो)
- ब्लड शुगर लेवल पर असर: ब्लड शुगर पर बहुत कम असर होता है।
- फायदा: हाई प्रोटीन और कम कार्ब्स, जो ब्लड शुगर लेवल को स्थिर रखता है।

भुने चने
- GI: 28 (लो)
- GL: 5-7 (लो)
- ब्लड शुगर लेवल पर असर: धीरे-धीरे शुगर रिलीज होता है।
- फायदा: फाइबर और प्रोटीन से भरपूर, डायबिटीज के लिए फायदेमंद।

नट्स (बादाम, अखरोट)
- GI: 15-20 (लो)
- GL: 1-3 (लो)
- ब्लड शुगर लेवल पर असर: ब्लड शुगर पर बहुत कम असर, शुगर को कंट्रोल करता है।
- फायदा: हेल्दी फैट्स और प्रोटीन से भरपूर, दिल और मस्तिष्क के लिए फायदेमंद।

ओट्स (हॉट)
- GI: 55 (लो)
- GL: 7-10 (लो)
- ब्लड शुगर लेवल पर असर: ब्लड शुगर धीरे-धीरे बढ़ता है।
- फायदा: फाइबर का अच्छा सोर्स, जिससे पेट भरता है, शुगर स्थिर रहता है।

नोट: GI का अर्थ ग्लाइसेमिक इंडेक्स और GL का अर्थ ग्लाइसेमिक लोड होता है।

सोर्स: डॉ. अमृता मिश्रा, सीनियर डाइटीशियन, नई दिल्ली

चाय के साथ शुगर और कार्बोहाइड्रेट वाले स्नैक्स खाने से पाचन तंत्र पर असर

बिस्किट, रस्क या पापड़ी जैसी चीजों में रिफाइंड कार्बोहाईड्रेट और शुगर होती है, जिन्हें पचने में वक्त लगता है। जब इन्हें खाली पेट चाय के साथ लिया जाता है तो ये जल्दी पचकर ब्लड में शुगर छोड़ती हैं, जिससे डाइजेशन सिस्टम प्रभावित हो सकता है। इनमें मौजूद ट्रांस फैट और शुगर पाचन को धीमा कर देते हैं। इससे पेट में भारीपन, गैस और एसिडिटी जैसी दिक्कतें हो सकती हैं। इसके अलावा शुगर और रिफाइंड फूड पाचन तंत्र में सूजन और जलन भी पैदा कर सकते हैं। लंबे समय तक इसका सेवन करने से गैस्ट्राइटिस या अल्सर जैसी बीमारियों का खतरा बढ़ सकता है।

चाय के साथ सुबह कौन-कौन सी चीजें खाना बेहतर

सीनियर डाइटीशियन डॉ. अमृता बताती हैं कि सुबह चाय के साथ ऐसी हेल्दी चीजें खाएं, जो आसानी से पच जाए और आपके पाचन तंत्र को सही रखें। इससे आपका दिन अच्छा शुरू होगा और सेहत भी बनी रहेगी। कुछ अच्छे विकल्प ये हो सकते हैं, जैसेकि मूंगफली, बादाम, ओट्स या घर का बना नमकीन नाश्ता जैसे मूंग दाल चिल्ला या सब्जियों वाला पराठा। ऐसे खाने से आपको एनर्जी भी मिलेगी और ब्लड शुगर भी कंट्रोल में रहेगा।

अगर आप बेड टी के आदी हैं तो किन बातों का ध्यान रखें?

अगर आप बेड टी के आदी हैं, तो कुछ खास बातों का ध्यान रखना जरूरी है ताकि यह आदत आपकी सेहत पर बुरा असर न डाले।

1. खाली पेट चाय न पिएं: चाय को खाली पेट पीने से एसिडिटी और गैस जैसी समस्याएं हो सकती हैं। चाय में कैफीन होता है, जो पेट में एसिड पैदा कर सकता है। इसलिए चाय पीने से पहले हल्का नाश्ता करें या कुछ खा लें।
2. चाय में शक्कर कम रखें: चाय में अधिक शक्कर(चीनी) ब्लड शुगर को बढ़ा सकती है, जिससे दिनभर थकान और कमजोरी हो सकती है। इसलिए, जितना हो सके शक्कर की मात्रा कम रखें या नेचुरल स्वीटनर्स जैसे शहद को चाय में मिलाकर पिएं।
3. हर्बल चाय का विकल्प चुनें: अगर आप चाय के शौकीन हैं तो हर्बल चाय जैसे ग्रीन टी, मिंट टी या अदरक-तुलसी की चाय का सेवन करें। ये पाचन के लिए फायदेमंद होती हैं।
4. चाय के साथ हैवी स्नैक्स से बचें: चाय के साथ बिस्किट, ब्रेड या अन्य ऑयली फूड आइटम्स को खाने से बचें। इनकी बजाय हेल्दी स्नैक्स जैसे नट्स, फल या ओट्स का सेवन करें।
5. चाय की आदत को कम करें: दिन में ज्यादा चाय पीना भी सेहत के लिए सही नहीं है। दिनभर में 2-3 कप से ज्यादा चाय न पिएं, ताकि आपकी नींद, पाचन और सेहत पर बुरा असर न पड़े।

क्या आप

SUNDAY रिपोर्टर

नियमित प्राप्त करना चाहते हैं ?

सामने दिए गए चिह्न को दबाने से आपका सन्देश स्वचलित रूप से हमें पहुंच जाएगा और नियमित **संडे रिपोर्टर** भेजने के लिए आपका मोबाइल नम्बर पंजीकृत हो जाएगा।

यदि आप किसी कारण से चिह्न द्वारा संदेश नहीं भेज पाए तो निम्नलिखित वाट्स ऐप नंबर द्वारा अपना संदेश भेजें...

7239963000 (केवल संदेश हेतु)

(कृपया अपना नाम व शहर का नाम भी लिखें)

मूल्य :

मात्र आपकी मुस्कान

Happy Birthday

Saurabh Shah

19.05.2025

Anita Kothari

20.05.2025

Anchor Ritu Chouhan

20.05.2025

Anubha Mutha

21.05.2025

Manish Salecha

21.05.2025

Nilesh R. Bhansali

21.05.2025

Pooja Bhambani

21.05.2025

Rakshanda Porwal

22.05.2025

Suresh Rathi

22.05.2025

Arpita Kackar

23.05.2025

Bhagwansingh Udawat

23.05.2025

Rajesh Agarwal

23.05.2025

Rekha Kothari

24.05.2025

Sandeep Sen

24.05.2025

Usha Gupta

25.05.2025

Please send your or your relative s
Birthday & Marriage Anniversary Photos
for our upcoming edition
FREE
Contact Number: 9829005820
E-mail: sundayreporter123@gmail.com

एक बैंच बदले विद्यार्थी का बचपन

रोटरी क्लब ऑफ जोधपुर पद्मिनी ने 11 सरकारी स्कूलों में 1400 बच्चों को बैठने के लिये भेंट किए 700 फर्नीचर सेट

जोधपुर। रोटरी क्लब ऑफ जोधपुर पद्मिनी ने 11 सरकारी स्कूलों में 1400 बच्चों को बैठने के लिये 700 फर्नीचर सेट भेंट किए। रोटरी क्लब ऑफ जोधपुर पद्मिनी की अध्यक्ष पूर्वा मूंदड़ा व सचिव रीना राठी ने बताया कि रोटरी क्लब ऑफ जोधपुर पद्मिनी ने सत्र 2024-25 में11 सरकारी स्कूल को 700 बेंच सेट उत्तम क्वालिटी का फर्नीचर सेट 1400 बच्चों को बैठने के लिये भेंट किए। बिल्डर एवं कंस्ट्रक्शन कंपनी विष्णु प्रकाश आर पुंगलिया ने अपने सीएसआर फंड से 450 सेट टेबल व बेंच के उपलब्ध कराएं हैं। 30 सेट आरपी मुंदड़ा की स्मृति में , 25 सेट मिश्का सेठिया की स्मृति मे, 15 सेट रोटरी क्लब ऑफ इनफिनिटी तथा 10 सेट उम्मेद राज सांड परिवार और10 सेट रीना राठी ने भेंट किए।

700 फर्नीचर सेट कि कीमत 18 लाख 20 हजार रुपये: राजश्री

रोटरी क्लब जोधपुर पद्मिनी की सीनियर सदस्य राजश्री चौधरी ने बताया कि 700 फर्नीचर सेट कि कीमत 18 लाख 20 हजार रुपये है व सरकारी विद्यालयों में फर्नीचर की जहां व्यवस्था नहीं है वहां पर रोटरी क्लब ऑफ जोधपुर पद्मिनी के माध्यम से फर्नीचर उपलब्ध करने का पूरा प्रयास करेगा। असिस्टेंट गवर्नर वैशाली सांड ने कहा कि आपके साथ और आपकी मदद से हम इन बच्चों के भविष्य को महफूज और सुनहरा बना सकते है। आएं हम सुनिश्चित करे कि भारत का हर बच्चा जब भी पढ़ाई करे, वो बेंच पर बैठकर पढ़ाई करे। ये तभी संभव होगा जब हमारे साथ-साथ आप सब की भागीदारी होगी। सही तरीके से पढ़ेंगे तभी तो यह आगे बढ़ेंगे।

अब तक 1 करोड़ 92 लाख कीमत के भेंट किए फर्नीचर

सरकारी विद्यालयों में फर्नीचर की जहां व्यवस्था नहीं है वहां पर रोटरी क्लब पद्मिनी के माध्यम से फर्नीचर उपलब्ध करवाया जाएगा। पद्मिनी क्लब की चार्टर प्रसिडेंट सुषमा सेठिया ने बताया कि 'एक बेंच बदले बच्चों का बचपन' के उद्देश्य से उनके उज्ज्वल भविष्य को संवारने के लिए एक बेंच बच्चों के लिए अनिवार्य हैं । उनकी ये पहल बच्चों को बैठने कि सुविधा प्रदान कर रही है। संदीपा संचेती ने बताया कि आज तक रोटरी पद्मिनी ने 53 सरकारी स्कूल में 4200 बेंच सेट दिये हैं, जिससे 8400 बच्चों को लाभ मिला है। अब तक कुल फर्नीचर कि लागत 1 करोड़ 92 लाख हुई है। आरसीसी अध्यक्ष राजूराम कुकणा, राजेंद्र छबरवाल व अशोक थोरी के दिशा निर्देशन में सभी विद्यालयों को फर्नीचर पहुंचा दिया गया है।

जम्मूतवी-साबरमती एक्सप्रेस ट्रेन का सिद्धपुर स्टेशन पर नहीं होगा ठहराव

जोधपुर। पश्चिम रेलवे के महेसाना-पालनपुर रेल खंड पर दोहरीकरण परियोजना के तहत तकनीकी कार्य प्रगति पर होने के कारण सिद्धपुर रेलवे स्टेशन पर दो ट्रेनों का ठहराव प्रभावित रहेगा। इसके परिणामस्वरूप ट्रेनें तीन दिन सिद्धपुर ठहराव नही करेगी। जोधपुर मंडल के डीआरएम अनुराग त्रिपाठी ने बताया कि सिद्धपुर रेलवे स्टेशन पर लाइन नंबर एक पर तकनीकी कार्य के कारण ट्रेन 19224 जम्मूतवी-साबरमती एक्सप्रेस जो 24 से 26 मई तक जम्मूतवी से प्रस्थान करेगी वह सिद्धपुर रेलवे स्टेशन पर ठहराव नहीं करेगी। इसी तरह, ट्रेन 14821 जोधपुर-साबरमती एक्सप्रेस जो 25 से 27 मई तक जोधपुर से प्रस्थान करेगी वह सिद्धपुर रेलवे स्टेशन पर ठहराव नही करेगी।

जैन दीक्षार्थियों का वरघोड़ा निकाला

जोधपुर। श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघीय श्रावक संस्थान की ओर से मुमुक्षु खुशी बोकाडिया जैन और अंशु चौधरी के दीक्षा महोत्सव के तहत शनिवार को वरघोड़ा निकाला गया।

संस्थान के अध्यक्ष सुरेश पारख व सचिव सुनिल चौरडिया ने बताया कि पच्चीस मई को दीक्षा का आयोजन सरदारपुरा स्थित ओसवाल कम्युनिटी हॉल में किया जाएगा। दीक्षा के निमित पांच दिवसीय कार्यक्रम बुधवार से सरदारपुरा स्थित महावीर भवन एवं ओसवाल कम्यूनिटी सेंटर में चल रहे है। इसी के तहत शनिवार को दीक्षार्थी बहनों का वरघोडा निकाला गया। इसके बाद दीक्षार्थी बहनों का अभिनंदन किया गया। रविवार को

वीर थाल प्रात 7.15 बजे, उसके पश्चात शोभायात्रा महावीर भवन नेहरू पार्क से रवाना होकर ओसवाल कम्युनिटी सेन्टर में धर्म सभा में परिवर्तित होकर प्रवचन एवं दीक्षा पाठ का आयोजन होगा। उन्होंने बताया कि पांच दिवसीय दीक्षा के कार्यक्रमों में डॉ. संदेश मुनि महाराज, बाल मुनि महाराज, कथन मुनि महाराज, साध्वी डॉ. चंद्रप्रभा महाराज, साध्वी डॉ. सुलोचना महाराज, साध्वी डॉ. सुलक्षणा महाराज, साध्वी सुदर्शना महाराज, साध्वी मणिप्रभा महाराज, साध्वी विनीतरूप प्रज्ञा महाराज, साध्वी लब्धिप्रभा महाराज, साध्वी निधिश्री महाराज, साध्वी मुदितप्रभा महाराज आदि का सानिध्य मिल रहा है।

जोधपुर की चांदी नक्काशी को जयपुर में मिला गौरव

दईजर के सुरेंद्र फुलवारिया ने मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा को भेंट की नक्काशीदार कलात्मक चांदी की जूती, संत आत्माराम लक्ष्य पर बनने वाले पैनोरमा में होगी प्रदर्शित

जोधपुर। राजधानी जयपुर में आयोजित अखिल भारतीय रैगर महासभा के प्रतिनिधि सम्मेलन के अवसर पर जोधपुर की पारंपरिक चांदी नक्काशी कला को राष्ट्रीय स्तर पर विशेष पहचान मिली। जोधपुर के दईजर गांव के प्रसिद्ध कारीगर स्व. मेघाराम फुलवारिया के पुश्तैनी शिल्प को उनके पुत्र सुरेंद्र फुलवारिया ने मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा को चांदी की नक्काशीदार कलात्मक जूती भेंट कर गौरवान्वित किया।

रैगर समाज की सांस्कृतिक विरासत

यह जूती केवल एक हस्तशिल्प नहीं, बल्कि रैगर समाज की सांस्कृतिक विरासत, पारंपरिक हुनर और सामाजिक स्वाभिमान की प्रतीक रही है। मंच से ही मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने घोषणा की कि यह कलात्मक जूती राजस्थान सरकार की ओर से निर्मित होने वाले स्वामी आत्माराम लक्ष्य पैनोरमा में प्रदर्शित की जाएगी। इसके लिए उन्होंने अखिल भारतीय रैगर महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष बीएल नवल एवं प्रतिनिधियों को इसकी औपचारिक जिम्मेदारी सौंपी। इस ऐतिहासिक अवसर पर महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष बीएल नवल सहित अनेक राष्ट्रीय एवं प्रांतीय पदाधिकारी मंच पर उपस्थित रहे।

आत्मबल का प्रेरणास्पद प्रतीक

सुरेंद्र फुलवारिया ने यह विशिष्ट कृति अपने निजी प्रयासों, श्रम और समाज के प्रति समर्पण भाव से तैयार की। यह न केवल उनकी कला का उत्कृष्ट उदाहरण रही, बल्कि रैगर समाज की रचनात्मकता और आत्मबल का प्रेरणास्पद प्रतीक भी बनी। मुख्यमंत्री को जब यह भेंट सौंपी गई, तो सभा में उपस्थित सैकड़ों प्रतिनिधियों ने तालियों की गड़गड़ाहट के साथ इस योगदान का हर्षपूर्वक स्वागत किया और जोधपुर की कला प्रतिभा को भरपूर सराहा।

जेएनवीयू में पेंशनर्स का धरना जारी

जोधपुर। जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय में वरिष्ठ नागरिक पेंशनर्स का क्रमिक धरना जारी है। लंबित पेंशन भुगतान को लेकर चल रहे इस आंदोलन में आज बड़ी संख्या में महिला पेंशनर्स, सेवानिवृत्त महिला प्रोफेसर, शिक्षक, कर्मचारी और पारिवारिक पेंशनधारक महिलाएं शामिल हुईं। धरना स्थल पर पहुंची पूर्व कुलपति प्रो. एल.एस. राठौड़ की पत्नी स्नेहलता राठौर ने कहा कि विश्वविद्यालय के विकास में जीवन समर्पित करने वाले वरिष्ठ पेंशनर्स को उपेक्षित नहीं छोड़ा जा सकता। उन्होंने पेंशन भुगतान का स्थायी समाधान और विवि को आर्थिक संकट से उबारने की मांग की। पेंशनर्स सोसाइटी ने राज्य सरकार से विश्वविद्यालय की अनुदान राशि दोगुनी करने, बकाया राशि का शीघ्र भुगतान, एससी-एसटी और महिला छात्राओं की फीस का पुनर्भरण तथा अधिग्रहित भूमि का मुआवजा देने की मांग की है। विश्वविद्यालय के कार्यरत शिक्षक संगठनों और कर्मचारी संघों ने भी आंदोलन को समर्थन देने का निर्णय लिया है, जिससे सरकार पर दबाव बढ़ने की संभावना है। पेंशनर्स सोसाइटी के सचिव डॉ. लोकेंद्र सिंह शक्तावत ने बताया कि यह धरना पूरी तरह शांतिपूर्ण और गांधीवादी तरीके से वैधानिक अधिकारों की रक्षा के लिए किया जा रहा है।

विश्व स्क्रिजोफ्रेनिया दिवस पर जागरूकता का संदेश

मिथकों को तोड़ने की पहल; विशेषज्ञों ने सुनाई मरीजों की कहानियां

जोधपुर। जोधपुर के डॉ. एस.एन. मेडिकल कॉलेज के मानसिक रोग विभाग एवं मथुरादास माथुर चिकित्सालय द्वारा विश्व स्क्रिजोफ्रेनिया दिवस पर विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। मनोविकार केन्द्र के सेमिनार हॉल में आयोजित इस कार्यक्रम में चिकित्सा विशेषज्ञों, विद्यार्थियों और आमजन ने हिस्सा लिया। इस वर्ष के कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य स्क्रिजोफ्रेनिया से जुड़े सामाजिक कलंक को दूर करना और रोगियों की वास्तविक कहानियों को सामने लाना था। 'Rethink the Label: Reclaim the Story' थीम के माध्यम से इस बीमारी से जुड़ी भ्रांतियों को दूर करने का प्रयास किया गया। डॉ. एस.एन. मेडिकल कॉलेज के प्रधानाचार्य एवं नियंत्रक डॉ. बी.एस. जोधा ने कार्यक्रम में कहा-मानसिक स्वास्थ्य शारीरिक स्वास्थ्य जितना ही

महत्वपूर्ण है। मानसिक संतुलन से ही व्यक्ति प्रभावी और सार्थक जीवन जी सकता है। डॉ. जोधा ने बताया कि जोधपुर में न्यूरोसाइंस सेंटर प्रोजेक्ट पर कार्य चल रहा है, जिससे मानसिक रोगियों को एक ही स्थान पर सभी उपचार सुविधाएं उपलब्ध होंगी।

मानसिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता का दिया संदेश: जोधपुर के डॉ. एस.एन. मेडिकल कॉलेज के मानसिक रोग विभाग एवं मथुरादास माथुर चिकित्सालय द्वारा विश्व स्क्रिजोफ्रेनिया दिवस पर विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। मनोविकार केन्द्र के सेमिनार हॉल में आयोजित इस कार्यक्रम में चिकित्सा विशेषज्ञों, विद्यार्थियों और आमजन ने हिस्सा लिया।

स्क्रिजोफ्रेनिया के बारे में विशेषज्ञों की राय: मनोविकार केन्द्र के विभागाध्यक्ष डॉ. संजय गहलोत ने बताया कि स्क्रिजोफ्रेनिया एक ऐसी मानसिक बीमारी है, जो व्यक्ति के सोचने, समझने और व्यवहार करने की क्षमता को प्रभावित करती है। भारत में हर सौ में से एक व्यक्ति इस बीमारी से प्रभावित हो सकता है और वर्तमान में एक करोड़ से अधिक लोग इससे जूझ रहे हैं।

कलेक्टर ने किया जलभराव क्षेत्रों का निरीक्षण

जोधपुर। आगामी मानसून को देखते हुए कलेक्टर गौरव अग्रवाल ने गुरुवार को शहर के लगभग 48 चिह्नित जलभराव क्षेत्रों का सघन निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने जल निकासी की व्यवस्था, नालों की सफाई और मरम्मत कार्यों की मौके पर पहुंचकर समीक्षा की और संबंधित अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान अग्रवाल के साथ नगर निगम आयुक्त सिद्धार्थ पालाचीनामी भी उपस्थित रहे। उन्होंने उम्मेद सागर नहर, आरटीओ नाला, भैरव नाला, खेमे के कुएं से आगे 21 सेक्टर मोड़, रिक्तियां भैंरूजी, पांच बत्ती चौराहा, सिविल लाइंस, चौपासनी रोड, नेहरू पार्क, बिश्नोई धर्मशाला रोड तथा रातानाडा स्थित नालों की स्थिति का भौतिक

अवलोकन किया। अग्रवाल ने सांसी कॉलोनी नाला व एयरपोर्ट के पास निमार्णाधीन नाले की प्रगति की समीक्षा की। कलेक्टर ने काम में तेजी लाने के निर्देश दिए। उन्होंने गौरव पथ के दोनों ओर बहते छोटे नालों, बारहवीं रोड चौराहे से पांच बत्ती सर्किल तक, पाली रोड स्थित नाले, रिक्तियां भैंरूजी से पीली टंकी तक, रेलवे लाइन के समीप खतरनाक पुलिया के पास पुराने नाले और जेडीए क्षेत्र के नालों की सफाई और मरम्मत कार्यों की भी विस्तार से जांच की। निरीक्षण के दौरान सिविल लाइंस क्षेत्र में लैटरल्स (बाहरी जल निकासी मार्ग) खोलने के निर्देश दिए गए ताकि वर्षा जल सुगमता से नालों में प्रवाहित हो सके। जिला कलक्टर ने इस अवसर पर कहा कि प्रमुख नालों के साथ-साथ छोटे नालों की सफाई पर भी विशेष ध्यान दिया जाए ताकि शहरवासी बारिश के दौरान जलभराव की समस्या से परेशान न हों। निरीक्षण के समय नगर निगम के अतिरिक्त मुख्य अभियंता संपत मेघवाल, अधीक्षण अभियंता राहुल गुप्ता सहित अन्य विभागीय अधिकारी व कर्मचारी भी उपस्थित रहे।

संडे रिपोर्टर के लिए स्वत्वाधिकारी, मालिक, प्रकाशक, मुद्रक व प्रधान सम्पादक रीनू जैन, पाल रोड, जोधपुर से मुद्रित तथा ई-123, बेसमेंट सुदर्शन कॉम्पलेक्स, कल्पतरू शॉपिंग सेंटर, रेजिडेंसी रोड, जोधपुर (राज) से प्रकाशित। प्रबंध सम्पादक- अभिषेक जैन, सम्पादकीय प्रभारी- डॉ. सुरेश खटनावलिया (पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेदार), R.N.I. No. RAJHIN/2012/45274, मोबाइल नंबर-07239963000, ईमेल- sundayreporter123@gmail.com

लड़की के पीछे बैठते ही बढ़ जाती है बाइक की स्पीड

जोधपुर। रेंटल राइडर्स डेली ट्रैवलिंग का एक आसान माध्यम हैं. हालांकि प्रोफेशनल राइडर्स के साथ कुछ यंग राइडर्स भी राहद लेते हैं। इनके पास स्पोर्ट्स बाइक होती है और रेंटल राइडर्स के दौरान भी वे हवा से बातें करने लगते हैं। ऐसे में कई बार पीछे बैठी सवारी गिर कर घायल भी हो जाती हैं. इन राइडर्स के किस्से कई हैं, जिनको लेकर गर्ल्स ने अपने एक्सपीरियंस और ओपिनियन शेयर किए. इस स्थिति से गर्ल्स को कैसे बचना है, आइए जानते हैं इस रिपोर्ट में...

SUNDAY रिपोर्टर

ओवर स्पीडिंग बड़ी समस्या

मेरा नाम आदित्या है, मैं जॉब पर्सन हूं और रेंटल बाइक से ट्रैवल करती हूं। रेंटल बाइक में ओवर स्पीडिंग बड़ी समस्या बन चुकी है। कुछ दिन पहले ही मैं बाइक राइड से ऑफिस जा रही थी। राइडर यंग था और जैसे ही रोड पर थोड़ी सी जगह हुई उसने स्पीड तेज कर दी। थोड़ा आगे तिराहे पर एक तरफ से टेंपो आ रहा था। उसने अचानक ब्रेक लगाया, जिससे मुझे तो झटका लगा ही बाइक का आगे वाला हिस्सा भी ऑटो से भिड़ गया।

करते हैं रैश ड्राइविंग

मेरा नाम राखी है। मैं स्टूडेंट हूं। कुछ दिन पहले ही रात नौ बजे मार्केट से घर जाने के लिए कैब बुक की। कैब वाला काफी रैश ड्राइव कर रहा था। जब मैने टोका तो उसने स्पीड और बढ़ा दी और खुद फोन पर बात करने लगा। मैंने रोका तो उसने कैब का बाइल्स लॉक लगा दिया और फिर बात करने लगा। मैंने पुलिस को कॉल कर सिचुएशन बताई। पुलिस वालों ने जब उससे बात की तो बोला कि गलती से लॉक लग गया। गाड़ी तो ठीक ही चला रहा हूं। हालांकि पुलिस ने कंसर्न दिखाया और अगले चौराहे पर गाड़ी वाले को सख्ती से समझाया।

गिरते-गिरते बची हूं

मेरा नाम आरती है। मैं कभी-कभी रेंटल बाइक का यूज करती हूं। स्पोर्ट्स बाइक देखकर मैं राइड चेंज कर लेती हूं। क्योंकि दो महीने पहले मैं बाइक से गिरते-गिरते बची हूं। उस दिन राइडर के पास स्पोर्ट्स बाइक थी। उस पर बैठने में प्रॉब्लम होती है फिर भी मैं बैठ गई। एक जगह रेड लाइट हुई तो ड्राइवर ने अचानक ब्रेक लगाया पर मैंने बैलेंस किया। लेकिन जैसे ही लाइट ग्रीन हुई तो राइडर ने इतनी स्पीड में बाइक मूव की कि मैं पीछे गिरते-गिरते बची। मैंने जब कहा कि आराम से चलाइए तो राइडर बोला कस के बैठिए। मैंने इसकी शिकायत रिलेटेड एप र की।

ये हैं सेफ्टी कंसर्न

- **ओवरस्पीड:** *ओवरस्पीड एक मेजर सेफ्टी इश्यू है। इस पर ध्यान देना जरूरी है। रेंटल राइड लेने वाले यंगस्टर्स काफी स्पीड में ड्राइव करते हैं, अचानक ब्रेक लगने पर बैलेंस बिगड़ने का डर रहता है।*
- **ब्रेकिंग द रुल्स:** *कई बार देखा जाता है कि थोड़ा सा टाइम बचाने के लिए राइडर्स ट्रैफिक रूल्स और रेड लाइट को अनदेखा कर देते हैं। रेड लाइट सिग्नल की अनदेखी आपकी जान पर भी भारी पड़ सकती है।*
- **रूट चेंज:** *कई राइडर्स शॉर्ट कट का बहाना देकर रूट चेंज कर देते हैं। जो कि गर्ल्स की सेफ्टी के लिए खतरा बन सकता है। अगर कभी आपके साथ ऐसा होता है तो चुप रहने की बजाय सवाल करें।*

फोर यू

- *हाईवे पर ओवर स्पीड पर 1033 पर कॉल करें*
- *कोई प्रॉब्लम होने पर 112 व 100 डायल कर सकते हैं*
- *वीमेन हेल्पलाइन 1090 का यूज कर सकती है*

> मुझे लगता है कि जैसे महिलाएं ई-रिक्शा, ऑटो चलाती हैं, वैसे ही महिला राइडर भी होनी चाहिए। इससे गर्ल्स को काफी सहुलियत मिलेगी।
> -प्रिया सिंह

> रेंटल राइडर्स लेने वाले ड्राइवर्स को हायर करने से पहले उनका बैक ग्राउंड और बॉडी लैंग्वेज और बॉडी लैंग्वेज चेक करनी चाहिए। क्योंकि इससे लोगों की सोच और विहेवियर का पता चलता है।
> -सौम्या

> राइडर्स के लिए कंपनी को एक स्पीड फिक्स कर देना चाहिए कि अगर इससे ज्यादा स्पीड में वे ड्राइव करते हैं तो उन्हें पेनाल्टी देनी पड़ेगी या उन पर एक्शन लिया जाएगा।
> -आराध्या

आयुष नर्सेज से जबरन डाटा एंट्री का कार्य करवाया-

...तो अदालत की शरण में जाएगा महासंघ: सैनी

जोधपुर। आयुर्वेद विभाग में रसायन शाला के ऊब्रर सॉफ्टवेयर में केवल नर्सेज से ही डाटा एंट्री करवाने के विभागीय वीसी के जरिये निदेशक द्वारा समस्त डीडी व एडी को दिये गये मौखिक निर्देशों के बाद संपूर्ण आयुष नर्सेज में काफी गहरा असन्तोष झलक रहा है। अखिल राजस्थान राज्य आयुष नर्सेज महासंघ के प्रदेश अध्यक्ष छीतर मल सैनी ने निदेशक आयुर्वेद विभाग अजमेर को पत्र प्रेषित कर उक्त मामले में भारी विरोध दर्ज करवाकर प्रदेश व्यापी आंदोलन की चेतावनी दी है। प्रदेश अध्यक्ष सैनी ने कहा कि नर्सेज का मूल कर्तव्य रोगियों की सेवा व नर्सिंग केयर करना है ना की डाटा ऑपरेटर की कुर्सी पर बैठना। सैनी ने कहा कि डाटा एंट्री ऑपरेटर / सूचना सहायक का पद नर्स/ कम्पाउंडर के पद से नीचे की ग्रेड में आता है , ऐसी स्थिति में विभाग के नर्सेज से गरिमा के विरुद्ध डाटा एंट्री का कार्य करवाना सरासर संविधान का उल्लंघन प्रतीत होता है।

SUNDAY रिपोर्टर

जबरन आदेश नहीं थोप सकता विभाग

प्रदेश अध्यक्ष सैनी ने कहा कि अगर विभाग जबरन नर्सेज से डाटा एंट्री का कार्य करवाता है, तो महासंघ मजबूर होकर अदालत की शरण में जाने के लिये विवश होगा। भारतीय संविधान का अनुच्छेद 21 सभी नागरिकों को जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता का अधिकार प्रदान करता है, यदि किसी व्यक्ति को किसी उच्च पद के कारण निम्न पद पर कार्य करने के लिए मजबूर किया जाता है तो यह उसकी स्वतंत्रता का उल्लंघन हो सकता है। क्योंकि उसे अपने पद के अनुसार कार्य करने की स्वतंत्रता नहीं होगी। यदि कोई व्यक्ति उच्च पद के विरुद्ध निम्न पद का कार्य करने पर मजबूर होता है, तो वह अनुच्छेद 32 के तहत सर्वोच्च न्यायालय या अनुच्छेद 226 के तहत उच्च न्यायालय में जा सकता है।

जोधपुर रेलवे स्टेशन का दूसरा प्रवेश द्वार बंद

जोधपुर। जोधपुर सिटी रेलवे स्टेशन का अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत चल रहे पुनर्विकास कार्यों के चलते राताानाडा की तरफ खुलने वाले द्वितीय प्रवेश द्वार को अस्थाई रूप से बंद कर दिया गया है। उत्तर पश्चिम रेलवे के जोधपुर डीआरएम अनुराग त्रिपाठी ने बताया- जोधपुर रेलवे स्टेशन के द्वितीय प्रवेश द्वार पर यात्री यातायात का आवागमन 21 मई से अगले आदेश तक बंद किया गया है, ताकि अमृत भारत स्टेशन योजना के अंतर्गत 474 करोड़ रुपए की लागत से जोधपुर रेलवे स्टेशन के री-डेवलपमेंट कार्य को बेहतर ढंग से किया जा सकें।

SUNDAY रिपोर्टर

डीआरएम त्रिपाठी ने बताया- द्वितीय प्रवेश द्वार के भगत की कोठी साइड वाली छोर पर पहले चरण में ढांचागत निर्माण कार्य पूरा करवा लिया गया है और अब पुरानी बिल्डिंग को हटाकर उसे नवीन रूप देने का काम प्रारंभ किया जा रहा है, इसी के तहत यात्रियों की सुरक्षा और सुविधा को ध्यान में रखते हुए उनकी आवाजाही इस गेट से और अस्थाई रूप से बंद करने का निर्णय लिया गया है। सीनियर डीसीएम विकास खेड़ा के अनुसार जोधपुर रेलवे स्टेशन पर पुनर्विकास कार्य प्रगति पर होने के कारण निर्माण और रेलयात्रियों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए द्वितीय प्रवेश द्वार से रेलवे स्टेशन पर प्रवेश एवं अन्य गतिविधियां रोक दी गई हैं तथा यात्रा टिकट और प्लेटफॉर्म टिकट के लिए यात्रियों को मुख्य प्रवेश द्वार पर ही पहुंचना होगा।

टिकट काउंटर व अन्य वाणिज्यिक गतिविधियां भी रहेगी बंद: उपरोक्त कारणों से इस क्षेत्र में रिजर्वेशन व जनरल टिकट काउंटर जैसी सभी सुविधाओं को पूरी तरह से बंद कर दिया गया है। उन्होंने बताया कि जोधपुर रेलवे स्टेशन पर यात्रियों का मुख्य प्रवेश द्वार से ही आवागमन रहेगा।

टिकट से ट्रेन स्टेटस तक एक एप पर सभी सेवाएं

जोधपुर। भारतीय रेलवे ने अपना नया एप स्वरेल (SwaRail) एंड्रॉएड यूजर्स के लिए रोलआउट कर दिया है। यह एप यात्रियों को टिकट बुकिंग से लेकर ट्रेन स्टेटस और खाना ऑर्डर करने तक की सभी सेवाएं एक ही जगह पर देगा। इसके अलावा, इस एप का उपयोग करके यूजर्स अपनी यात्रा से जुड़ी किसी भी समस्या का समाधान आसानी से कर सकेंगे। इसे सेंटर फॉर रेलवे इंफॉर्मेशन सिम (CRIS) ने डेवलप किया है। 'स्वरेल' भारतीय रेलवे की अलग-अलग डिजिटल सेवाओं को एक ही प्लेटफॉर्म पर इंटीग्रेट करता है, जिससे यात्रियों को अलग-अलग एप डाउनलोड करने की जरूरत नहीं होगी। इसलिए इसे सुपर एप कहा जा रहा है।

SUNDAY रिपोर्टर

कैसे इस्तेमाल करें?

स्वरेल गूगल प्ले स्टोर पर एंड्रॉएड यूजर्स (वर्जन v127) के लिए अवेलेबल हो गया है। इसे अब तक 1 लाख से ज्यादा लोग डाउनलोड कर चुके हैं। हालांकि, यह एप ल एप स्टोर में अवेलेबल नहीं है। एंड्रॉएड यूजर्स इसे डाउनलोड करने के लिए नीचे दिए गए स्टेप्स फॉलो कर सकते हैं।

- **स्टेप-1:** मोबाइल पर गूगल प्ले स्टोर खोलें, SwaRail सर्च करें और इस आइकन पर क्लिक कर इन्स्टॉल करें।
- **स्टेप-2:** बीटा वर्जन इस्तेमाल कर रहे यूजर्स एप खोलें, IRCTC रैल कनेक्ट या UTS मोबाइल के यूजरनेम/पासवर्ड से लॉगिन करें।
- **स्टेप-3:** नए यूजर्स रजिस्टर ऑप्शन चुनें, मोबाइल नंबर, ईमेल और पासवर्ड डालकर अकाउंट बनाएं।
- **स्टेप-4:** MPIN सेट करें या फिंगरप्रिंट या फेस ID से लॉगिन करें, गेस्ट लॉगिन के लिए मोबाइल नंबर के साथ OTP यूज करें।
- **स्टेप-5:** पहली बार लॉगिन पर ऑटोमैटिक R-Wallet बनता है, मौजूदा UTS R-Wallet लिंक हो जाता है।
- **स्टेप-6:** होमपेज पर रिजर्व्ड/अनरिजर्व्ड/प्लेटफॉर्म टिकट चुनें, स्टेशन, तारीख, क्लास डालकर बुक करें।
- **अन्य सेवाएं:** PNR स्टेटस, ट्रेन लाइव ट्रैकिंग, खाना ऑर्डर, Rail Madad से शिकायत, रिफंड रिक्वेस्ट और कोच पोजिशन चेक करें।

IRCTC एप की जरूरत खत्म नहीं होगी

नए एप के आने से IRCTC का महत्व बना रहेगा, क्योंकि यह प्लेटफॉर्म ट्रेन टिकट बुकिंग और टूरिज्म सर्विस के लिए फोकस्ड है। 'SwaRail' एक वन-स्टॉप सॉल्यूशन के रूप में काम करेगा, जहां टिकट बुकिंग के साथ-साथ कई अन्य सुविधाएं भी मिलेंगी। यह एप रेलवे की डिजिटल सेवाओं को सिंप्लिफाई करके यूजर्स को बेहतर अनुभव देगा।

व्हाट्सएप पर जल्द आएगा नया फीचर

अब AI से ग्रुप प्रोफाइल फोटो बना सकेंगे यूजर्स

व्हाट्सएप पर यूजर्स को जल्द ही नए अकफीचर का फायदा मिलने वाला है। मैसेजिंग प्लेटफॉर्म ने हाल ही में कई नए अक फीचर्स को अडॉप्ट किया है। इसी कड़ी में एक और नया AI फीचर जुड़ने वाला है।

जोधपुर। व्हाट्सएप अपने यूजर्स के लिए एक नया फीचर टेस्ट कर रहा है, जिसके तहत अब अककी मदद से प्रोफाइल फोटो बनाई जा सकेगी। WABetaIno की रिपोर्ट के अनुसार, यह फीचर फिलहाल चुनिंदा यूजर्स के लिए बीटा टेस्टिंग के तहत जारी किया गया है। इस फीचर की मदद से यूजर्स टेक्स्ट प्रॉम्प्ट के जरिए अपनी पसंद की फोटो जनरेट

हालांकि यह फीचर फिलहाल केवल ग्रुप प्रोफाइल फोटो तक सीमित है। इसका मतलब है कि व्यक्तिगत व्हाट्सएप अकाउंट की प्रोफाइल फोटो के लिए अकजनरेशन की सुविधा अभी नहीं मिलेगी। ग्रुप आइकन के लिए यूजर्स टेक्स्ट प्रॉम्प्ट देकर इमेज जनरेट कर सकेंगे। अकउसी थीम के अनुसार एक यूनिक इमेज तैयार करेगा।

बीटा टेस्टर्स को मिली शुरूआती पहुंच

WABetanfo ने एक स्क्रीनशॉट साझा किया है जिसमें देखा जा सकता है कि कुछ बीटा टेस्टर्स को इस फीचर की शुरूआती एक्सेस दी गई है। इससे पता चलता है कि कंपनी इस फीचर को सीमित यूजर्स के साथ टेस्ट कर रही है ताकि फीडबैक के आधार पर इसमें सुधार किया जा सके।

एंड्रॉइड के स्टेबल वर्जन में भी दिखा फीचर

रिपोर्ट में यह भी बताया गया है कि यह फीचर कुछ ऐसे यूजर्स के लिए भी दिखने लगा है जो बीटा प्रोग्राम का हिस्सा नहीं हैं। एंड्रॉइड के स्टेबल वर्जन में इस फीचर का दिखना इस ओर इशारा करता है कि कंपनी जल्द ही इसे आम यूजर्स के लिए भी रोलआउट कर सकती है। हालांकि आईओएस यूजर्स के लिए इस फीचर की उपलब्धता को लेकर अभी कोई जानकारी नहीं दी गई है।

व्हाट्सएप में आया नया वॉयस मैसेज ट्रांसक्रिप्शन फीचर

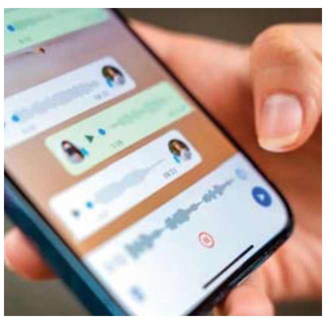

एआई फीचर के अलावा व्हाट्सएप ने हाल ही में भारत में वॉयस मैसेज ट्रांसक्रिप्शन फीचर भी शुरू किया है। इस फीचर की मदद से किसी भी वॉयस मैसेज का टेक्स्ट ट्रांसक्रिप्ट देखा जा सकता है। खास बात यह है कि यह फीचर डिवाइस पर ही प्रोसेस होता है, जिससे यूजर की प्राइवेसी बनी रहती है।

हिंदी भाषा की ट्रांसक्रिप्शन में सीमित सपोर्ट

फिलहाल यह ट्रांसक्रिप्शन फीचर हिंदी भाषा को सपोर्ट नहीं करता, लेकिन रिपोर्ट्स के मुताबिक हिंदी में रिकॉर्ड किए गए वॉयस मैसेज का भी ट्रांसक्रिप्ट दिख रहा है। इससे संकेत मिलता है कि भविष्य में इस फीचर को और बेहतर किया जा सकता है और हिंदी समेत अन्य भारतीय भाषाओं का सपोर्ट भी जोड़ा जा सकता है।

भारत से पहले बांग्लादेश में शुरू हुआ

स्टारलिंक इंटरनेट

Starlink का दावा है कि उसका इंटरनेट 300 Mbps तक की स्पीड देता है। कोई डेटा कैप नहीं यानी असीमित इंटरनेट मिलेगा। इसके अलावा कोई स्पीड थ्रॉटलिंग नहीं, यानी फुल स्पीड हर समय। यह बात बांग्लादेश के कई पारंपरिक इंटरनेट प्रदाताओं से Starlink को अलग बनाती है।

जोधपुर। एलन मस्क की सैटेलाइट इंटरनेट कंपनी Starlink ने अब आधिकारिक रूप से बांग्लादेश में अपनी सेवाएं शुरू कर दी हैं। यह लॉन्च दूरदराज और इंटरनेट से वंचित क्षेत्रों के लिए तेज और भरोसेमंद कनेक्टिविटी का नया युग लेकर आया है, हालांकि इसकी कीमत आम इंटरनेट सेवाओं की तुलना में काफी अधिक है।

SUNDAY रिपोर्टर

Starlink प्लान और कीमतें

Starlink ने बांग्लादेश में दो रेजिडेंशियल प्लान लॉन्च किए हैं जिनमें एक 6,000 टका (लगभग 4,200 रुपए) प्रति माह और दूसरा 4,200 टका (लगभग 2,900 रुपए) प्रति माह है। इसके साथ ही इंस्टॉलेशन फीस भी है जो कि 47,000 टका (लगभग 32,900 रुपए) है।

Starlink का दावा है कि उसका इंटरनेट 300 Mbps तक की स्पीड देता है। कोई डेटा कैप नहीं यानी असीमित इंटरनेट मिलेगा। इसके अलावा कोई स्पीड थ्रॉटलिंग नहीं, यानी फुल स्पीड हर समय। यह बात बांग्लादेश के कई पारंपरिक इंटरनेट प्रदाताओं से Starlink को अलग बनाती है। फैज अहमद तैय्यब, चीफ एडवाइजर के विशेष सहायक ने फेसबुक पर जानकारी दी कि Starlink की लॉन्चिंग अंतरिम सरकार के 90-दिन के लक्ष्य को पूरा करती है। उन्होंने कहा, हालांकि यह सेवा महंगी है, लेकिन यह प्रीमियम ग्राहकों के लिए उच्च गुणवत्ता और हाई-स्पीड इंटरनेट का विकल्प प्रदान करती है।

संपादकीय

राष्ट्रीय एकता सबसे ऊपर

बीते करीब तीन सप्ताह में जो कुछ घटित हुआ है वह देश के समकालीन इतिहास में विशिष्ट स्थान पाएगा। 22 अप्रैल को पहलगाम में हुए आतंकी हमले में 26 लोगों की हत्या कर दी गई। इस घटना ने पूरे देश को हिला दिया। हालांकि हमले के वास्तविक आरोपी नहीं पकड़े जा सके हैं लेकिन सुरक्षा बलों के पास यह पता लगाने के पर्याप्त प्रमाण थे कि इसका संबंध पाकिस्तान और पाकिस्तान में स्थित आतंकवादी संगठनों से था। इस घटना ने पूरे देश को एकजुट कर दिया। विपक्षी दलों ने भी सरकार का समर्थन करते हुए कहा कि वह जो उचित समझे वह कदम उठाए। 6-7 मई की दरमियानी रात भारतीय सशस्त्र बलों ने ऑपरेशन सिंदूर की शुरूआत की और पाकिस्तान तथा पाक के कब्जे वाले जम्मू-कश्मीर में 9 स्थानों पर आतंकी ठिकानों पर हमला किया। यह सैन्य कार्रवाई नपी-तुली, सटीक निशाने पर और बिना उकसावे वाली थी। बहरहाल पाकिस्तान ने हालात बिगाड़ने शुरू कर दिए और भारतीय सैन्य बलों को जवाब देना पड़ा। भारतीय सेनाओं ने पाकिस्तान में सैन्य परिसंपत्तियों को काफी नुकसान पहुंचाया। चूंकि भारतीय सैन्य बलों ने आरंभिक लक्ष्य हासिल कर लिया था इसलिए भारत ने पाकिस्तान की अपील पर कार्रवाई को स्थगित करने का निर्णय लिया।

ऑपरेशन सिंदूर को इतिहास एक ऐसे अवसर के रूप में भी याद किया जाना चाहिए जिसने देश को आने वाले समय के लिए एकजुट किया।

22 अप्रैल के बाद से घटित सभी घटनाओं का खूब विश्लेषण किया जा रहा है और उन पर चर्चा भी हो रही है। यह मानना सही है कि सुरक्षा प्रतिष्ठान भी हर पहलू का आकलन कर रहा है ताकि अगर कोई कमी है तो उसे दूर किया जाए। इसके अलावा भविष्य को लेकर भी पूरी तैयारी रखनी है। ध्यान देने वाली बात यह है कि सशस्त्र बलों की कामयाबी के अलावा भारत ने जबरदस्त राष्ट्रीय एकता का भी प्रदर्शन किया है। यह याद करना उचित होगा कि पहलगाम में हुए आतंकवादी हमले में मृतकों को उनकी धार्मिक पहचान की पुष्टि करने के बाद मारा गया था।

अब यह बात व्यापक तौर पर मानी जा रही है कि अन्य लक्ष्यों के अलावा हमले का इरादा देश में सांप्रदायिक तनाव भड़काना भी था। परंतु यह कारगर नहीं हुआ। जैसा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 12 मई को राष्ट्र के नाम संबोधन में भी कहा, पूरा देश, हर नागरिक, हर समुदाय, हर वर्ग एकजुट होकर आतंकवाद के खिलाफ ठोस कार्रवाई के लिए खड़ा रहा। हालांकि, दुर्भाग्यवश कुछ लोग नहीं चाहते कि यह एकता बरकरार रहे। उदाहरण के लिए मध्य प्रदेश सरकार के एक मंत्री ने एक महिला सैन्य अधिकारी को लेकर एक अपमानजनक और सांप्रदायिक टिप्पणी की। इस अधिकारी ने अन्य अधिकारियों के साथ ऑपरेशन सिंदूर के दौरान मीडिया को जानकारियां दी थीं। हालांकि अदालतों ने इस मामले का संज्ञान लिया है और कानूनी कदम उठाया जा चुका है लेकिन जरूरत है एक स्पष्ट राजनीतिक संदेश देने की। राज्य सरकार और राजनीतिक नेतृत्व को यह दिखा देना चाहिए कि ऐसी हरकतों की बड़ी कीमत चुकानी पड़ती है।

SUNDAY रिपोर्टर

लेखक
डॉ. आशीष वशिष्ठ

अनिवार्य है, कृतघ्न तुर्किए को कठोर संदेश देना

मोदी सरकार ने भी तुर्की को सबक सिखाने के लिए कदम उठाने शुरू कर दिये हैं। लेकिन जिस तरह देशवासियों ने स्वतः तुर्की और अजरबैजान का बॉयकॉट करने की मुहिम छेड़ी है, उसकी जितनी प्रशंसा की जाए, वो कम है।

जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में 22 अप्रैल को 26 निर्दोष हिन्दू पर्यटकों की नृशंस हत्या के उत्तर में शुरू ऑपरेशन सिंदूर पाक समर्थित आतंकवाद पर निर्णायक प्रहार बन गया। चार दिल चले ऑपरेशन सिंदूर में पाकिस्तान की सारी हेकड़ी निकल गई, और वो सीजफायर की भिक्षा मांगने लगा। भारत और पाकिस्तान के बीच सीजफायर अवश्य हो गया है, लेकिन ऑपरेशन सिंदूर के बीच तुर्की खासा सुर्खियों में रहा और उसका पाकिस्तान प्रेम खुलकर सामने आ गया। ऑपरेशन सिंदूर के दौरान चीन, तुर्किए और अजरबैजान का वास्तविक चेहरा अखिल विश्व के समक्ष अनावृत हो गया। पाकिस्तान ने इस दौरान भारत पर जो ड्रोन और मिसाइल दागे वो “मेड इन” चाइना और तुर्किए में बने थे। पाकिस्तान ने जो चीन की निकृष्ट मिसाइल और तुर्किए के ड्रोन भारत पर हमले में प्रयोग किये, उनके अवशेष सैन्य बलों के पास हैं। चीन और तुर्किए अब इन प्रमाणों को नकार नहीं सकता है। सीजफायर के बाद पाकिस्तान के मित्र तुर्किए के विरुद्ध भारत में विरोध शुरू हो गया है और सोशल प्लेटफार्म पर बॉयकाट तुर्की मुहिम जोर पकड़ने लगी है। भारतीय टूरिस्ट तुर्किये और अजरबैजान का बॉयकॉट कर रहे हैं। मोदी सरकार ने भी तुर्की को सबक सिखाने के लिए कदम उठाने शुरू कर दिये हैं। लेकिन जिस तरह देशवासियों ने स्वतः तुर्की और अजरबैजान का बॉयकॉट करने की मुहिम छेड़ी है, उसकी जितनी प्रशंसा की जाए, वो कम है। भारतीय नागरिकों के इस भाव का प्रभाव तुर्किए के अरबों डॉलर के व्यापार पर पड़ने वाला है।

तुर्किये एहसान फरामोशी का सबसे कलंकित उदाहरण हो सकता है। जब फरवरी, 2023 में तुर्किए में 7.8 तीव्रता का भूकंप आया था, लगभग चालीस हजार लोग मारे गए थे, इमारतें “मिट्टी-मलबा” हो गई थीं, तब भारत ने मदद का पहला हाथ बढ़ाया था। भारत ने भूकंप के अलावा भी तुर्किये की कई बार सहायता की है, लेकिन जब मौका आया तो उसने कृतघ्नता ही दिखाई और भारत के शत्रु के पक्ष में खड़ा हो गया। 2009 में तुर्किये ने पहली नैनो सैटेलाइट आईटीयूपीसेट-1 बनाई, जिसे स्पेस में नई टेक्नोलॉजी पर रिसर्च करना, पृथ्वी की तस्वीरें लेना और आंकड़ा एकत्र करने के लिए भेजा जाना था। इस लॉन्च में भारत ने तुर्किये की मदद की थी। इस सबके उपरांत तुर्किये सदैव पाकिस्तान का समर्थन करता रहा है। तुर्किये ने 2019 में भारत के धारा 370 हटाने का भी विरोध किया था। इसके बाद से लगातार तुर्किये यूनाइटेड नेशन जनरल असेंबली यानी यूएनजीए में कश्मीर का मुद्दा उठाता आया है। पहलगाम आतंकी हमले के जवाब में 6-7 मई की रात भारत ने ऑपरेशन सिंदूर लॉन्च किया, तो तुर्किये खुलकर पाकिस्तान के साथ दिखा। कई मीडिया रिपोर्ट्स में दावा किया गया कि तुर्किये ने पाकिस्तान को करीब 350 ड्रोन और उन्हें चलाने के लिए ऑपरेटर भेजे। 4 मई को तुर्किये ने नौसेना का युद्धपोत टीसीजी बुयुकडा (एफ-512) पूरे बेड़े के साथ पाकिस्तान के कराची पोर्ट पर भेज दिया। तुर्किए ने पाकिस्तान के पहलगाम हमले की अंतरराष्ट्रीय जांच की अनुशंसा का भी समर्थन किया। 10 मई को सीजफायर के बाद शहबाज शरीफ ने एर्दोगन को मदद करने के लिए शुक्रिया अदा किया।

तुर्किए के पाकिस्तान का साथ देने के बाद भारतीय पर्यटकों ने धड़ाधड़ तुर्की की यात्राएं कैंसिल करवानी शुरू कर दी है। भारतीय पर्यटकों को आज की तारीख में सिर्फ एक आम ट्रैवलर मानना बहुत बड़ी गलती है। क्योंकि ग्लोबल टूरिज्म इंडस्ट्री के लिए भारतीय पर्यटक एक आर्थिक स्तंभ बन चुके हैं। साल 2023 में भारतीय पर्यटकों ने दुनिया के अलग अलग हिस्सों में घूमने में 18 अरब डॉलर से ज्यादा खर्च किए। ऐसे में अगर भारतीय पर्यटक किसी देश का बहिष्कार करते हैं तो वो सिर्फ एक सोशल मीडिया पर चलाया गया ट्रेंड नहीं होता है, बल्कि एक भूकंप होता है। पिछले साल जनवरी में मालदीव के कुछ मंत्रियों ने प्रधानमंत्री मोदी के लक्षद्वीप दौरे के दौरान अभद्र भाषा का प्रयोग किया था। जिसके बाद भारत और मालदीव के बीच विवाद काफी बढ़ गया। भारतीय पर्यटकों ने मालदीव का बहिष्कार शुरू कर दिया, जिसने कुछ ही समय में मालदीव के नेताओं को घुटने टेकने के लिए विवश कर दिया। मालदीव की अर्थव्यवस्था, जिसमें टूरिज्म सेक्टर का 28 प्रतिशत योगदान है, उसे गहरा धक्का लगा था, लिहाजा अब बारी तुर्की की है।

पिछले कुछ सालों में भारी संख्या में भारतीय पर्यटकों ने घुमने के लिए तुर्की को चुना है। साल 2023 में करीब 2.74 लाख भारतीय नागरिक घूमने के लिए तुर्की गये थे। जबकि 2024 में तुर्की जाने वाले भारतीय पर्यटकों का ये आंकड़ा बढ़कर करीब 3.5 लाख पहुंच गया। भारतीय लोगों के बीच शादी करने, हनीमून मनाने और फैमिली ट्रिप्स के लिए तुर्की तेजी से लोकप्रिय हो रहा था। लेकिन 2025 में तुर्की ने पाकिस्तान का समर्थन करके भारतीयों को अपने विरूद्ध कर लिया है। इसके अलावा भारत जैसे देशों के पर्यटकों का बहिष्कार सिर्फ आर्थिक नहीं, राजनीतिक संदेश भी होता है। पर्यटन के अलावा भारतीय बाजारों में तुर्की से आयातित सेब की बिक्री पर भी प्रभाव पड़ा है। भारतीय कारोबारियों ने अब ईरान, अमेरिका और न्यूजीलैंड से सेब खरीदना शुरू कर दिया है। सेब उत्पादन करने वाला संघ, जो पहले से ही विदेशों से मंगाए जाने वाले सेब की वजह से नाराज रहता था और तुर्की के सेब पर प्रतिबंध लगाने की मांग करता रहता था, वो अब प्रसन्न है। इस वित्त वर्ष में तुर्की से 1 लाख 60 हजार टन सेब खरीदे गये थे।

मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, भारत तुर्की के साथ व्यापारिक संबंध समाप्त करने की तैयारी मे। भारत तुर्की से दाल, तिलहन और स्टील जैसी चीजें खरीदता है। दोनों देशों के बीच व्यापार को 20 अरब डॉलर तक ले जाने की योजना थी। लेकिन अब बदले वातावरण में यह संबंध पूर्णत समाप्त हो सकते हैं। 15 मई केंद्र सरकार ने तुर्किये की कंपनी सेलेबी एविएशन की सुरक्षा मंजूरी रद्द कर दी। यह दिल्ली, मुंबई और बेंगलुरु सहित प्रमुख भारतीय हवाई अड्डों पर हाई सिक्योरिटी ऑपरेशन संभालती है। भारत के प्रतिष्ठित शिक्षा संस्थानों ने भी तुर्की से एकेडमिक समझौते रद्द कर दिये हैं। इनमें जवाहरलाल नेहरू यूनिवर्सिटी यानी जेएनयू, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, आईआईटी रुड़की, शारदा विश्वविद्यालय और लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी शामिल हैं। भारत सरकार ने व्यापार के अलावा कूटनीति के मोर्चे पर भी तुर्किये को बड़ा सबक सिखाने का मन बना लिया है। तुर्किये को सबक सिखाने के लिए भारत उसके अंदर के मुद्दों को बाहर लाएगा। तुर्किये में लगातार बढ़ रही मानवाधिकार हनन की घटनाओं को भारत यूनाइटेड नेशन्स के समक्ष रख सकता है। इसके अलावा 'साइप्रस का मुद्दा' तुर्किये की सबसे बड़ी कमजोरी बन चुका है। तुर्किए और साइप्रस के बीच की जंग दशकों पुरानी है, इसके बावजूद तुर्किये इसे समाप्त नहीं कर पा रहा। भारत इस मुद्दे के सहारे तुर्किये को सबक सिखा सकता है। येन-केन-प्रकारेण, तुर्किये ने इस्लामी देशों का 'खलीफा' बनने की भ्रांति पाल रखी है, इसलिए उसकी हेकड़ी तोड़ना अत्यावश्यक है।

बातों की बात

इधर पद का गुरूर.. उधर सुरूर का कसूर...

SUNDAY रिपोर्टर

डॉ. सुरेश खटनावलिया

न जुबान है न दिमाग.. लोग दो घुंट में बहक जाते हैं.. यह तो बोतल गटक जाते हैं.. फिर क्या बोल जाते हैं, उनके अपने सर खुजाते रह जाते हैं.. मध्यप्रदेश सरकार के मंत्री विजय शाह वैसे तो स्वभाव के सहज और दिल के साफ हैं.. लेकिन दिल और दिमाग का कोई कनेक्शन ही नहीं है.. पूरे देशभर के भाजपाइयों की तरह मोदीप्रेमी शाह बखान तो मोदी का कर रहे थे, लेकिन फिर किसको घसीट रहे थे यह न तो उनकी जुबान को पता था, न दिमाग को.. लिहाजा सेना की सोफिया को बहन तो बनाया, लेकिन बहन को पाकिस्तान भिजवा डाला और उसमें भी ऐसे ऐल-फेल शब्दों का उपयोग कर डाला कि पूरा देश शरमाया.. शाह पता नहीं किसकी ऐसी की तैसी कर रहे थे.. ताली बजाने वालों को भी समझ में नहीं आया और वीडियो वायरल हुआ तो खुद को कटा-फटा पाया.. मंच पर संस्कृति मंत्री रही महू की विधायक उषा ठाकुर भी बैठी थीं, लेकिन वो भी संस्कृति की धज्जियां उड़ती देख शाह और उनके डॉयलॉग पर ताली बजाती मंच से लेकर मजमे तक में बैठे रहे लोगों को ताकती रहीं.. अब जंग में जीती बाजी भाजपा शब्दों से हारकर टोकरे भर-भरकर उलाहने, ताने और लानतें सुनते हुए शाह की शाही जुबान को कोस रही है और मंत्री को ठोंक रही है.. पद जाने के डर से सहमे मंत्री सौ-सौ माफी की मिन्नतें कर रहे हैं, लेकिन सम्मान की मौत मिन्नतों से जिंदा होने से रही.. इसीलिए मंत्री का संतरी बनना तय है.. लेकिन जो समझते हैं वो जानते हैं कि यह पद का गुरूर था तो सुरूर का कसूर और इस सुरूर में वो कई बार अपनी बहकती जुबान का मातम मना चुके हैं..पहले एक बार पद तक गंवा चुके हैं, लेकिन सुरूर है कि मानता नहीं और मंत्री का पीछा त्यागता नहीं..कसूर मंत्री का भी कम है, कसूर तो उस बोतल का है, जिसे गंगाजल मानकर उनके चहेते साथ लिए घूमते रहे हैं और जहां मौका मिले मंत्री का कंठ गीला करते रहते हैं.. फिर एक बार जो मंत्री नीलकंठ हुए तो भूतों की बरात ताली बजाती है और जुबान तांडव करने लग जाती है.. वैसे भी मंत्री आदिवासी इलाके से हैं, जहां बोतल राज करती है.. मजमा हो या महफिलें बोतल के बिना नहीं चलती हैं, लेकिन बोतल दिमाग पर चढ़ जाए.. प्रदेश का जिम्मेदार नेता जुबान पर लगाम नहीं लगा पाए और लगाम तो दूर बोलते हुए इस घटियापन पर उतर आए कि हर लफ्ज से पूरा देश आहत नजर आए तो एक बात जरूरी हो जाती है कि भाजपा जैसी संवेदनशील और सुसंस्कृत कही जाने वाली पार्टी को अपने नेताओं को कहने-सुनने और बोलने का प्रशिक्षण भी देना चाहिए और प्रशिक्षण के बाद ही पद के लिए चयन करना चाहिए.. वरना अपनी बनाई इमारत को उनके अपने ही ढहाते जाएंगे.. मलबा भी आप उठाएंगे और मातम भी आप ही मनाएंगे..

Cartoon Corner

सोशल मीडिया का सतही ज्ञान माहौल को बनाता खतरनाक

सोशल मीडिया और टीवी चैनलों पर भारत-पाक टकराव की खबरों को इस तरह से दोहराया गया जैसे पौराणिक कथाओं में एक ही बात को बार-बार दोहराया जाता है और लोग उसे सच मान लेते हैं...

जोधपुर। भारत और पाकिस्तान के बीच टकराव के समय सोशल मीडिया और टीवी चैनलों ने जिस तरह से माहौल का खतरनाक बनाया वह अद्भुत था। सोशल मीडिया पर सतही ज्ञान साफसाफ दिख रहा था। जिन को युद्ध की परिभाषा, कूटनीति, अंतरराष्ट्रीय कानून, दो देशों के बीच संबंध उन के आपसी समझौतों का नहीं पता वह सोशल मीडिया पर इस तरह से बोल रहे थे जैसे यह उन के लिए मूलीगाजार खरीदने जैसा काम हो। जिस ने कभी घर के बाहर मोहल्ले की लड़ाई नहीं देखी, गोली नहीं चलाई वह न्यूक्लियर वार पर ऐसे ज्ञान दे रहा हो जैसे परमाणु बम उस की जेब में पड़ा हो ।

टीवी चैनल इस तरह से युद्ध की कमेंट्री कर रहे थे जैसे युद्ध न हो कर वह आईपीएल मैच हो। देश में पहली बार सोशल मीडिया के जमाने में भारतपाक के बीच टकराव टीवी चैनलों और सोशल मीडिया पर दिख रहा था। टीवी चैनलों ने भारतीय सेना को पाकिस्तान में घुसा दिखा दिया। नेवी का कराची बंदरगाह पर हमला दिखा दिया। पाकिस्तान सेना के प्रमुख जनरल आसिम मुनीर को हटाने और नया सेना प्रमुख शमशाद मिर्जा को बनवा दिया। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री को ले कर खबरें देने लगे। ऐसा लगा जैसे रात में ही पाकिस्तान में तख्तापलट हो जाएगा। पहलगाम में आतंकी हमले के भारत ने पाकिस्तान में आतंकी हमलावरों और उन के ठिकानों को खत्म करने की बात कही थी। भारत ने पाकिस्तान को भारत में मिलाने, पाकिस्तान से युद्ध करने जैसी कोई बात नहीं कही थी। सोशल मीडिया और टीवी चैनलों ने ऐसा नैरेटिव बना दिया जैसे भारत व पाकिस्तान का युद्ध खतम हुआ हो। इस की तुलना 1971 के युद्ध से की जाने लगी और पूछा जाने लगा कि पाकिस्तान के चार टुकड़े क्यों नहीं किए गए? सवाल यह भी उठने लगा कि सीजफायर क्यों हुआ? अमेरिका के राष्ट्रपति डोनल्ड ट्रंप और भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को ले कर तमाम सवाल होने लगे। यह लोग इस को अभिव्यक्ति की आजादी से जोड़ देते हैं।

रीनू जैन

SUNDAY रिपोर्टर

अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता

1987 अनुच्छेद 19 अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अधिकार देता है। यह बोलने, सुनने और राजनीतिक, कलात्मक और सामाजिक जीवन में भाग लेने का अधिकार है। इस में जानने का अधिकार भी शामिल है। जब आप अपने विचार औनलाइन या औफलाइन देते हैं तो आप अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के अपने अधिकार का प्रयोग कर रहे होते हैं। जब आप अपनी सरकार की उस के वादों पर खरा न उतरने के लिए आलोचना करते हैं, तो आप अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के अपने अधिकार का प्रयोग कर रहे होते हैं। जब आप धार्मिक, राजनीतिक, सामाजिक या सांस्कृतिक प्रथाओं पर प्रश्न उठाते हैं या बहस करते हैं, तो आप अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के अपने अधिकार का प्रयोग कर रहे होते हैं। जब आप किसी शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन में भाग लेते हैं या उस का आयोजन करते हैं, तो आप अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के अपने अधिकार का प्रयोग कर रहे होते हैं। जब आप कोई कलाकृति बनाते हैं तो आप अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के अपने अधिकार का प्रयोग कर रहे होते हैं। जब आप किसी समाचार लेख पर टिप्पणी करते हैं चाहे आप उस का समर्थन कर रहे हों या उस की आलोचना कर रहे हों। तो आप अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के अपने अधिकार का प्रयोग कर रहे होते हैं।
अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता राजनीतिक असहमति, विविध सांस्कृतिक अभिव्यक्ति, रचनात्मकता और नवाचार के साथसाथ आत्मअभिव्यक्ति के माध्यम से व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास के लिए मौलिक है। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता संवाद को सक्षम बनाती है, समझ का निर्माण करती है और सार्वजनिक ज्ञान को बढ़ाती है। जब हम विचारों और सूचनाओं का स्वतंत्र रूप से आदानप्रदान कर सकते हैं, तो हमारा ज्ञान बढ़ता है, जिस से हमारे समुदायों और समाजों को लाभ होता है। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता हमें अपनी सरकारों से सवाल पूछने में भी सक्षम बनाती है, जो उन्हें जवाबदेह बनाए रखने में मदद करती है। सवाल पूछना और बहस करना स्वस्थ है। इस से बेहतर नीतियां और अधिक स्थिर समाज बनते हैं। यहां यह भी समझना जरूरी है कि सवाल किस तरह से पूछे जाएं? मखौल उड़ाते हुए और अपमानजनक, शब्द, विचार और फोटो या वीडियो अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की सीमाओं का उल्लघंन करते हैं।

सोशल मीडिया ने बदल दिया माहौल

सोशल मीडिया पर चर्चा एक पक्षीय होती है। सोशल मीडिया पर पोस्ट करने वाला जरूरी नहीं कि अपनी सफाई दे या जो उस की पोस्ट के विपरीत जो बातें हैं उन के जवाब दे। सोशल मीडिया पर तर्क की जगह कुर्तक ज्यादा होते हैं। कई बार ऐसे लोग तर्क देने लगते हैं जिन को उस विषय में पता ही नहीं होता है। ताजा उदाहरण भारत व पाकिस्तान टकराव के समय देखने को मिला। कई ऐसे फोटो और वीडियों दोनो ही पक्षों ने बना कर पोस्ट और फारवर्ड किए जो बेहद आपत्तिजनक हैं। सूचनाएं बेहद भ्रामक हैं। यह अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की सीमाओं का उल्लघंन है। इन में सोशल मीडिया से भी बड़ी भूमिका टीवी चैनलों की रही है। अर्नब गोस्वामी ने रिपब्लिक भारत पर कहा 'अमेरिका कौन होता है सीजफायर कराने वाला?' वह अपने अलग-अलग कार्यक्रमों में इस तरह की बातें करते रहे जिन का कोई जमीनी आधार नहीं है। सीजफायर पर बात करते अर्नब गोस्वामी ने कहा कि 'पाकिस्तान और अमेरिका ने एक प्रेम कहानी मिल कर लिखी है। जिस में चीन कह रहा कि मोहब्बत उस से और कहानी अमेरिका से'। यह बात केवल रिपब्लिक भारत की बात नहीं है।

दूसरे चैनलों ने भी इसी तरह की रिपोर्ट पेश की गई। जिस का कोई आधार नहीं था। इन में श्वेता सिंह, चित्रा त्रिपाठी और रूबिका लियाकत जैसे कई एंकरों ने 7 मई की रात जिस तरह से पाकिस्तान के बारें में खबरें दी उन की सुबह कोई खबर नहीं थी। कई खबरें तो चैनलों से हट गई। खबरों में कुछ होता था और उन के थंबनेल पर कुछ और लिखा होता था। इस तरह से दर्शक पूरी तरह से भ्रमित थे। उन को समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या करें? टीवी के एंकर जिस तरह से एक तरफ से दूसरी तरफ कूद-कूद कर बता रहे थे उसे देख कर यह नहीं लग रहा था कि कोई युद्ध की रिपोर्ट दिखाई दे रही। उस को देख कर लग रहा था जैसे आईपीएल क्रिकेट मैच या फिर चुनावी मतगणना चल रही थी। टीवी चैनलों पर होड़ लगी थी कि कौन कितनी बड़ी झूठ फेंक सकता है। किसी ने कराची बंदरगाह उड़वा दिया तो किसी ने इस्लामाबाद कब्जा करा दिया। कुछ चैनलों ने पाकिस्तान के सेना प्रमुख आसिफ मुनीर को हटवा शमशाद अहमद को सेना प्रमुख बना दिया। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ का तख्ता पलट करा दिया। कुछ चैनलों ने इस बात को फैलाने का काम भी किया जैसे आसिफ मुनीर को पकड़ लिया गया है और उस को भारत लाया जा रहा है। उस पूरी रात ऐसा माहौल पूरे देश में बना दिया जैसे सुबह भारत व पाकिस्तान में अपना झंडा फहरा देगा। इस तरह की रिपोर्टिंग दोनों ही तरफ से हुई। हिंदू जैसे अखबार ने एक गलत खबर अपने डिजिटल एडीशन में पोस्ट की बाद में उस को हटाया और माफी मांग ली।

खराब हुआ माहौल

टीवी, सोशल मीडिया और डिजिटल मीडिया ने पूरे देश का महौल खराब कर दिया। देश को लगा जैसे भारत व पाकिस्तान युद्ध हो रहा है। 1971 की तरह भारत व पाकिस्तान के कम से कम 2 टुकड़े ब्लूचिस्तान और पीओके तो कर ही देगा। इन खबरों की वजह से देश की जनता को भी यह उम्मीद जग गई। वह यह भूल ही गए कि यह युद्व नहीं है। यह भारत की आतंकियों के खिलाफ जंग थी। जिस का पाकिस्तान की सेना से कोई मतलब नहीं था। यह सारे हमले मिसाइल के जरिए हो रहे थे। सेनाएं आमनेसामने नहीं थी। 8 मई को जब देश ने देखा कि सोशल मीडिया और टीवी चैनलों ने देश में युद्ध सा माहौल बना दिया तो भारत सरकार की तरफ से इस की एक गाइडलाइन जारी हुई। जिस के तहत कहा गया कि कोई भी टीवी चैनल अपनी खबरों को दिखाते समय युद्व का सायरन नहीं बजाएगा। युद्ध के वीडिया बिना सच्चाई जाने नहीं दिखाएगा। इस तरह से खबरें न दिखाई जाएं जिस से देश का माहौल खराब हो। इस के बाद भी जनता यह मान चुकी थी कि भारत व पाकिस्तान युद्ध हो रहा है। इन खबरों का असर यह हुआ कि जब दोनों देशों के बीच हमले रोकने के बात हुई तो जनता को बेहद निराशा हुई। जो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एक दिन पहले तक हीरो थे उन को लोग बुरा-भला कहने लगे। इन की शिकायत एक थी कि बिना पाकिस्तान के टुकड़े किए युद्व विराम क्यों हुआ? युद्व विराम की घोषणा अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने क्यों की? इस की सफाई देने के लिए 2 बार सेना ने प्रेस कान्फ्रैंस की और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राष्ट्र के नाम अपना संदेश भी दिया। इस के बाद भी जनता के सवाल कायम है कि सीजफायर अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के कहने पर क्यों किया? यही नहीं जनता ने यह खोज निकाला है कि गौतम अडानी को लाभ दिलाने के लिए नरेंद्र मोदी ने युद्व को बीच में रोक दिया। यह हालात बनाने में सोशल मीडिया के सतही ज्ञान और टीवी चैनलों की गैर जिम्मेदारी भरी रिपोर्टिंग रही है। इस ने जनता के मन पर इतना गहरा असर डाला कि लोग उसे ही सही मानने लगे हैं। जिस तरह से पौराणिक कथाओं में बारबार एक ही बात दोहराई जाती है जिस को लोग सच मान लेते हैं उसी तरह से टीवी चैनलों और सोशल मीडिया की खबरों को सच मान लिया गया।

चूल्हे की सादगी जीवन का मूलमंत्र

वर्तमान परिपेक्ष्य में हम देखते हैं कि समय तेजी से परिवर्तनशील है समय का यह परिवर्तन मनुष्य के आर्थिक सामाजिक और सांस्कृतिक पक्ष पर भी सीधा प्रभाव डालता है। आज के तेजी से बदलते हुए परिदृश्य में व्यक्ति स्वयं को असंभावनाओं से घिरा हुआ पाता है। उसकी आर्थिक और सामाजिक स्थिति का स्थायित सदैव खतरे में रहता है। नई आर्थिक नीति के दौर में बड़ी हुई मैं भी इस दौर की उठा पटक से बच नहीं पाई। हमारी पीढ़ी ने वह दौर देखा जब उच्च शिक्षा तो सुलभ होती गई लेकिन रोजगार दुगुनी गति से कम होते गए। महंगाई की मार ने कोढ़ में खाज का काम किया । नई आर्थिक नीति ने जिसके मूल तत्त्व उदारीकरण निजीकरण और वैश्वीकरण रहे, में एक और रोजगार की नए क्षेत्रों का विकास भी किया लेकिन साथ ही धन की तरलता ने सामान्य व्यक्ति के खर्चों में भी अत्यधिक बढ़ोतरी की। परंतु मूल रूप से देखा जाए तो ये खर्च हमारे दैनिक जीवन की दाल रोटी के अतिरिक्त थे। भारतीय समाज में आज भी अधिकांश घरों में दोनों वक्त साधारण भोजन बनता है। एक सब्जी और रोटी दही के साथ सर्व सुलभ रहे है। चूल्हे की यही सादगी वैश्विक मंदी और वैश्विक महामारी के दौर में भी भारतीय परिवार व्यवस्था और अर्थव्यवस्था दोनों को बचाए रखने में सहायक रही। अपने व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर भी कहूं तो हम एकसमय की बची हुई सब्जी या रोटी दूसरे समय सहज रूप से उपयोग कर लेते हैं और इतने कम समय में एक विज्ञान के विद्यार्थी होने के नाते दावा भी करती हूं उसके

> *व्यक्ति की योग्यता हर हाल में उसे एक स्तरीय जीवन देने के लिए पर्याप्त से अधिक है...*

पौष्टिक मूल्य में कमी ना के बराबर ही आती है। बल्कि भोजन के पौष्टिक मूल्य में कमी तो उसको पकाने के अवैज्ञानिक और विवेक रहित तरीकों जैसे अनाज और दालों को पकाने से पूर्व भिगोना नहीं, अधिक तेल का इस्तेमाल, तलने में बचे हुए तेल का बार-बार इस्तेमाल, कृत्रिम खुशबु व रंग और घर के बने भोजन के साथ परिरक्षित पैक्ड फूड जैसे भुजिया सॉस आदि से आती है । हमारे घरों में सादा भोजन बनाने की जो परंपरा रही है वह समय, ऊर्जा और धन तीनों को बचाने का सहज साधन भी साबित हुई। और अनावश्यक तनाव कम होने से पारिवारिक समरसता भी बनीरही।

SUNDAY रिपोर्टर
डॉ. अंजना चौधरी
निदेशक, बी. एड प्रकोष्ठ,
जेएनवीयू, जोधपुर

हम पुनः बिंदु पर आकर सोचें तो यह जो अनिश्चिता का दौर है जिसमें निजी कंपनियों की नौकरियां, व्यावसायिक प्रतियोगिता, शेयर बाजार की उठापटक और भू राजनीतिक मसलों जैसे कारणों से व्यक्ति की आर्थिक स्थिति कभी भी डगमगा सकती है। लेकिन हम गहराई से सोचें तो इसका प्रभाव बाहरी जीवन पर ही अधिक पड़ रहा है । जैसे किसी कारण से व्यक्ति की आय कम हो जाती है तो वह अनावश्यक घूमना फिरना काम कर देगा, ब्रांडेड कपड़ों के सेकेंड्स के विकल्प अपना लेगा, टॉयलेटरीज में थोड़ी सस्ती चीजें इस्तेमाल कर लेगा। जिससे उसके स्वास्थ्य और व्यक्तित्व पर कोई नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ता है और उसका चूल्हा तो वही साधारण है जिसका खर्च बहुत कम है। आज की युवा पीढ़ी को अपने जीवन में आने वाली उठापटक से अधिक घबराने की आवश्यकता नहीं है। बल्कि आज वह विकल्पों की अधिकता के कारण अपनी पसंद का काम भी चुन सकता है और उसका पैशन और प्रोफेशन एक ही होगातो निश्चित रूप से उसे कार्य करने में आनंद भी आएगा और वह अपने जीवन की गुणवत्ता को सुधार भी सकता है। ध्यान सिर्फ इतना रखना है कि युवा पीढ़ी अपनी मूलभूत आवश्यकताओं जैसे अपना मकान (ताकि किराया न देना पड़े), स्वास्थ्य की देखभाल हो सकें। जिससे इलाज के अनावश्यक खर्चे से बच सके। और बच्चों की अच्छी शिक्षा ताकि उनके बच्चे विस्तृत वैश्विक परिदृश्य में भी जीवन यापन के योग्य हो सके और उनमें सुनागरिकता का भी विकास हो सके। साथ ही सबसे बड़ी जरूरत है नशे से बचने की। केवल इन छोटी- छोटी बातों को ध्यान में रखकर और व्यावसायिक ज्ञान और कौशल में सतत वृद्धि और आत्मविश्वास से भरपूर होकर जीवन सुख शांति और समृद्धि के जीया जा सकता है। व्यक्ति की योग्यता हर हाल में उसे एक स्तरीय जीवन देने के लिए पर्याप्त से अधिक है।

ऑपरेशन सिंदूर...

> *बड़े बड़ाई ना करें ,*
> *बड़े न बोलें बोल..*
> *रहिमन हीरा कब कहे*
> *लाख टका मेरो मोल...*

अप्रैल के अंत में जम्मू कश्मीर के पहलगांव पर आतंक वादियों के बर्बरतापूर्ण आतंकी हमले के बाद सारा देश एक दुखद गमगीन माहौल से गुजर रहा था सभी एक ही मानसिकता से संचालित थे और चाहते थे कि आतंकवादियों को उनके किए की गंभीर सजा मिले और पीड़ितों को जल्द से जल्द न्याय मिल । आम आदमी के लिए यह हृदयविदारक घटना थी जिसमें आतंकवादी की कोई जाति ,धर्म लिंग ,भाषा से किसी को कोई मतलब नहीं था क्योंकि जो आतंक करता है वह इंसान तो हो ही नहीं सकता है फिर जो इंसान ही नहीं है जिसमें मानवता ही नहीं है उसमें जाति ,धर्म ढूंढने का कोई औचित्य नहीं है। संपूर्ण देश ही नहीं बल्कि पूरा विश्व इस कायरता पूर्ण कृत्य की भर्त्सना तो कर ही रहा था साथ ही जवाबी कार्रवाई और न्याय की भी मांग कर रहा था । ऐसे में देश के अदम्य साहस और सैन्य शक्ति ने अपने कर्तव्यों का निर्वहन करते हुए ऑपरेशन सिंदूर के तहत उन आतंकी ठिकानों को ध्वस्त करने का सराहनीय कार्य किया जिसमें आतंकियों ने पनाह ले रखी थी और जिसका सबको बेसब्री से इंतजार था।

सबसे अच्छी ,उत्साह, सम्मानजनक और गरिमा पूर्ण बात यह थी कि इस ऑपरेशन को नेतृत्व प्रदान करने वाली और ऑपरेशन सिंदूर के उपरांत देश की जनता को इस शौर्य पूर्ण अभियान की संपूर्ण जानकारी देने वाली हमारे देश की दो बेटियां ही थी एक कर्नल सोफिया कुरैशी और दूसरी विंग कमांडर व्योमिका सिंह। जो इसके उपरांत विश्व में महिला सशक्तिकरण की पहचान और देश की हर बेटी के लिए प्रेरणा का स्त्रोत बनी । दोनों बेटियां का देश के नाम संदेश इतना साफ ,सरल , स्पष्ट और मयार्दा से परिपूर्ण था कि ऑपरेशन सिंदूर की संपूर्ण कारवाई आतंकियों और उनको पनाह देने वालों के विरुद्ध की गई है ना कि किसी व्यक्ति , जाति या धर्म के खिलाफ की गई थी जिसमें किसी भी दंभ या अमर्यादित भाषा का लेश मात्र भी अंश नहीं था। लेकिन पुरुष सत्तात्मक मानसिकता और साथ ही जाति, धर्म आधारित संकीर्ण ,कुंठित मानसिकता के चलते कुछ लोगों ने इसमें में भी अपनी ही बेटियों की जाति, धर्म और साथ में जेंडर ढूंढना शुरू कर दिया ।

SUNDAY रिपोर्टर
सीमा हिंगोनिया
अतिरिक्त पुलिस
अधीक्षक

ऑपरेशन सिंदूर का क्रेडिट लेने की होड देश में इतनी अधिक बढ़ गई कि जन प्रतिनिधियों ने बड़े बड़े, अमर्यादित बोल बोलने शुरू कर दिए ,और बड़े बोल बोलते बोलते कुछ जनप्रतिनिधियों ने तो देश की इन महान बेटियों को ही उनके धर्म के आधार पर आतंकियों की बहन ,आतंकियों की समाज की बहन, बेटी ,तक कह डाला और उनका सार्वजनिक रूप से ,मंचों से घोर अपमान कर सबसे तालियां भी बजवा ली। ऐसे में कर्नल सोफिया कुरैशी और व्योमिका सिंह के साहसिक कार्यों और नेतृत्व को धर्म और जाति , की गंदी राजनीति से जोड़ कर देश की बहन बेटियों के सामने कई सवाल खड़े कर दिए ?

जैसेः क्या दोनों को नेतृत्व इस लिए प्रदान किया गया था कि एक मुस्लिम है और एक किसी जाति विशेष से है? या उन्हें यह नेतृत्व उनकी क्षमता ,कार्य कुशलता , और उनकी उच्च कोटि की नेतृत्व क्षमता की वजह से दिया गया था ? साथ ही क्या हम अभी कल्पना कर सकते हैं कि उनके स्वयं के दिल ,दिमाग ,परिवार , समाज पर इस तरह के ओछे ,गंदे अमर्यादित बोलों का क्या प्रभाव पड़ा होगा ? आज उनकी देश भक्ति को किस किस रंग में रंग दिया और क्यों रंग दिया गया ? जिन्होंने संपूर्ण ऑपरेशन को अंजाम दिया वो अपने कार्य अंजाम के उपरांत संयमित और शांत है वैसे ही जैसे- 'बड़े बड़ाई ना करें ,बड़े ना बोले बोल ,रहिमन हीरा कब कहे लाख टका मेरो मोल..'और जिन्होंने कुछ नहीं किया वो इसका क्रेडिट लेने में लगे हैं । सब देख और सोच रहे हैं कि देश के उच्च नेतृत्व ने अभी तक ऐसे लोगों पर कोई भी बड़ी कारवाई क्यों नहीं की ?

मुँह मियाँ मिट्ठू

राजन ने अपने सहकर्मियों को बताना शुरू किया कि वह एक प्रसिद्ध लेखक हैं। मेरी कहानियाँ पढ़कर लोग रो पड़ते हैं। जब किसी ने पूछा, ₹कहाँ छपी हैं ?₹ तो बोले झ्र ₹एक विदेशी जर्नल में, नाम याद नहीं आ रहा, कुछ फ्रेंच में था शायद द वायर या द विडर। राजन नामक प्राणी एक छोटे से नगर में जन्मा, लेकिन महापुरुष बनने की महत्त्वाकांक्षा लेकर बड़ा हुआ। वैसे तो वह सरकारी दफ्तर में तीसरे दर्जे का क्लर्क था, लेकिन आत्मा में वह एक प्रधानमंत्री, मस्तिष्क में एक नोबेल पुरस्कार विजेता, और दिल में एक बॉलीवुड हीरो था। समस्या बस इतनी थी कि उसे कोई और ऐसा नहीं मानता था झ्र तो उसने खुद ही मानना शुरू कर दिया।

व्यंग्य
SUNDAY रिपोर्टर
डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा 'उरतृप्त'
(हिंदी अकादमी, मुंबई से सम्मानित नवयुवा व्यंग्यकार)

राजन को मुँह मियाँ मिट्ठू बनने की कला में पीएचडी प्राप्त थी। वह खुद को ऐसा प्रचारित करता जैसे चुनावी पोस्टर पर मुस्कुराता हुआ नेता विकास का दूसरा नाम झ्र राजन!₹ वह जब भी किसी से मिलता, उसकी बातचीत की शुरूआत होती, आपको शायद पता नहीं, मैं पहले भी कई बार न्यूयॉर्क जा चुका हूँ... फिर चाहे वह न्यूयॉर्क पास की मिठाई की दुकान क्यों न हो। राजन का संवाद-संग्रह एकतरफा था झ्र सामने वाला सुनता और राजन अपने महान कार्यों की बुलेट ट्रेन चलाता। मैं कॉलेज में टॉपर था,वह कहता, जबकि हकीकत में उसने गणित के पेपर में सवाल को कविता समझकर लिखा था झ्र ‖घटाना है जीवन, जोड़ना है अनुभव। एक दिन राजन ने ठान लिया कि छोटा शहर उसकी प्रतिभा के लिए छोटा पड़ रहा है। जैसे एक मोर को पिंजरे में बंद कर दिया गया हो। उसने एक बड़े शहर की ओर प्रस्थान किया, जहां उसे एक मल्टीनेशनल कंपनी में नौकरी मिल गई। पहले ही दिन ऑफिस में घुसते ही उसने घोषणा कर दी - मैं तो यहाँ उरफहेड बनने आया हूँ। जबकि नौकरी की प्रोफाइल थी -डाटा एंट्री ऑपरेटर। राजन ने अपने सहकर्मियों को बताना शुरू किया कि वह एक प्रसिद्ध लेखक हैं। मेरी कहानियाँ पढ़कर लोग रो पड़ते हैं। जब किसी ने पूछा, कहाँ छपी हैं? तो बोले झ्र ₹एक विदेशी जर्नल में, नाम याद नहीं आ रहा, कुछ फ्रेंच में था -शायद द वायर या द विडर। फिर बोले, छपने से पहले ही बेस्टसेलर घोषित हो गई थीं। उसने दावा किया कि वह एक राष्ट्रीय स्तर के क्रिकेटर रह चुके हैं। जब पूछा गया, किस टीम से खेले? तो राजन बोले झ्र ₹दिल्ली डॉलफि न्सङ्ग एक सीक्रेट टीम थी, इउउककको बताना भी मना था।₹ जब सबने हँसते हुए उसकी तरफ देखा तो उसने विषय बदल दिया झ्र ‖मेरी माँ एक अंतरराष्ट्रीय पेंटर थीं, जिनकी पेंटिंग्स आज भी पेरिस की गलियों में बिकती हैं - हाँ, गूगल पर नहीं मिलेंगी, वो ४ल्ली११₹४ल्र्१३२३ थीं। ऑफिस के लोग पहले तो उसकी बातों पर हँसते रहे, फिर ध्यान देना छोड़ दिया। अब जब भी राजन बोलता, तो कान बंद कर लिए जाते थे। ऑफिस में उसे फील-गुड चैनल कहा जाने लगा -फ्री में मूड ठीक करने वाली झूठी बातें सुननी हो तो राजन के पास चले जाओ। लेकिन एक दिन आफत आ गई झ्र दफ़्तर में नया बॉस आया। वह तेज, सख्त और ईमानदार था। राजन ने सोचा, चलो, इसे भी अपने झूठे पराक्रम से प्रभावित करूँ। उसने बॉस को देखते ही कहा, सर, मैं आपको पहले भी टेड टॉक में मिल चुका हूँ, मैं स्पीकर था- द आर्ट ऑफ मिलिटी पर बात की थी। बॉस ने घूरते हुए कहा, मुझे आपके बारे में बहुत कुछ सुनने को मिला है। लेकिन अब मैं खुद सुनना चाहता हूँ -आप असल में हैं क्या?

राजन ने झूठों की बरसात शुरू ही की थी कि बॉस ने हाथ उठा दिया -बस! आप या तो सच्चाई बताएँ या यहाँ से जाएँ। राजन को पहली बार लगा कि ज़िंदगी कोई सेल्फी नहीं है जिसे फिल्टर लगाकर सुंदर बना लिया जाए। उसने रुककर कहा, सर, मैं दरअसल एक आम इंसान हूँ, जो खास बनने का ढोंग करता रहा। बॉस मुस्कुराया और कहा, ₹सच बोलना भी एक कला है, जो मुश्किल जरूर है, लेकिन टिकाऊ है। आपको एक मौका दिया जाता है। आगे से झूठ मत बोलिए झ्र वरना अगला झूठ आपकी नौकरी ले जाएगा। उस दिन के बाद राजन बदल गया झ्र या यूँ कहिए कि उसके झूठों का पेट्रोल खत्म हो गया। अब वह ऑफिस में चुपचाप बैठा काम करता है। कभी-कभी जब पुरानी आदतें उभरती हैं, तो वह खुद से कहता है - राजन, खुद को महान बताना आसान है, महान बनना मुश्किल। और याद रख, झूठ जितना मीठा होता है, उसका पकड़ा जाना उतना ही कड़वा होता है।

लब्ध व नवीन साहित्यकारों के लिए संडे रिपोर्टर बेहतरीन प्लेटफॉर्म है। इसके माध्यम से आप अपनी रचनात्मक अभिव्यक्ति को जन-जन तक पहुंचा सकते हैं।
Email:- sundayreporter123@gmail.com
Whatsapp: 7239963000

शराब और स्टेरॉयड से कूल्हा, मिलावटी खाने से घुटने हो रहे खराब

यूथ के शराब और स्टेरॉयड के यूज से कूल्हे खराब हो रहे हैं। मिलावटी खाना, पैदल न चलने और फास्ट फूड का सेवन करने से घुटने दम तोड ? लगे हैं। ऐसे में कम उम्र में घुटना और कूल्हा प्रत्यारोपण करना पड़ रहा है। दरअसल, इंजीनियरिंग, मेडिकल समेत अन्य प्रोफेशनल के स्टूडेंट 18 से 20 साल की ऐज में शराब पीना शुरू कर देते हैं। वहीं, जिम जा रहे यूथ स्टेरॉयड पाउडर का यूज रहे हैं। इसका लगातार पांच साल सेवन करने से कूल्हे में एक वैस्कुलर नेक्रोसिस हो रही है, इससे कूल्हे की बॉल में खून की सप्लाई बाधित हो रही है। इससे बॉल सूखने लगती है और कूल्हा खराब हो जाता है, इस तरह के केस में दोनों कूल्हे खराब होते हैं। 25 से 30 साल की उम्र के युवा कूल्हे में दर्द और चलने फिरने में परेशानी होने पर इलाज कराने के लिए आ रहे हैं। ऐसे केस में कूल्हा बदलना पड़ रहा है। वहीं, मोटापा, आराम तलब जीवनशैली के साथ ही मिलावटी खाना, सब्जी में केमिकल और पेस्टीसाइड सहित अन्य हानिकारक केमिकल खाद्य पदार्थ और पानी के माध्यम से शरीर में पहुंच रहे हैं। इससे घुटने के कार्टिलेज खराब होने लगते हैं, 40 साल की उम्र में घुटने खराब होने लगे हैं।

यूथ के शराब और स्टेरॉयड के यूज से कूल्हे खराब हो रहे हैं। मिलावटी खाना, पैदल न चलने और फास्ट फूड का सेवन करने से घुटने दम तोड़ने लगे हैं। ऐसे में कम उम्र में घुटना और कूल्हा प्रत्यारोपण करना पड़ रहा है। दरअसल, इंजीनियरिंग, मेडिकल समेत अन्य प्रोफेशनल के स्टूडेंट 18 से 20 साल की ऐज में शराब पीना शुरू कर देते हैं...

15 से 20 मिनट धूप बहुत जरूरी

कानपुर आथथोर्पेडिक एसोसिएशन के सचिव व जीएसवीएम मेडिकल कॉलेज के आर्थो डिपार्टमेंट की एचओडी डॉ। चंदन कुमार ने बताया कि यूथ की अनियमित दिनचर्या और धूप न लेने की वजह से यह समस्या हो रही है। इसके अलावा अलकोहल व स्टेरॉयड का यूज करने से यह समस्या बीते कुछ सालों में और बढ़ गई है। उन्होंने बताया कि डेली 15 से 20 मिनट धूप अवश्य लेना चाहिए। इसके अलावा अलकोहल व स्टेरॉयड का यूज कम से कम करना चाहिए। जिससे भविष्य में आर्थो संबंधित समस्याओं से बचा जा सकेगा।

डेली ओपीडी में आते आधा दर्जन पेशेंट

डॉ. चंदन कुमार बताया की कानपुर आथोर्पेडिक एसोसिएशन की बीते दिनों हुई बैठक में कानपुर ही नहीं देश के विभिन्न सिटी से आथोर्पेडिक डॉक्टर्स आए थे। जिनकी स्टडी में यह निकला है कि यूथ की हड्डियां कमजोर हो रही है। इसके कई कारण है। जिसमें से एक अलकोहल और स्टेरॉयड का यूज भी है। इसका जीवंत उदाहरण बीते दिनों हुई पुलिस भर्ती में देखने को मिला। जिसमें रनिंग के दौरान डेली दो से तीन युवकों की हड्डियों में फ्रेक्चर हो जाता था।

स्ट्रेस फ्रैक्चर के भी बढ़े केसेस

कानपुर आथोर्पेडिक्स एसोसिएशन के पदाधिकारी डॉ। संतोष सिंह ने बीते दिनों हुए प्रोग्राम में स्ट्रेस फ्रेक्चर के बढ़ते पेशेंट पर चिंता जताई थी। उन्होंने बताया कि यह अचानक से अधिक वर्कआउट करने वालों में होता है। जैसे हाल ही में पुलिस भर्ती के फिजिकल टेस्ट के दौरान देखने को मिला था। उसमें भी यही देखा गया कि फिजिकल टेस्ट से कुछ समय पहले तैयारी करने से उनके पैर में फ्रेक्चर हुआ। इसे हम मार्च फ्रेक्चर भी कहते हैं। यहां तक की जोर से हंसने में भी चेस्ट की हड्डियों में भी फ्रेक्चर होने की आशंका होती है।

तपिश के बीच फंगल इंफेक्शन ने बढ़ाई परेशानी

जोधपुर। बढ़ते टेम्प्रेचर ने त्वचा की बीमारियों का खतरा भी बढ़ रहा है।

SUNDAY रिपोर्टर

फंगल संक्रमण के साथ सनबर्न, धूप से एलर्जी, दाद-खाज, घमौरियां और मुहांसे की समस्या लेकर बड़ी संख्या में मरीज हैलट के त्वचा रोग विभाग की ओपीडी में पहुंच रहे हैं। पिछले 15 दिन से तापमान वृद्धि के साथ ही ओपीडी में फंगल संक्रमण के मरीजों की संख्या भी बढ़ गई है। ओपीडी में पहुंच रहे हर दूसरे मरीज में फंगल संक्रमण और सनबर्न की समस्या मिल रही है।

धूप, धूल से बढ़ी समस्या

जीएसवीएम मेडिकल कालेज के स्किन डिपार्टमेंट के एचओडी डॉ. डीपी शिवहरे ने बताया कि भीषण गर्मी में त्वचा रोग और फंगल संक्रमण हर बार बढ़ता है। गर्म और आर्द्र मौसम फंगस को बढ़ाता है। जब हमारे शरीर में पसीना अधिक आता है तो सिर के साथ शरीर के कई भाग में इस प्रकार की समस्या बढ़ जाती है। ओपीडी में पहुंच रहे ज्यादातर मरीजों में अधिक समय तक धूप के साथ धूल युक्त वातावरण में रहने के कारण इस प्रकार की समस्या मिल रही है।

ढीले कपड़े पहनें

इससे बचाव के लिए मरीजों के नियमित रूप से स्नान करने, ढीले कपड़े पहनने, खुद को हाइड्रेटेड रखने की सलाह दी जा रही है। इसके साथ ही तेज धूप में निकलने से पहले सनस्क्रीन लगाने और सिर को ढकने के लिए कहा जा रहा है। उन्होंने बताया कि पिछले 15 दिनों में अचानक ऐसे मरीजों की संख्या बढ़ गई है। हर दिन ओपीडी में 200 से ज्यादा मरीज इस प्रकार की समस्या लेकर पहुंच रहे हैं।

गर्मी में बच्चों को डायरिया और डिहाइड्रेशन का ज्यादा खतरा

इन 7 लक्षणों को न करें नजर अंदाज

साफ-सफाई और खान-पान का रखें विशेष ध्यान

जोधपुर। मई का महीना आधे से ज्यादा बीत चुका है। हर बीतते दिन के साथ तापमान में बढ़ोत्तरी देखने को मिल रही है। ऐसे में भीषण गर्मी और लू के कारण छोटे बच्चों में डिहाइड्रेशन, डायरिया, उल्टी-दस्त और बुखार जैसी स्वास्थ्य समस्याएं तेजी से बढ़ने लगती हैं। अस्पतालों में इन समस्याओं से पीड़ित बच्चों की संख्या में भी इजाफा होने लगता है। यह स्थिति खासकर कमजोर और कुपोषित बच्चों के लिए जानलेवा साबित हो सकती है। अगर डायरिया या डिहाइड्रेशन के लक्षणों को नजरअंदाज किया जाए तो यह गंभीर रूप ले सकता है। इसलिए जरूरी है कि गर्मी के इस मौसम में बच्चों की सेहत पर खास ध्यान दिया जाए और किसी भी लक्षण को हल्के में न लिया जाए। तो चलिए, आज जरूरत की खबर में बात करेंगे कि गर्मी में बच्चों को किन बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है? साथ ही जानेंगे कि- डायरिया बच्चों के लिए कितना खतरनाक है? इसके खतरे से कैसे बचा जा सकता है?

SUNDAY रिपोर्टर

डायरिया क्या है?

यह एक पेट की बीमारी है, जिसमें बार-बार पतला या पानी जैसा दस्त (मल) होने लगता है। यह तब होता है, जब पेट सही से खाना नहीं पचा पाता या किसी तरह का इन्फेक्शन हो जाता है। इसका सबसे ज्यादा खतरा बच्चों को होता है। डायरिया में शरीर से पानी और नमक (सोडियम) तेजी से निकल जाता है, जिससे बच्चा सुस्त और डिहाइड्रेट हो सकता है।

हर साल डायरिया से कितने बच्चों की मौत होती है?

विश्व स्वास्थ्य संगठन के मुताबिक, डायरिया से हर साल 5 वर्ष से कम उम्र के करीब 4.43 लाख और 5-9 वर्ष की उम्र के लगभग 50 हजार से ज्यादा बच्चों की मौत होती है। इसलिए इसके लक्षणों को बिल्कुल भी नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। नीचे दिए ग्राफिक में डायरिया के लक्षण देख सकते हैं।

बच्चों में डायरिया का खतरा ज्यादा क्यों होता है?

बच्चों का शरीर पूरी तरह विकसित नहीं होता, इसलिए उनकी इम्यूनिटी कमजोर होती है। अक्सर बच्चे बिना हाथ धोए खाना खा लेते हैं या गंदे खिलौने और अन्य सामान मुंह में डाल लेते हैं। इससे बैक्टीरिया और वायरस उनके पेट में चले जाते हैं, जिससे डायरिया हो सकता है। गर्मी के मौसम में इन्फेक्शन फैलने का खतरा और बढ़ जाता है, इसलिए यह समस्या आम हो जाती है। इसके मुख्य कारण ग्राफिक से समझिए-

गर्मी में नवजात शिशुओं की देखभाल में कौन-कौन सी सावधानियां बरतनी चाहिए?

डॉ. अंशु शर्मा बताती हैं कि नवजात शिशु का शरीर बहुत नाजुक होता है। तापमान में हल्का-सा बदलाव भी उनके लिए खतरनाक साबित हो सकता है। उनकी देखभाल में बेहद सावधानी की जरूरत होती है। इसलिए नीचे दी गई कुछ बातों का विशेष ध्यान रखें।

केवल मां का दूध पिलाएं

6 महीने तक के शिशु को सिर्फ मां का दूध ही पिलाना चाहिए। यही उसका खाना, पानी और दवा है।

- **शिशु के लिए चुनें हवादार कमरा:** जन्म से करीब 6 महीने तक उसे सीधी धूप, गर्म कमरे या भीड़भाड़ वाली जगहों पर न ले जाएं। एसी या कूलर की हवा सीधे न लगने दें, लेकिन कमरे को ठंडा रखें।
- **हल्के और सूती कपड़े पहनाएं:** बच्चे को ढीले, हल्के रंग के कॉटन कपड़े पहनाएं। अगर बच्चे के कपड़े बार-बार कपड़े गीले हों तो उन्हें तुरंत बदलें।
- **डायपर की सफाई और चेकिंग:** गर्मी में रैशेज का खतरा बढ़ता है, इसलिए डायपर समय पर बदलें और स्किन को सूखा रखें।
- **नहलाने में सावधानी:** रोज हल्के गुनगुने या सामान्य ताजे पानी से नहलाएं। नहलाने के तुरंत बाद शरीर से सुखाकर कपड़े पहनाएं।
- **साफ-सफाई का खास ध्यान रखें:** नवजात को गोद लेने से पहले हाथ जरूर धोएं। साथ ही बच्चे के आसपास साफ-सफाई का पूरा ध्यान रखें।
- **बुखार, सुस्ती या रोने पर डॉक्टर से संपर्क करें:** अगर न्यू बोर्न बेबी को पसीना ज्यादा आ रहा हो, वह दूध नहीं पी रहा हो, सुस्त हो या लगातार रो रहा हो तो ये डिहाइड्रेशन या इन्फेक्शन का संकेत हो सकता है। ऐसी स्थिति में तुरंत डॉक्टर से संपर्क करें।

भीषण गर्मी में बच्चों के खान-पान और हाइड्रेशन को लेकर क्या सावधानियां बरतनी चाहिए?

गर्मी में बच्चे बहुत जल्दी थकते हैं, उन्हें पसीना ज्यादा आता है और शरीर में पानी की कमी जल्दी हो सकती है। ऐसे में उनका खान-पान और पानी पीने की आदत पर खास ध्यान देना जरूरी है। उसे छाछ, गन्ने का जूस, नारियल पानी जैसे हेल्दी ड्रिंक्स भी दे सकते हैं।

- **हल्का और ताजा खाना दें:** बच्चों को गर्मियों में ऐसा खाना दें, जो आसानी से पच जाए। जैसे दाल-चावल, रोटी-सब्जी, खिचड़ी। बासी या बाहर का खाना बिल्कुल न दें।
- **ताजे फल खिलाएं:** तरबूज, खरबूजा, पपीता, आम, खीरा, ककड़ी जैसे फल बच्चों के शरीर को ठंडक देते हैं। साथ ही शरीर में पानी की कमी नहीं होने देते हैं।
- **ज्यादा मसालेदार या तला-भुना खाना न दें:** बच्चों को तीखा, ज्यादा तला-भुना या तेल वाला खाना बिल्कुल नहीं देना चाहिए। इससे पेट खराब हो सकता है।
- **हमेशा बच्चों की बोतल भरकर रखें:** अगर बच्चा स्कूल जाता है तो उसे साफ पानी की बोतल दें। उसे ये भी बताएं कि थोड़ी-थोड़ी देर में पानी पीते रहना कितना जरूरी है।

किस स्थिति में डॉक्टर को दिखाना जरूरी है?

अगर डायरिया के लक्षण दो दिन से ज्यादा दिखे तो तुरंत डॉक्टर को दिखाना चाहिए। अगर मल में खून दिखे, तेज बुखार हो, बार-बार उल्टी हो या बच्चा बहुत सुस्त लगे तो यह भी खतरे के संकेत हो सकते हैं। छोटे बच्चों, बुजुर्गों और कमजोर शरीर वाले लोगों में डायरिया जल्दी गंभीर हो सकता है। इसलिए उनके मामले में किसी भी लक्षण को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए।

सरकारी स्कूल श्याम सदन उच्च माध्यमिक विद्यालय का अनोखा नवाचार

विद्यार्थियों के लिए बनाया डिजिटल कार्ड

क्यूआर कोड स्कैन कर पेरेंट्स देख सकते बच्चे की 360 डिग्री जानकारी

जोधपुर। जिले के श्याम सदन उच्च माध्यमिक विद्यालय में एक अनोखा नवाचार किया गया है। विद्यालय में इस बार डिजिटल रिपोर्ट कार्ड या प्रोग्रेस कार्ड की शुरूआत हुई है। इसके तहत पहली कक्षा के विद्यार्थियों के लिए रोचक और आकर्षक डिजिटल कार्ड बनाया है, जिसमें बच्चे की सभी तरह की एजुकेशनल व फिजिकल और मेंटल एक्टिविटी को शामिल किया गया है। इसे अभिभावक कार्ड पर प्रकाशित क्यूआर कोड से वीडियो देख सकते हैं।

विद्यालय की प्रिंसिपल शीला आसोपा का कहना है कि यह पायलट प्रोजेक्ट है। इसे हर साल कक्षा दर कक्षा बढ़ाएंगे। पहले प्रयास को काफी सराहा गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत बच्चों के समग्र विकास पर बल दिया गया है। इसे ध्यान में रखते हुए हमने बच्चों की मानसिक, शारीरिक, बौद्धिक, तकनीकी ज्ञान को शामिल करते हुए 360 डिग्री जानकारी इस कार्ड में शामिल किया है। इस प्रगति पत्र का नाम ज्ञानोदय एवं समग्र बाल विकास प्रगति दर्पण डिजिटल कार्ड रखा गया है। मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी सीमा शर्मा ने प्रिंसिपल आसोपा के नवाचार की सराहना की है।

तुलनात्मक विश्लेषण, सकारात्मक रुझान: डिजिटल कार्ड में सामान्य परीक्षा के प्रत्येक विषय में कक्षा के समस्त विद्यार्थियों को प्राप्त ग्रेड के बहुलक मान से विद्यार्थी को प्राप्त ग्रेड का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है, जिसे कार्ड में बार ग्राफ के रूप में आकर्षक रूप में प्रदर्शित किया गया है। अध्यापिका शकुंतला चौधरी का कहना है कि इस प्रगति पत्र को फिजिकल देखने पर भी आकर्षक बनाया गया, जिसे देख बच्चे काफी खुश थे। इसके अलावा क्यूआर कोर्ड से वीडियो देखने से भी उत्साहित थे। अभिभावकों ने इस पहल को काफी सकारात्मक लिया। उनका कहना था कि इसे प्राथमिक स्तर पर सभी कक्षाओं में लागू करना चाहिए।

खेल आधारित शिक्षण भी माध्यम

इस नवचार के अंतर्गत कक्षा कक्षों के बाहर खेल आधारित मूल्यांकन तकनीक को अपनाया गया है, जो बच्चे कक्षा में नहीं समझ पाते हैं उनके लिए यह बहुत सरल तरीका है। इसके लिए अंग्रेजी, हिंदी और गणित की ट्रेजर हंट खेल की प्लेयिंग मेट के माध्यम से मूल्यांकन किया गया। खेल-खेल में किए गए विद्यार्थी के सुधार के बिंदुओं को कार्ड में आकर्षक रूप से प्रदर्शित किया गया है। खेल आधारित आंकलन के फोटो व वीडियो क्यूआर से देखे जा सकते हैं। स्वास्थ्य की स्थिति प्रदर्शित करने के लिए बालक का इटक (बॉडी मास इंडेक्स) के मापदंड दर्शाए गए हैं, जिससे उसके स्वास्थ्य की जानकारी मिलती है। इसके अलावा स्वच्छता संबंधित ज्ञान के लिए हैंड वॉश हाइजेनिक का ग्रेड शामिल किया गया है।

सरकारी स्कूल की अनूठी पहल: पढ़ाई के साथ पोषण भी

बच्चे सीख रहे जैविक खेती, स्कूल में उग रही सब्जियां

जोधपुर। शिक्षा केवल किताबी ज्ञान तक सीमित नहीं रहनी चाहिए, बल्कि उसमें जीवन के जरूरी कौशल और स्वस्थ आदतें भी शामिल होनी चाहिए। इसी सोच के साथ दौसा जिले के सिकराय उपखंड में स्थित बाणे का बरखेड़ा गांव का एक सरकारी विद्यालय नई मिसाल कायम कर रहा है। जानिए इस सरकारी विद्यालय की अनोखी पहल के बारे में ।

यह विद्यालय न सिर्फ शिक्षा के क्षेत्र में बेहतरीन कार्य कर रहा है, बल्कि बच्चों के स्वास्थ्य और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने की दिशा में भी महत्वपूर्ण कदम उठा रहा है। यहां के छात्र न केवल गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं, बल्कि वे पोषण से भरपूर जैविक भोजन भी ग्रहण कर रहे हैं, जिसे विद्यालय के किचन गार्डन में ही उगाया जाता है। इस अनूठी पहल ने विद्यालय को प्रदेशभर में चर्चा का केंद्र बना दिया है और अभिभावकों को भी यह भरोसा दिलाया है कि उनके बच्चे एक स्वस्थ और समृद्ध वातावरण में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

स्कूल में ही विकसित किया किचन गार्डन : विद्यालय में एक विशेष किचन गार्डन तैयार किया गया है, जहां बिना किसी रासायनिक खाद के शुद्ध और ताजी सब्जियां उगाई जाती हैं। यह पहल न केवल बच्चों को स्वस्थ आहार प्रदान कर रही है, बल्कि उन्हें जैविक खेती के गुर भी सिखा रही है। स्कूल के उप प्राचार्य रामचरण शर्मा ने बताया कि शुरूआत में इस पहल के लिए काफी समस्याओं का सामना करना पड़ा, जिसमें सिंचाई के लिए पानी की समस्या सबसे बड़ी थी, लेकिन स्थानीय ग्रामीणों और जनप्रतिनिधियों के सहयोग से टैंकर के जरिए विद्यालय में पानी की आपूर्ति हो रही है। इससे किचन गार्डन को बेहतर तरीके से संचालित किया जा रहा है।

2500 वर्गफीट में फैला किचन गार्डन

विद्यालय के शिक्षकों, छात्रों और रसोइयों के सहयोग से लगभग 2500 वर्गफीट क्षेत्र में किचन गार्डन तैयार किया गया है। यहां विभिन्न प्रकार की हरी सब्जियां जैविक तरीकों से उगाई जाती हैं। यह पहल छात्रों के लिए दोहरी लाभकारी साबित हो रही है, क्योंकि एक ओर उन्हें स्वास्थ्यवर्धक भोजन मिल रहा है, तो दूसरी ओर वे खेती के बारे में भी महत्वपूर्ण ज्ञान प्राप्त कर रहे हैं। शिक्षकों के अनुसार, इस गार्डन की देखभाल में छात्रों की भागीदारी सराहनीय है और यह उन्हें आत्मनिर्भर बनने की दिशा में प्रेरित कर रही है।

स्कूल के किचन गार्डन में लगी पालक : पोषाहार संचालिका आशा देवी के अनुसार, विद्यालय में सप्ताह में छह दिन अलग-अलग मेन्यू के अनुसार भोजन तैयार किया जाता है। इसमें दाल-पालक, आलू-पालक, गोभी-मटर, बैंगन, टमाटर, मूली, शलजम, लौकी और धनिया जैसी ताजी सब्जियां शामिल होती हैं। ये सारी सब्जियां स्कूल के गार्डन में उगाई जाती हैं। इस तरह का विविध और पोषणयुक्त आहार बच्चों के मानसिक और शारीरिक विकास में सहायक साबित हो रहा है। बच्चों को हर दिन ताजे और जैविक पोषण का लाभ मिल रहा है, जिससे उनकी सेहत में भी सुधार देखा जा रहा है।

छात्रों के उज्जवल भविष्य की ओर कदम : विद्यालय में जैविक खेती को बढ़ावा देकर छात्रों को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण प्रयास किया जा रहा है। इससे न केवल उन्हें पौष्टिक आहार मिल रहा है, बल्कि वे अपने आसपास की भूमि का सदुपयोग करना भी सीख रहे हैं। शिक्षक नियमित रूप से छात्रों को खेती की बारीकियों से परिचित कराते हैं, जिससे वे भविष्य में भी इस ज्ञान का उपयोग कर सकते हैं। बाणे का बरखेड़ा गांव का यह विद्यालय शिक्षा और स्वास्थ्य का बेहतरीन उदाहरण प्रस्तुत कर रहा है, यदि अन्य विद्यालय भी इस मॉडल को अपनाएं, तो बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के साथ-साथ उत्तम स्वास्थ्य भी सुनिश्चित किया जा सकता है। यह पहल अन्य सरकारी विद्यालयों के लिए भी प्रेरणा बन सकती है, जिससे शिक्षा और पोषण दोनों में सुधार किया जा सके।

लंच के समय छात्र करते हैं देखभाल

उप प्राचार्य रामचरण शर्मा ने बताया कि विद्यालय में अध्ययनरत छात्र न केवल अपनी पढ़ाई पर ध्यान देते हैं, बल्कि लंच ब्रेक के दौरान किचन गार्डन की देखभाल भी करते हैं। वे खुद जैविक खाद तैयार करते हैं और खेती के छोटे-छोटे गुर सीखते हैं। इनमें से कई छात्रों के परिवार खेती से जुड़े हुए हैं, जिससे वे अपने घरों पर भी इस ज्ञान का उपयोग कर रहे हैं। इस पहल से विद्यार्थियों में प्रकृति के प्रति जागरूकता और आत्मनिर्भरता की भावना भी विकसित हो रही है।

2 हजार रुपए की होती है बचत

विद्यालय के शिक्षक हेमराज मीना ने बताया कि पहले मिड-डे मील के लिए हर महीने लगभग 2 हजार रुपए की सब्जियां बाजार से खरीदी जाती थीं, लेकिन अब किचन गार्डन से सब्जियां मिलने के कारण यह राशि बच रही है। इस बचत से विद्यालय की अन्य आवश्यकताओं को पूरा करने में मदद मिल रही है। इससे यह भी साबित होता है कि थोड़ी सी कोशिश और समर्पण से बड़ी बचत और बेहतरीन गुणवत्ता प्राप्त की जा सकती है।

कला वर्ग में उर्मिला तिगाया ने लहराया परचम

महादेव आदर्श विद्या मंदिर बालरवा की होनहार छात्रा ने कला वर्ग में हासिल किए 99. 60% अंक

जोधपुर । राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अजमेर ने गुरुवार को 12वीं कक्षा के परीक्षा परिणामों की घोषणा कर दी है। इस बार की सबसे अहम बात यह रही कि विज्ञान, वाणिज्य और कला तीनों संकायों के नतीजे एक साथ शाम 5 बजे जारी किए गए। इससे राज्य भर के लाखों विद्यार्थियों को लंबे इंतजार से राहत मिली। परिणाम जारी करने के अवसर पर शिक्षा मंत्री मदन दिलावर वर्चुअली शामिल हुए, जबकि बोर्ड प्रशासक और अजमेर संभागीय आयुक्त महेश चंद्र शर्मा ने बोर्ड मुख्यालय से रिजल्ट जारी किया। इस अवसर पर बोर्ड के सचिव कैलाश चंद्र शर्मा और अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित रहे। बता दें कि विज्ञान संकाय का कुल परिणाम 98.43% रहा इस वर्ग में छात्राओं का प्रदर्शन शानदार रहा। छात्राओं का उत्तीर्ण प्रतिशत 99.02% रहा, जबकि छात्रों का परिणाम 98.07% दर्ज किया गया। कॉमर्स में छात्रों का उत्तीर्ण प्रतिशत 99.27% और छात्राओं का 98.97% रहा।

हासिल किए 99.60% अंक: कला वर्ग में महादेव आदर्श विद्या मंदिर सीनियर सेकेंडरी स्कूल बालरवा की छात्रा उर्मिला तिगाया ने 99.60% अंक हासिल कर राजस्थान में संभवत पहला स्थान प्राप्त किया है। उर्मिला ने अपनी सफलता का श्रेय माता-पिता व महादेव आदर्श विद्या मंदिर के संचालक भीखाराम खोरवाल व स्कूल स्टाफ को दिया। उन्होंने बताया कि खोरवाल सर ने पढ़ाई में उनकी काफी मदद की है कक्षा 1 से 12वीं तक उन्होंने इसी स्कूल से शिक्षा अर्जित की। उर्मिला का कहना है कि यूपीएससी क्लियर कर वह भारतीय प्रशासनिक सेवा में जाना चाहती है।

8.93 लाख से अधिक विद्यार्थियों ने दी परीक्षा

बोर्ड सचिव कैलाश चंद्र शर्मा ने बताया कि इस वर्ष कक्षा 12वीं की परीक्षा के लिए कुल 8,93,616 विद्यार्थियों ने पंजीकरण कराया था। इनमें से विज्ञान संकाय के 2,73,984, वाणिज्य संकाय के 28,250 और कला संकाय के 5,87,475 विद्यार्थी थे। इसके अलावा वरिष्ठ उपाध्याय परीक्षा के लिए 3,907 परीक्षार्थियों ने आवेदन किया था। परीक्षाएं 6 मार्च से प्रारंभ हुई थीं और राज्य भर के विभिन्न परीक्षा केंद्रों पर सुचारु रूप से संपन्न हुई थी। पहरए ने पिछले वर्ष की तरह इस वर्ष भी तीनों संकाय साइंस, कॉमर्स और आर्ट्स का परिणाम एक साथ घोषित कर विद्यार्थियों को समान अवसर प्रदान किया है। बोर्ड का मानना है कि इस निर्णय से छात्रों में किसी प्रकार की तुलना या मानसिक दबाव नहीं बनता और पारदर्शिता बनी रहती है।

मजदूर परिवार की बेटी ने हासिल किए 94% अंक

जोधपुर/तिवरी। जोधपुर के तिंवरी गांव के साधारण मजदूर परिवार की बेटी जेठी कटारिया ने 12वीं कला वर्ग में 94% प्रतिशत अंक हासिल कर न केवल परिवार बल्कि गांव को भी नाम रोशन किया है। उसका सपना यूपीएससी क्रैक कर भारतीय प्रशानिक सेवा की अधिकारी बनने का है। वह अपनी सफलता का श्रेय अपने माता-पिता प गुरुजनों को देते हुए बताती हैं कि माता-पिता व गुरुजनों के बदौलत ही उसने यह मुकाम हासिल किया है।

तिंवरी के श्याम चौहान बताते हैं कि जेठी कटारिया के पिता सियाराम कटारिया की आर्थिक स्थिति सामान्य है, लेकिन जेठी कटारिया ने कठिनाइयों को पीछे छोड़कर अपनी लगन और मेहनत से सफलता की नई कहानी लिखी है। जेठी का सपना आईएएस अधिकारी बनकर देश की सेवा करना है। बचपन से ही पढ़ाई में होशियार और मेहनती रही जेठी ने बताया कि उनकी सफलता का राज निरंतर प्रयास, परिवार का साथ और स्कूल स्टाफ का समर्पण है। दसवीं में अच्छे अंक पाने के बाद से ही उसने कड़ी मेहनत शुरू कर दी थी। सियाराम कटारिया बताते हैं कि परिवार में सीमित संसाधनों के बावजूद सभी सदस्य एक-दूसरे का पूरा सहयोग करते हैं। कटारिया की इस उपलब्धि ने पूरे परिवार और क्षेत्र के लोगों को गर्व महसूस कराया है। स्कूल के शिक्षक और प्रबंधन भी उसकी मेहनत और संकल्प को सलाम करते हैं।

कानून मंत्री की पोती को नकल करते पकड़ा

जोधपुर में सिविल इंजीनियरिंग की परीक्षा में चीटिंग, कैलकुलेटर के कवर पर थे नोट्स

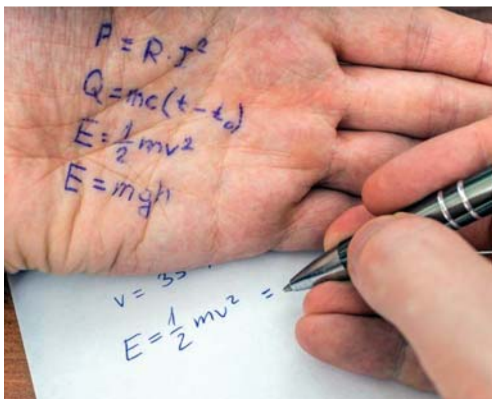

जोधपुर। राजस्थान के कानून मंत्री की पोती को इंजीनियरिंग की परीक्षा में नकल करते हुए पकड़ा है। मामला जोधपुर की मगनीराम बांगड मेमोरियल यूनिवर्सिटी से जुड़ा है। कैंपस में इन दिनों सेमेस्टर एग्जाम हो रहे हैं। गुरुवार एन्वायरमेंटल इंजीनियरिंग की परीक्षा थी। इसी में केबिनेट मंत्री की पोती भी एग्जाम दे रही थी। फ्लाइंग टीम निरीक्षण के लिए पहुंची तो स्टूडेंट के पास रखे कैलकुलेटर के कवर पर पेंसिल से नोट्स लिखे मिले।

केस बनाकर स्टूडेंट को दी दूसरी कॉपी: परीक्षा हॉल में स्टूडेंट्स की जांच के लिए पहुंची फ्लाइंग टीम में दो शिक्षक थे। कैलकुलेटर के कवर कुछ लिखा होने की जानकारी के बाद स्टूडेंट्स से दोनों पूछताछ भी की थी। टीम के सदस्य डॉ. अंशु अग्रवाल व डॉ. मनीष कुमार ने नकल का केस बनाकर स्टूडेंट को दूसरी कॉपी दिलवा दी। इसके बाद टीम ने नकल का मामला मानते हुए विवि प्रबंधन को अपनी रिपोर्ट सौंप दी। वहीं, केंद्र अधीक्षक डॉ. श्रवणराम ने अपनी रिपोर्ट में कैलकुलेटर पर लिखे हुए को अस्पष्ट बताते हुए नकल का केस नहीं मानना बताया। इस मामले में पुलिस में कोई शिकायत नहीं दी गई है। ऐसे में अब विवि की कमेटी ही इस पर निर्णय करेगी कि यह केस नकल की श्रेणी में आने योग्य है या नहीं।

सब कमेटी अध्यक्ष पद से हटाया जाए: बेनिवाल

नकल केस सामने आने के बाद सांसद हनुमान बेनीवाल ने गुरुवार रात सोशल मीडिया पर एक पोस्ट किया। इसमें उन्होंने कानून मंत्री पर कई आरोप लगाए हैं।

राजस्थान से 10 दिनों में 301 बांग्लादेशियों को किया डिपोर्ट

जोधपुर। भारत में अवैध तरीके से रहने वाले बांग्लादेशी नागरिकों को उनके देश भेजने की कार्रवाई राजस्थान में तेज हो गई है। शुक्रवार को बांग्लादेश के 153 और नागरिकों को डिपोर्ट किया गया। जयपुर व सीकर से आए इन बांग्लादेशी नागरिकों को जोधपुर वायुसेना स्टेशन लाकर विमान से अगरतला भेजा गया, जहां से उन्हें बांग्लादेश भेजा जाएगा। खुफिया एजेंसियों ने पूरी कार्रवाई को गोपनीय रखा है।

इसी कड़ी में शुक्रवार को जयपुर व सीकर से पुलिस की कड़ी सुरक्षा में अलग-अलग बसों में 153 बांग्लादेशी नागरिक जोधपुर लाए गए, जहां वायुसेना स्टेशन ले जाया गया। फिर एयर इंडिया के विमान से सभी को अगरतला भेजा गया, जहां से उन्हें बांग्लादेश में भेजा जाएगा।

राजस्थान में अवैध प्रवासियों के खिलाफ बड़े पैमाने पर कार्रवाई के तहत 14 से 23 मई के बीच कुल 301 बांग्लादेशी घुसपैठियों को वापस भेजा गया है। एक अधिकारी ने शुक्रवार को बताया कि दूसरे चरण के निर्वासन में 153 बांग्लादेशी नागरिकों को जोधपुर हवाई अड्डे से एयर इंडिया की विशेष उड़ान से पश्चिम बंगाल भेजा गया। वहां से सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) उन्हें बांग्लादेश को सौंपने में मदद करेगी।

पहले चरण में 148 बांग्लादेशी डिपोर्ट किए गए: 14 मई को पहले चरण में 148 घुसपैठियों को वापस भेजा गया था। बांग्लादेश सरकार को अपने नागरिकों के वापस भेजे जाने की विधिवत सूचना दे दी गई है। पहलगाम में आतंकवादी हमले के बाद निर्वासन अभियान में तेजी आई। इसके जवाब में मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा ने जिला अधिकारियों को राजस्थान में रह रहे अवैध बांग्लादेशी और रोहिंग्या प्रवासियों की पहचान करने और उन्हें हिरासत में लेने का निर्देश दिया था।

सरकार के आदेश पर तेज हुई कार्रवाई: केंद्र से मिले निदेशों के क्रम में सीएम के आदेश पर पूरे प्रदेश में यह अभियान तुरंत शुरू किया गया। कई घुसपैठिए कई जिलों में फर्जी पहचान के साथ रहते पाए गए। इस अभियान के दौरान 1,000 से अधिक व्यक्तियों को गिरफ्तार किया गया, जिनमें से अधिकांश के पास वैध भारतीय पहचान दस्तावेज नहीं थे। सूत्रों के अनुसार, जब्त किए गए कई प्रमाण पत्र जाली थे और यह पता लगाने के लिए जांच चल रही है कि ये दस्तावेज कैसे और किसकी मदद से बनाए गए।

सीकर में सबसे अधिक बांग्लादेशी

सीकर से 394 बांग्लादेशी नागरिकों को गिरफ्तार किया गया। अजमेर में 31 बांग्लादेशी नागरिकों को गिरफ्तार किया गया है। जयपुर में लगभग 218 बांग्लादेशियों को गिरफ्तार किया गया और अलवर से 117 लोगों को गिरफ्तार किया गया। जांच के दौरान पता चला कि सीकर में सबसे अधिक संख्या में अवैध बांग्लादेशी प्रवासी पाए गए। ये घुसपैठिए अपनी पहचान छिपाते हुए कई तरह के व्यवसायों में लगे हुए थे।

भारत में कबाड़ी का काम करते हैं बांग्लादेशी: प्रदेश भर में गिरफ्तार हुए बांग्लादेशी नागरिकों में महिलाएं ज्यादातर घरेलू कामों में लगी हुई थीं, जबकि पुरुष कबाड़ व्यापारी, खदान मजदूर, ईंट भट्ठा मजदूर, कचरा बीनने वाले और निर्माण मजदूर के रूप में काम करते थे। बंदियों में से कुछ की आपराधिक पृष्ठभूमि भी है।

SUNDAY रिपोर्टर
OFF THE BEAT
जोधपुर 25 मई 2025
वर्षः 11 अंकः 3
मूल्यः 10 पृष्ठः 22
www.facebook.com/sundayreporter
Approved By Government of India
Email: sundayreporter123@gmail.com

कला वर्ग में उर्मिला तिगाया ने लहराया...

सूर्यनगरी में सिविर हिटवेव अटैक

जोधपुर। पश्चिमी राजस्थान सहित समूचा राजस्थान भीषण गर्मी का सामना कर रहा है । मौसम विभाग के मुताबिक आने वाले दिनों में तपिश और बढ़ेगी। इसकी एक वजह 25 मई से शुरू होने वाला नौतपा है। ज्योतिषविदों के अनुसार, सूर्य जब रोहणी नक्षत्र में गमन करता है तो नौतपा होता है। इस दौरान तेज गर्मी पड़ती है। मौसम विभाग की मानें तो रविवार को बीकानेर, हनुमानगढ़, जैसलमेर, जोधपुर व श्रीगंगानगर में हीटवेव चलेगी। इधर जोधपुर कलेक्टर गौरव अग्रवाल ने आमजन से भीषण गर्मी को लेकर गाइडलाइन की पालना करने की अपील की। कलेक्टर अग्रवाल ने बताया कि गर्मी के बढ़ते प्रभाव को देखते हुए प्रशासन ने तैयारियां कर रखी है। अत्यधिक आवश्यकता होने पर ही घर से निकलें।

- नौतपा से पहले भंयकर तपिश
- अस्पतालों में बनाए गए विशेष वार्ड
- प्रदेश में परवान पर पारा परवान
- फिलहाल, राहत की संभावना नहीं
- 25 मई से शुरू होगा नौतपा
- प्रशासन ने जारी की गाइडलाइन

25 को सूर्य रोहिणी नक्षत्र में, 9 दिन तेज गर्मी

पंडित राजेश दवे के अनुसार नौपता के वैज्ञानिक और ज्योतिषी दोनों प्रकार के महत्व हैं। वैज्ञानिक कारण के अनुसार सूर्य पृथ्वी के नजदीक होता है तो किरण सीधे गिरने से गर्मी तेज होती है तो ज्योतिषीय कारणों की मानें तो सूर्य के रोहणी नक्षत्र में गमन करने से चंद्रमा की शीतलता बाधित होती है। इससे भी गर्मी बढ़ती है। ज्येष्ठ मास में हर वर्ष यह प्रक्रिया होती है। सूर्य जब ज्येष्ठ मास में रोहणी नक्षत्र में आता है तो ऐसा होता है। इस बार 25 मई की सुबह तीन बजकर 26 मिनट पर यह परिवर्तन होगा। रोहणी नक्षत्र का मान 13 डिग्री और बीस मिनट है। सूर्य को घूमने में 14 से 15 दिन लगते है। इसमें शुरू के नौ दिन गर्मी तेज पड़ती है। इसका वैज्ञानिक कारण यह है कि पृथ्वी व सूर्य के बीच की दूरी कम होती है या यों कहें तो दोनों एक दूसरे के सामने ऐसे एंगल में होते हैं, इससे सूर्य की किरण सीधे पृथ्वी पर गिरती है तो तापमान में वृद्धि होती है।

12 बजे ही पारा 40 पार

जोधपुर में शनिवार सुबह से ही प्रचंड गर्मी रही। दोपहर 12 बजे तक पारा 42 डिग्री सेल्सियस पहुंच गया। इसके चलते सड़कें सूनी नजर आने लगी। दोपहर में यातायात पुलिस ने शहर के प्रमुख चौराहों को रेड लाइट फ्री करना शुरू कर दिया है। तेज गर्मी यानी अच्छी बारिश, नौ दिन में बारिश यानी आगे कमीः माना जाता है कि नौतपा में भीषण गर्मी पड़ती है तो उस मानसून में बारिश अच्छी होती है। यह भी माना जाता है कि इन नौ दिनों में अगर बारिश हो जाती है तो मानसून में बारिश की कमी हो सकती है।

अस्पतालों में किए इंतजाम

जिला कलेक्टर अग्रवाल ने बताया कि राज्य सरकार के निर्देश पर जिले के सभी अस्पतालों का निरीक्षण कराया गया। यहां गर्मी से बचने के व्यापक इंतजाम किए हैं। हीट एंड स्ट्रोक के मरीजों के लिए वार्ड बनाए हैं।

यह है गाइडलाइन

- दोपहर 12 से 4 बजे के बीच घर से बाहर निकलने से बचें
- हल्के रंग के सूती कपड़े पहनें
- पानी और इलेक्ट्रोलाइट्स का नियमित सेवन करें
- वृद्ध, बच्चे और बीमार लोग विशेष सावधानी बरतें
- अत्यधिक गर्मी महसूस होने पर तत्काल छाया या ठंडे स्थान पर जाएं ...

तापमान 45 डिग्री पार

जोधपुर में भीषण गर्मी का प्रकोप जारी है। शहर का तापमान लगातार 40 डिग्री सेल्सियस से ऊपर बना हुआ है, जिसके चलते मौसम विभाग ने शुक्रवार और शनिवार के लिए हीटवेव का ऑरेंज अलर्ट जारी कर दिया है। गुरुवार को अधिकतम तापमान 43.3 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान 31.5 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। भीषण गर्मी के कारण लोग तीखी धूप से बचने के लिए अलग-अलग पारंपरिक तरीकों का सहारा लेते नजर आए। मौसम विभाग के अनुसार, अगले दो दिनों में स्थिति और भी गंभीर हो सकती है। शहर का तापमान 45 डिग्री सेल्सियस को पार हो गया है। हालांकि, मौसम विशेषज्ञों ने राहत भरी खबर दी है कि 25 मई के बाद लोगों को इस प्रचंड गर्मी से कुछ राहत मिल सकती है। 25-26 मई से एक नया वेदर सिस्टम सक्रिय होने की संभावना है, जिसके प्रभाव से 31 मई तक राजस्थान के अधिकांश हिस्सों में आंधी के साथ बारिश होने की उम्मीद है।

राजस्थान के कई हिस्सों की स्थिति चिंताजनक

राजस्थान के अन्य हिस्सों की स्थिति भी चिंताजनक है। प्रदेश के सात शहरों में दिन का अधिकतम तापमान 45 डिग्री सेल्सियस से ऊपर दर्ज किया गया है। सबसे ज्यादा गर्मी गंगानगर में महसूस की जा रही है, जहां लगातार दूसरे दिन तापमान 47 डिग्री सेल्सियस के पार चला गया है। मौसम विभाग ने नागरिकों से अपील की है कि वे गर्मी से बचाव के लिए विशेष सावधानी बरतें। बिना जरूरी काम के दोपहर में बाहर निकलने से बचें, पर्याप्त मात्रा में पानी पीएं और धूप से बचाव के उचित उपाय अपनाएं। प्रशासन की ओर से भी लोगों को सतर्क रहने की सलाह दी गई है। मौसम विभाग ने आने वाले दिनों में गर्मी के तेवर और तेज होने की संभावना जताई है। लोगों को दोपहर में बाहर नहीं निकलने की सलाह दी। विशेष रूप से बच्चों, बुजुर्गों और बीमार लोगों को सतर्क रहने को कहा है। तापमान के लगातार बढ़ने से लोगों का जनजीवन प्रभावित हो रहा है। प्रशासन को भी स्वास्थ्य संबंधी व्यवस्थाओं के लिए अतिरिक्त सतर्कता बरतनी पड़ रही है।

अगले दो दिन चढ़ेगा पारा

मौसम विज्ञान केंद्र जयपुर के अनुसार आगामी 48 घंटों में तापमान में 1-2 डिग्री बढ़ोतरी होने की संभावना है। 25 से 26 मई के दौरान बीकानेर, जोधपुर, जयपुर और भरतपुर संभाग के कुछ भागों में अधिकतम तापमान 45-47 डिग्री रह सकता है। साथ ही हीटवेव, तीव्र हीटवेव, ऊष्णरात दर्ज होने की प्रबल संभावना है। सीमावर्ती क्षेत्रों में तेज धूल भरी हवाएं 30-40 किलोमीटर प्रतिघंटे चलने की संभावना है। उदयपुर, कोटा संभाग के कुछ भागों में आगामी 4-5 दिन दोपहर बाद तेज मेघगर्जन, आंधी (40-50Kmph) हल्की मध्यम बारिश का दौर जारी रहने की प्रबल संभावना है। जयपुर, भरतपुर, बीकानेर संभाग में 25-26 मई को दोपहर बाद मेघगर्जन, आंधी दर्ज होने की संभावना है।